वर्ष-26 चैत्र-वैशाख मई 2021 अंक-5 प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई नं.0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन. नं. एम.डी. 08/2021-2023
मूल्य 10/-रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को.

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन
46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

....तो होगा !

भोजन के साथ पानी मिले तो पाचन होगा !
तन के साथ मन मिले तो साधना होगी !
प्रकृति के साथ पुरुष मिले तो संसार बनेगा !
कृष्ण के साथ अर्जुन मिले तो महाभारत में जीत होगी !
ज्ञान के साथ भक्ति (श्रद्धा) मिले तो मोक्ष होगा !

दिव्य आर्शीवाददाता
प.पू. मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक
प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

एगब्भूओ अरण्णे वा, जहा उ चरइ मिगो।
एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य॥

जैसे मृग अरण्य में अकेला ही विचरण करता है, उसी तरह से मैं चारित्ररुपी वन में तप और संयमरुपी धर्म का पालन करता हुआ विचरण करुंगा।-उत्तरा.सूत्र, 19.77

पाथेय

हे प्रभु ! तुम्हें अपने रुपांतर को पूरा करना चाहिये हे प्रभु, तुम अपने रुपान्तर के कार्य को पूरा करो। किस पथ का हमें करना है अनुसरण, यह हमें सिखाओ। और हमें शक्ति दो कि हम उस पर निरन्तर आगे बढ़ सकें और उसके अन्तिम मुहाने तक जा पहुंचे। प्रेम और प्रकाश के आदि रुप परमेश्वर, यद्यपि हम तुम्हारे मूल स्वरुप को नहीं जान सकते, किन्तु उत्तरोत्तर अधिक कुशलता एवं पूर्णता से, तुम्हें कर सकते है अभिव्यक्त। यद्यपि हम तुम्हें नहीं कर सकते हैं धारण किन्तु अचल शांति एवं गहन नीरवता में तुम तक पहुंच सकते हैं। प्रभु तुम्हें अपने अनगिनत वरदानों को पूर्ण करने हेतु आना चाहिये हमारी सहायता के लिए, जब तक हम तुम्हारी विजयश्री न कर लें उपलब्ध।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-26 चैत्र-वैशाख मई 2021 अंक-5

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- देव गुरु और धर्म का अद्‌भूत सामंजस्य .-(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- दान तीर्थ प्रवर्तक पर्व ''पुण्य दिवस ''अक्षय तृतीया''- शांतिलाल सगरावत, मंदसौर 6
चार शरण-पं.श्री गुणसुंदरविजयजी गणी, सबसे कठिन मनोजय

5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा. 7-8

6- मैं चित्रकार -पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म. 9-11

7- संवर भावना : आत्म सुरक्षा का विज्ञान -आचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म. 12

8- श्रीसीमंधर स्वामी भगवान : एक परिशीलन - मुनि यशरत्नविजय -नीति पर दृढ़ता 13-15

9- संसार में खुशियां है कम, बेसुमार है गम...! -पं.गुणसुंदरविजयजी गणी -पुस्तक 16

10-चतुर्विध संघ की स्थापना- डॉ. सुभाष जैन 17

11-कैसे कर्म करें जिससे ग्रहों के अशुभ प्रभाव दूर हो-रुपेश नाहर, सिद्धों का उपकार 18

12-श्रमण संस्कृति के संरक्षक आगमोध्दारक श्री महाराजा -मानव जीवन की सार्थकता 19

13-जिनशासन.... जयवन्ता-माँ तो है माँ.... 20

14-रुढ़ियों को तोड़ने की चाहत ने डॉक्टर बना दिया -चन्द्रकांतसिंह -भाग्यशाली कौन ? 21-22

15-चौबीस तीर्थकर कैवल्य-वृक्ष-डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई 23

16-छः आवश्यक-नाम और रुप 24

17-हिमालय के सिद्धयोगी महात्मा के मार्गदर्शन में महामंत्र की साधना करने वाले 25-26
श्री दामजीभाई जेठाभाई लोड़ाया-*गणि महोदयसागरजी म.सा.*

18-प्रभु करुणा सागर है....साधक के दो साथी 27

19-''इज्जत'' किसे कहते है ? एक धना वटवृक्ष आप थे ...! डॉ. रेणु सिरोया उदयपुर 28

20-आगमोद्धारक भविष्य फल-मई-2021- अनु दीपक जैन 29

21-वर्गपहेली- 312 - जयंतीलाल जैन 30

22-ज्ञान गंगोत्री- 312 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. 31

23-शासन-समाचार 32-41

24-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि 42
नियुक्त करना है

संपादकीय

देव गुरु और धर्म का अद्भूत सामंजस्य

प्रत्येक देश और समाज के सांस्कृतिक मूल्य होते है, संस्कृति एक कालजयी तत्व है उसके अनेक रंग है, जैनत्व का ध्वजाहरण जिन तीन तत्वों से सर्वाधिक प्रभावित होने के साथ परम आस्था और विश्वास का आधार है- वह है देव-गुरु और धर्म। धर्म की साधना ,आराधना मानव जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है । धर्म प्रभावना और आत्म साधना के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये देव-गुरु और धर्म जैनत्व का आधार स्तंभ है, इस तत्वों की प्राप्ति ही प्रत्येक धर्मिष्ठ का लक्ष्य होता है । जीवन से जुड़े हर पहलु चाहे वह धार्मिक-सामाजिक हो या पारिवारिक हो सभी के उचित समाधान के लिये इन तत्वों का जीवन में होना आवश्यक है ।

इस मई माह में बहुत ही महत्वपूर्ण तीन घटनाओं का योग बना है। देव-गुरु और धर्म की कृपा पाने का पुण्य अवसर इस माह आया है। ऐसे योग बहुत कम आते है और जो इनमें अपने को आत्मसाध कर लेता है, उसके में जीवन पुण्य का संयोग आवश्यक बनता है।वैशाख वदी-10- 6 मई को श्री सीमंधरस्वामी आदि 20 विहारमान प्रभु का जन्म कल्याणक का महत्वपूर्ण दिवस है । जब तक जीवन में परमात्मा नहीं घटे तब तक सभी पाषण है, वो इंसान नहीं पाषण है जो अपने भीतर परमात्मा को नहीं देख पाता है। परमात्मा वह नहीं है जो हमें जन्म देता है, परमात्मा तो वह है जिसे हम अपने भीतर जन्म देते है। अपने भीतर जन्म देने की कला ही कल्याण है। पृथ्वी पर ऐसे लोग हुए है जिनके कारण पृथ्वी जिंदा है, इतने बढ़े मनुष्य संप्रदाय में पूरे विश्व के मानव की जनसंख्या में करोड़ों वर्षो में सिर्फ24 ही ऐसी महान होती है जो अपना कल्याण कर जगत के कल्याण का मार्ग दिखलाती है वे 24 तीर्थंकर परमात्मा होते है। धूमिल होती मानवता और अंधकार में डूबती भगवतता को रोशनी देने आते हैं, तीर्थंकर का कोई देवीय शक्ति नहीं है, प्रभु चमत्कार या माया नहीं दिखलाते है बल्कि तीर्थंकर तो सम्यक जीवन जीते है और आत्मा को कर्म कालिका से मुक्त कर देते हैं। प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने शक्ति है हमें प्रभु से यहीं प्रार्थना करनी है प्रभु ! आपके पांच कल्याणक हुए, एक बार मेरा भी कल्याण कर दो। इसके बाद बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व है गुरु। भगवान की तरह गुरु को याद करने से भी पवित्र बना जा सकता है । शास्त्रों में कहा गया है-''**गुरु बहुमाणो मोक्खो**'' जीवन में गुरु के प्रति बहुमान जगे वही मोक्ष है। आठ कर्मो का क्षय होने पर मोक्ष होगा, यह बात सही है। उससे पूर्व मोक्ष प्रकट करना है तो गुरु को भगवान के रुप में देखना है । भगवान का परिचय करवानेवाला भगवान से भी बढ़ जाता है । यदि गुरु न होते तो भगवान कहां से पहचान पाते ? गुरु भक्ति के प्रभाव से हमारी आत्मा भगवान के साथ जुड़ जाती है। आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा की पुण्यतिथि ज्येष्ठ वदी-5-30 मई को है । पूज्यश्री का जिनशासन को दिया गया अवदान अविस्मरणीय है। आगम ग्रंथों के सौगात जैन जगत को प्रदान कर पूज्यश्री ने हम सबको परमात्मा की वाणी से साक्षात्कार करवाया था। आगमों में भगवान है, यह समझा जाये तो स्वाध्याय करते समय भी भगवान ही याद आयेंगे। पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री की आगम भेंट को अगर हम समझे तो इस कलिकाल में दो ही भगवान है- ''जिनागम-बोलते भगवान और जिनमूर्ति-मौन भगवान ।''**आचार्य देवोभवः**, का स्पष्ट अनुदेश भारत की पुनीत परंपरा है इसलिए जीवन विकास के लिये गुरु की भूमिका महत्वपूर्ण मानी गई है, गुरु की सन्निधि, प्रवचन, आर्शीवाद और अनुग्रह जिसे भी भाग्य से मिल जाए उसका तो जीवन कृतार्थता से भर उठता है।

देवाधिदेव परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी का जीवन बचपन से ही आत्म कल्याणकारी रहा है। जब प्रभु ने श्रमणत्व स्वीकार किया तब परमात्मा के साथ कोई नहीं था। प्रभु का कोई शिष्य नहीं था तब परमात्मा केवल और मोक्ष मार्ग की और लगातार आगे बढ़ रहे थे। परमात्मा एक ऐसे धर्म की प्ररुपणा दे रहे थे जहां इहलोक, परलोक, भौतिक, आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है। संसार में ज्ञान प्रचुरता से जिनका नाम रोशन था ऐसे श्री गौतमस्वामीजी परमात्मा के सम्पर्क में आये। यह आत्मा का गुरुत्व ग्रहण कर गुरु गौतमस्वामीजी के साथ 10 अन्य शिष्य बने। परमात्मा ने सभी 11 शिष्यों को वैशाख सुदी-11 (इस वर्ष 23 मई 2021) को गणधर पद प्रदान कर जिनशासन नाम की संस्था की स्थापना की। इससे धर्मिष्ठों को धर्म करने के लिये जिनधर्म की आधारशिला मिली। तब से ही वर्तमान जैन शासन प्रवर्तित हो रहा है। परमात्मा के द्वारा शासन स्थापना के साथ जिस धर्म की प्ररुपणा दी वही हमारे लिये परम आराध्य है। परमात्मा ने कहा था कि -धर्म के द्वारा ही मुक्ति संभव है। धर्म सभी सुख दिला सकता है इसीलिए धर्म को मंगल कहा है, मंगल का अर्थ है हिंसा, पाप, चोरी आदि बुराईयों से रहित एवं आत्मीय सुख, प्रेम एवं करुणा का जन्मदाता जिन धर्म जो प्रत्येक जीवात्मा के लिये मंगलमय हो वह धर्म जो सबके लिये कल्याणकारी हो वह धर्म।

आईये ! जीवन को उत्थान की ओर ले जानेवाले तीन तत्वों को अपने जीवन में सर्वोच्च स्थान देवें ताकि उसके पुण्य प्रभाव से हम हमारे साथ अन्य सभी के कल्याण के लिये कार्य कर सकें। इसी भावना के साथ !

✻ डॉ. सुभाष जैन

दान तीर्थ प्रवर्तक पर्व ''पुण्य दिवस ''अक्षय तृतीया''

✻ शांतिलाल सगरावत, मंदसौर

वैशाख शुक्ल तृतीया *(इस वर्ष 15 मई 2021)* को जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव (भगवान श्री आदिनाथ) ने राजा श्रेयांस के यहां ''इक्षु रस'' का पारणा, अक्षीण याने कभी खत्म न होने वाला किया था। इसलिये यह दिन ''अक्षय तृतीया'' आहार दान की परम्परा शुरु होने का दिन अक्षय पुण्य प्राप्ति का कारण होने से जैन परम्परा में इसे पर्व के रुप में मनाकर इस दिन व्रत, उपवास रखकर इस पर्व को प्रगाढ़ आस्था के साथ मनाते हैं।

जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र के विजयार्ध पर्व से दक्षिण की ओर मध्य आर्यखण्ड में अंतिम कुलकर नाभिराज हुए। उनके मरुदेवी देवी नामक पट्टरानी के गर्भ से प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव ने जन्म लिया, उनका जन्म कल्याणक मनाने के बाद दीक्षा कल्याणक के पश्चात् ऋषभदेव ने छः मास तक घोर तपस्या की। तब आहार के लिये कई ग्रामों में विहार किया, लेकिन प्रजा और राजा को आहार की विधि का ज्ञान नहीं होने से उन्होंने वस्तुएं भेंट की। इन्हें अन्तराय का कारण जानकर उन्होंने पुनः छः मास तक तपश्चर्या योग धारण कर लिया।

अवधि पूर्ण होने पर पारणा करने हेतु चर्या मार्ग से इर्यादथ शुद्धि करते हुए ग्राम-ग्राम, नगर-नगर भ्रमण करते हुए कुरु जंगल देश के हस्तिनापुर में कुरुवंश शिरोमणि महाराज सोम जिसके श्रेयांस नाम का भाई भी था, के यहां पधारे,तब उनको अहसास हुआ कि सिद्धार्थ नाम का कल्पवृक्ष जैसे उनके सामने हैं। राजा श्रेयांस को भगवान का श्रीमुख देखते ही उसी क्षण अपने पूर्वभव में एक सरोवर के किनारे दो चारण मुनियों को आहार देने की विधि का स्मरण हो गया। अतः आहार विधि का ज्ञान हो जाने से समस्त विधिनुसार भगवान श्रभ्ऋषभदेव को तीन प्रदक्षिणा देकर पड़गाहन कर भोजन गृह में ले गये।

प्रथम ''दान विधि कर्त्ता'' राजा श्रेयांस, धर्म पत्नी सुमतीदेवी और ज्येष्ठ भ्राता सोमप्रभ ने अपनी लक्ष्मी पत्नी आदि के साथ मिलकर भगवान श्रीऋषभदेव को सुवर्ण कलशों द्वारा तीन खण्डी इक्षु रस (गन्ने का रस) वोहराया जो अंजुल में होकर बह गया, शेष दो खण्डी रस पेट में गया। इस तरह श्रीऋषभदेव भगवान की आहार चर्या सर्व प्रथम पूर्ण हुई।

इस कारण उसी वक्त स्वर्ग के देवों ने हर्षित होकर पंचाश्रय वृष्टि कर सभी ने मिलकर अति प्रसन्न मनाई। आहारचर्या कर जाते हुए भगवान श्रीऋषभदेव ने दाताओं को ''अक्षय दानस्तु'' कहकर दान इसी प्रकार कायम रहे का आर्शीवाद दिया जो कि वैशाख सुदी तीज को सम्पन्न हुआ था। उसी समय से ''अक्षय तृतीया'' का नाम ''पुण्य दिवस'' हुआ।

सबसे कठिन मनोजयः-*सांप, सिंह और बंदर को वश करना आसान है, परन्तु मन को वश करना बहुत कठिन है। छोटा सा निमित्त मिलते ही मन बिगड़ जाता है। बिगड़े हुए मन का असर शब्दों पर होता है। एक बार मन बिगड़ गया तो जुबान के शब्द बिगड़े बिना नहीं रहते हैं। मन बिगड़ गया तो ऑख बिगड़े बिना नहीं रहती है। अतः ऑख, कान और जीभ के नियंत्रण के पूर्व मन पर नियंत्रण होना खूब जरुरी है।*

चार शरण

✻ पं.श्री गुणसुंदर विजयजी गणी

चार शरण स्वीकार, भविकजन चार शरण स्वीकार।
प्रथम शरण अरिहंत प्रभु का, सन्मार्ग के दातार।
भविक. ---1
शरण दूसरा श्री सिद्ध प्रभु का, अनंत सुख भंडार।
भविक. ---2
शरण तृतीय मुनिवर संत का, कर्म युद्ध करतार।
भविक. ---3
चतुर्थ शरण श्री जैन धर्म का, सकल विश्व सुखकार।
भविक. ---4
भावभक्ति सह चार शरण ये, निर्भय स्थिति दातार।
भविक. ---5
चार शरण ग्रहनार भव्यने, पाप को दीनी हार।
भविक. ---6
मंगलमय लोकोत्तर शरणां, आपत्ति सौ हंतार।
भविक. ---7
त्रिभुवनभानु खास प्रकाशे, गुणगुण सुंदर धार।
भविक. ---8

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

''रति-अरति'' 15 वाँ पापस्थानकः-

अनन्तानन्त उपकारी अनन्तज्ञानी अनन्तदर्शनी अनन्तशक्तिमान चरमतीर्थपति परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी के चरण कमलों में अनन्त नस्कार पूर्वक....

आदौ रागस्ततः द्वेषस्तस्मात् क्लेशपरम्परा।
तद्वदादौ रतिश्चारति स्ततः कर्म बन्धनम्॥

पहले राग उत्पन्न होता है, फिर द्वेष होता है और उसी से क्लेश की परम्परा चलती है। जैसे राग-द्वेष का यह जो चक्र चलता है ठीक उसी तरह रति-अरति का चक्र चलता है। पहले किसी भी वस्तु या व्यक्ति पर रति होती है और फिर अरति उत्पन्न होती है और इन दोनों से कर्मबंध होता है। इसी तरह यह चक्र चलता जाता है। एक तरफ तो आत्म राग-द्वेष के विषचक्र में फंसी हुई है जिसके परिणाम स्वरुप क्लेश-कषाय की परम्परा में से छूट नहीं रही हैं। वैसा ही दूसरा विषचक्र रति-अरति का है। इस चक्र में भी कर्मबंध करती हुई आत्मा ने अनन्त काल बिता दिया है। फिर भी घांची की घाणी में गोल-गोल घूमते हुए बैल की तरह आत्मा की वैसी ही स्थिति हुई है। इस विषचक्र में से छूटकर-बचकर बाहर आए तो आत्मा स्वतंत्र रुप से अपने विषय में कुछ सोच सके।

अनन्त ज्ञानादि अष्ट महागुणों से परिपूर्ण आत्मा अपने शुद्ध स्वरुप में है। आत्मा के ये आठ गुण पूर्ण-संपूर्ण परिपूर्ण है। जगत में ऐसा एक भी गुण नहीं है जो आत्मा में पूर्णरुप से न हो अर्थात् आत्मा में आवश्यक सभी गुण चरम सीमा में परिपूर्ण रुप से भरे पड़े हैं उसे एक भी गुण कहीं बाहर लेने जाने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। अच्छा मान लो कि आत्मा बाहर गुण लेने जाए भी सही तो किसके पास जाए? अजीव के ही पास जा सकती है? चूकि ब्रह्माण्ड में सिर्फ दो ही मूलभूत पदार्थ है।

मूलभूत 2 द्रव्यः-

1-जीव (चेतन)

2-अजीव(जड़) 1-धर्मास्तिकाय 2-अधर्मास्तिकाय 3- आकाशास्ति 4- काल 5- पुद्‌गलास्ति

जीव और अजीव ये मूलभूत दो ही द्रव्य है और अजीव के विभाग में पांच दव्य है। जीव को साथ में मिलाने पर षड्द्रव्य-6 द्रव्य होते हैं। इससे अधिक गुण धारक ऐसा एक भी द्रव्य संसार में नहीं है। अब आप सोचिए कि (आत्मा) चेतन को अजीव से कौन सा गुण लेने की आवश्यकता है? ये अजीव द्रव्य तो अपना एक गुण लेकर बैठे हैं। जबकि इनके सामने आत्मा आठ मूलभूत गुणों वाला एक स्वतंत्र द्रव्य है और ये ही मूल आठ गुण भेद-प्रभेदों के साथ देखने जाएं तो अनन्त गुण आत्मा में भरे पड़े हैं। अब आत्मा में किस गुण की कमी है कि जो उसे अजीव के पास से लेने की आवश्यकता पड़े? ऐसा एक भी गुण नहीं है और अजीव का गुण लेकर चेतन क्या करेगा। जो चेतन (जीव) में है उसकी आशिकी सादृश्यता अक्षय स्थिति आदि की कुछ उपलब्धि आकाशादि में भी देखी जाती है परन्तु ज्ञानादि मुख्य गुणों का अंश मात्र भी आकाशादि किसी अजीव में भी नहीं है। अतः अनन्त गुणधारक आत्मा को किसी का एक भी गुण लेने की आवश्यकता नहीं है।

आत्मा में जो भी गुण है वे स्वयं अपने में ही पड़े हुए है जो प्रगट हुए है जिनका अविर्भाव हुआ है। स्वयंभू है। बाहर से नहीं आए हैं। अपने ही अन्दर जो कर्म के आवरण से दबे हुए पड़े थे, तिरोहित थे। वे ही कर्म का आवरण नष्ट होते ही प्रगट हो गए। अतः उनका अविर्भाव हुआ ऐसा कहेंगे। इन आठ गुणों में तीसरा गुण अनन्त चारित्र का है जिसे यथाख्यात स्वरुप कहते हैं। जैसा सर्वज्ञ केवलि भगवंतों ने कहा है वैसा ही शुद्ध स्वरुप आत्मा का है। इस गुण में रमण करनेवाली आत्मा के लिये बाहरी किसी जड़ पौदगलिक पदार्थ की आवश्यकता ही नहीं है। स्वस्वरुपरमणता में ही रहना चाहिये। स्वभावदशा की रमणता इस गुण की उपासना है।

मोहनीय कर्म का आवरणः-

संसार के चक्र में फंसी हुई इस आत्मा ने राग-द्वेष की प्रवृत्ति में अनेक कर्म बांधे हैं। जबकि राग-द्वेष करने की आत्मा को देहादि के लिये राग-द्वेष करना पड़ा और राग-द्वेष करने से आत्मा कर्म से भारी होती गई। ये राग-द्वेष ही कर्म के बीज है। राग-द्वेष करने से कर्म बंधे बस इसी से आत्मा के लिए संसार खड़ा हो गया और इसी कर्म के पिंजरे रुप संसार में आत्मा अनादि अनन्त काल से परिभ्रमण कर रही है। राग-द्वेष ये कर्म वृक्ष के मूल बीज है और इसी से सारा संसार खड़ा होता है। इन कर्मो में मोहनीय कर्म प्रबल है

जो आत्मा के अनन्त चारित्र तीसरे गुण के ऊपर आवरण की तरह छा जाता है। प्रबल मोह के आवरण के नीचे दबे आत्मा के अननत चारित्र गुण की अब सामान्य झांकी का अभास मात्र आज हमें हो रहा है। बस इससे ज्यादा कुछ नहीं। इतना प्रबल यह मोहनीय कर्म है। इसके भेद प्रभेद इस प्रकार हैः-

मोहनीय कर्म 28 -

मोहनीय कर्म की कुल 28 कर्म प्रकृतियां है। इन 28 में ही प्रभेदों के विभक्तिकरण से अलग-अलग भेद होते हैं। इनमें 16 मूल कषाय मोहनीय के हैं जो क्रोध-मान-माया-लोभ इन चार कषायों के अनन्तानुबंधी आदि 4 भेद हैं। अतः चारों कषायों के चार-चार होने से 16 हुए। नोकषाय शब्द में ''नो'' शब्द निषेधवाचि नहीं है परन्तु सहायक अर्थ में है। अतः नोकषाय का अर्थ है जो स्वयं कषाय नहीं है। परन्तु मूल जो क्रोध-मानादि कषाय है उनको जगाने वाला सहायक कषाय नोकषाय कहलाता है। नोकषाय में एक विभाग तो 3 वेद का आता है। यहां पर वेद-वैषयिक वृत्ति के अर्थ में है। विषय-वासना के अर्थ में है। स्त्री को पुरुष के प्रति, पुरुष को स्त्री के प्रति और नपुंसक को उभय के प्रति जो काम वासना की संज्ञा होती है वह इस वेद मोहनीय का कार्य है।

रति-अरति मोहनीय कर्म की प्रवृत्ति हैः-

नोकषाय मोहनीय का दूसरा विभाग हास्यादि षट्क (6) का है। हास्य=हंसी मजाक, रति=प्रिय-अनुकूल, अरति=अप्रिय-प्रतिकूल, भय=डर, शोक=खेद-विषाद, जुगुप्सा=दुर्गच्छा। ये हास्यादि 6, छ प्रवृत्तियां मोहनीय कर्म के घर की प्रवृत्ति है ! आत्म गुणों की प्रवृत्ति नहीं है। आत्मा को तो हंसना, रोना, प्रिय-अप्रिय आदि कुछ भी नहीं है। जो है वह सिर्फ कर्म जन्य विकृति है। प्रकृति और विकृति दोनों अवस्था है। आत्मगुणों की प्रवृत्ति ये प्रकृति है। जैसे हम ज्ञान-ध्यान-स्वाध्याय करते हैं यह प्रकृति है। आत्मा का ज्ञान गुण है। अतः उसी गुण के अनुरुप वैसी प्रवृत्ति करना यह प्रकृति है। इसलिए आत्मगुणों की उपासना की प्रवृत्ति को ही धर्म कहा है। स्वगुणसाधना या स्वगुणोपासना रुप ही धर्म तत्व है। लेकिन ऐसी सैकड़ों प्रवृत्तियां संसार में चल रही है जो आत्मगुण की नहीं परन्तु कर्म जन्य प्रवृत्ति है। अतः ये विकृति है। संसार में जीव मात्र कर्माधीन है। कर्म वश है। कर्म के बंधन में फंसा हुआ है। अतः कर्म वश ही सैकड़ों प्रवृत्तियां जीव कर रहा है। इतना ही नहीं यदि देखने बैठे या गिनने बैठे तो 90 से 95 प्रतिशत आज हमारी प्रवृत्तियां कर्म जन्य, कर्मप्रेरित प्रवृत्तियां है। अब बची हुई शेष 5 से 10 प्रतिशत भी बड़ी मुश्किल से आत्म गुण की प्रवृत्ति आज रही होगी ! अन्यथा कर्म जन्य विकृति ही ज्यादा है अतः मालिक की चाबुक खाकर परवश, पराधीन बिचारा बैल या घोड़ा चलता है, वैसे ही कर्मवश कर्म के पराधीन यह जीव बिचारा संसार में प्रवृत्ति करता है।

आत्मा के आठ मुलभूत गुणों पर आवरण ही आठ कर्म रुप में गिने जाते हैं। इन आठों कर्मवश दबा हुआ यह जीव भिन्न-भिन्न प्रकार की सैकड़ों प्रवृत्तियां करता है जिसमें कर्म-कर्म की गंध स्पष्ट आती है। इन आठ कर्मो में तीसरा कर्म मोहनीय कर्म है ! मोहनीय कर्म की 28 प्रकृतियां जीव को 28 प्रकार की प्रवृत्तियां कराती है ! इनमें रति-अरति-की ये प्रवृत्ति भी कर्म वश है ! विकृति के रुप में है ! जो कर्माधीन नहीं है। कर्म रहित सिद्ध-बुद्ध, मुक्त है उनको कर्म जन्य विकृति भी नहीं है और न ही कर्म जन्य कोई प्रवृत्ति करनी पड़ती है ! उनको तो न हंसना है, न रोना है, न राजी होना है, न नाराज होना है, न डरना है, न हर्ष-शोक करना है, न कुछ करना है, वे सिद्ध परमात्मा तो सर्वकर्म रहित मुक्त है ! निरंजन-निराकार है। जन्म-मरण-शरीरादि रहित शुद्धात्म स्वरुप है, सच्चिदानन्दमय है, आनन्दघन स्वरुप है।

हंसना, रोना, राजी-नाराज होना, लड़ना-डरना, हर्ष-शोक- उद्वेग करना, प्रिय-अप्रिय पर, राग-द्वेष करना आदि ये सब जीव की कर्मवश प्रवृत्तियां है। कर्मजन्य नाटक है और कुछ भी नहीं है। विकृति स्वरुप है और दूसरी बात यह है कि कर्म के उदय से जीव ऐसी प्रवृत्ति करता जाता है और फिर उस प्रवृत्ति से नये कर्म का उपार्जन करता जाता है। यही चक्र संसार में सतत चलता जाता है। फिर वही पाप कर्म बांधना, फिर कर्म बांधना-फिर वही प्रवृत्ति करना। कर्म से प्रवृत्ति और प्रवृत्ति से कर्म इस तरह संसार चलाते ही रहना और सब कर्म बांधते ही रहना इसका कहीं अन्त ही नहीं आ रहा है। अनन्त काल बीत गया फिर भी आज जहां थे वहीं है, जैसे थे वैसे ही हैं। वहीं चक्र चल रहा है। वे ही प्रवृत्तियां अनेक जन्मों से करते आ रहे हैं और वे ही कर्म बांधते जा रहे हैं।

(आगे और भी है...!)

※ समय, साधन, भाग्य और भाव हमेशा समान नहीं रहते। सब परिवर्तनशील है।

मैं चित्रकार

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

बचपन से ही मुझे चित्र बनाने का शौक ! बड़ा चित्रकार बनकर दुनिया में नाम करुँ- यह मेरा स्वप्न ! किसी को राजा बनने की तो किसी को मंत्री या सेठ-साहूकार बनने की इच्छा होती है, परन्तु मुझे तो इच्छा थी चित्रकार बनने की। इसलिए मैं सृष्टि के रंग-बिरंगे दृश्यों घंटों तक देखता ही रहता। कौन-कौन से रंगों के मिश्रण से ये संध्या के बादल बने हैं ? ये मोर के पिच्छे बने हैं ? ऐसा मेरा मन सदा विचार किया ही करता ! और रंगों का मिश्रण करके मैं वैसे-वैसे रंग बना भी लेता। चित्रकला का अधिक अभ्यास करने की मेरी अदम्य जिज्ञासा थी।

एक बार मैंने सुना- साकेतनगर में बहुत श्रेष्ठ चित्रकार रहते हैं। भारत वर्ष में उत्तम चित्रकला का स्थान वहीं पर है। इसलिये मैं साकेत जाने के लिये तैयार हो गया। मेरी प्यारी जन्मभूमि कौशांबी नगरी को छोड़कर साकेत की ओर चल पड़ा। जीवन में आगे बढ़ना हो, किसी कला में श्रेष्ठ निष्णात बनना हो तो परिवार, जन्मभूमि इत्यादि बहुत कुछ छोड़ना पड़ता है- यह बात मैं अच्छी तरह से जानता था। निद्रा,तन्द्रा,भय, क्रोध, स्वजन और जन्मभूमि की आसक्ति इस सभी का महत्वाकांक्षी युवानों को त्याग करना होता है यह बात मैं बचपन से ही सीख गया था।

साकेत पहुंचकर मैं एक चित्रकार की वृद्ध माता के घर पर रहा। कुछ ही समय में मेरा उनके साथ आत्मीय संबंध हो गया। वहां रहकर मैं विविध चित्रकारों से चित्रकला का अनुभवपूर्वक का शिक्षण प्राप्त करने लगा। समय सुखपूर्वक बीतने लगा।

एक बार मैंने देखा तो वृद्ध माता फूट-फूट कर रो रही थी। रुदन का कारण पूछने पर उसने बताया- आज मेरा पुत्र यक्ष के मंदिर में चित्र बनाने के लिये जानेवाला है।

तो इसमें रोना क्या है ?

बेटा ! तू नया-नया है, इसलिए कुछ जानता नहीं है। यदि, इस नगरी का भूतकाल तूने जाना होता तो यहां आने की तू कभी हिम्मत करता ही नहीं।

ऐसा कैसा भूतकाल है ? मुझे बताओ तो सही !

सुन ! इस साकेतनगर में सुरप्रिय नाम का एक यक्ष रहता है। प्रतिवर्ष उसके मंदिर के पास मेले का आयोजन होता है। तब चित्रकार उसके चित्र-विचित्र रुप बनाते हैं। अब यक्ष ऐसी उल्टी खोपड़ी का है कि जो चित्रकार चित्र बनाता है उसे जान से मार डालता है।

''तो चित्र बनाने की जरुरत ही क्या ? चित्र नहीं बनाना चाहिये।'' मैंने बीच में ही कहा।

मेरी बात तो पूरी सुन। यदि कोई चित्रकार उसका चित्र बनाये ही नहीं तो वह पूरे नगर को मार डाले। पूरे नगर में मारी-मरकी फैलाये। ऐसा होने से सभी चित्रकार गांव छोड़कर भाग गये हैं। इससे पूरा नगर परेशान होने से राजा ने नगर से बाहर गये हुए चित्रकारों को चुनचुनकर पकड़े और नगर में बसाये। फिर राजा ने सभी चित्रकारों के नाम लिखकर चिट्ठी बनाकर एक घड़ेमें रखवाई हैं। प्रति वर्ष एक चिट्ठी निकालता है। जिसकी चिट्ठी आये उसे यक्ष का चित्र बनाना और मर जाना। दुर्भाग्य से इस साल मेरे लड़के के नाम की चिट्ठी निकली है। वह बेचारा आज मर जायेगा। मैं पति रहित तो हूं ही, किन्तु आज पुत्ररहित भी बन जाऊंगी।

नहीं.... मैं ऐसा नहीं होने दूंगा ! आपके पुत्र के बदले मैं ही यक्ष के पास में जाऊंगा। आपको रोने की जरुरत नहीं।

अरे भाई ! तू भी मेरा ही पुत्र है न ? तुझे तो कैसे जाने दूं ? चिट्ठी हमारे नाम की निकली है। हम भोग लेंगे। तू इस संकट में पड़ना मत।

परन्तु वृद्धा की एक भी सुने बिना मैं जाने के लिये तैयार हो गया। मेरे मन में एक ही विचार था- जहां हम रहते हैं, जिसका नमक हमारे पेट में गया हो, उसे संकट के समय मदद रुप नहीं बन सके तो हमारा जीवन किस काम का ? किसी के भले के लिये इस जीवन का इस्तेमाल हो, इससे अच्छा दूसरा क्या ? शायद मेरा पुण्य जोर करता हो, शायद मेरी परोपकार-भावना प्रबल हो तो यक्ष भी खुश हो जायेगा और सारे नगर को स्थायी अभयदान भी मिल जायेगा।

ऐसी भव्य विचारधारा के साथ यक्ष के पास जाने की तैयारी करने लगा। छट्ठ का तप किया। स्नान करके, चंदन का विलेपन करके मुंह पर आठ पड़वाला वस्त्र बांधकर मैं नई पिंछीयों और सुंदर रंगों से वहां जाकर यक्ष का चित्र बनाने लगा।

चित्र बनाने के बाद हाथ जोड़कर विनयपूर्वक मैंने कहा- ''हे यक्षराज ! कहां आपका दिव्य स्वरुप और कहां गरीब बालक मैं ? मैं आपको चित्र में चित्रित करने के लिये किसी भी तरह समर्थ नहीं हूं। बड़े चित्रकार भी समर्थ न हो तो मैं कौन ? फिर भी मैंने कुछ युक्त-अयुक्त बनाया हो तो माफ करना। आप तो निग्रह-अनुग्रह करने में समर्थ है।

मेरे विनय से यक्ष बहुत ही खुश हो गया। मुझ पर प्रसन्न होकर बोला- बोल बेटा ! तुझे क्या चाहिये ? जो चाहिये वह देने के लिये मैं तैयार हूं।

अब से किसी भी चित्रकार को आप नहीं मारेंगे यही मुझे चाहिये। इसके अलावा ?

नगर के किसी सामान्य आदमी को भी अब आप नहीं मारेंगे, ऐसी इस बात की अपेक्षा है।

यह सभी तो मैंने नक्की कर ही दिया है। अब मैं किसी को नहीं मारुंगा। किन्तु वत्स ! यह सभी तो तूने परमार्थ के लिये मांगा। तेरे स्वयं के लिये कुछ भी मांग। तू मांगेगा तो मुझे आनंद होगा।

ओ कृपालु ! यदि आप प्रसन्न होकर कुछ देना ही चाहते हैं तो इस सेवक को चित्रकला सम्राट बना दो। मुझे धन-दौलत या पद-प्रतिष्ठा इत्यादि कुछ नहीं चाहिये। मुझे चित्रकला में सर्वोपरि बनना है। किसी भी व्यक्ति या वस्तु का एक ही भाग मेरे देखने में आये और उसके आधार पर वह व्यक्ति या वस्तु का मैं संपूर्ण चित्र बना सकूं- ऐसा वरदान दो।

''तथास्तु'' के आर्शीवाद के साथ यक्ष अदृश्य हो गया।

देख ? विनय और प्रेम का यह कैसा चमत्कार ? जो काम बड़े-बड़े चित्रकार भी न कर सके वह मेरे जैसे छोटे ने कर बताया। लोहे की जंजीर से भी प्रेम का कच्चा धागा बलवान है। अभिमान की अक्कड़ता से भी विनय की नम्रता बलवान है। इसीलिए तो अक्कड़ दांतों को नरम जीभ जीत लेती है। अक्कड़ वृक्ष टूट जाते हैं। डूब जाते हैं परन्तु नम्र बेंत टिकी रहती है। नम्र सुवर्ण के सभी आभूषण बनाते हैं। अक्कड़ लोहे को कोई सोनी छूता भी नहीं है।

यक्ष के आर्शीवाद लेकर मैं उस वृद्धा के घर आया। मुझे जिंदा वापस आते देखकर पूरा नगर खुश हुआ। सभी ने मेरा खूब ही सन्मान किया। नगर में आनंद होने से मैं भी बहुत ही खुश हुआ। आनंद ऐसी वस्तु है, जो देने से बढ़ती है। आनंद ही नहीं, जो कुछ भी देते हैं वह बढ़ता ही जाता है, बढ़ता ही जाता है। सुख दें तो सुख बढ़ता है। दुःख दे तो दुःख और ज्ञान दें तो ज्ञान बढ़ता है। मान देते हैं तो मान। जो दूसरों को हम देते है वही अनेक गुना होकर हमें मिलता हैं। आज यदि हमें दुःख मिलता है तो पहले वह हमने किसी को दिया हुआ है। सुख चाहते हो तो दूसरों को देना शुरु करो। सुख ऐसी अद्भूत वस्तु है, यदि हम अकेले संग्रह करना चाहें तो कभी इकट्ठा कर ही नहीं सकते। दूसरों को देते जाये वैसे बढ़ता जाता है। सुख बांटने से कम नहीं होता, बढ़ता है। हमारी तकलीफ यह है कि हम सुख को बांटते नहीं है, ''सभी'' सुख मुझे अकेले को ही मिले। ऐसी वृत्ति से ही सभी प्रवृत्ति करते हैं, इससे ही दुःखी होते हैं। आज मुझे पहली बार ही सुख-प्राप्ति का उपाय मिला। पूरे नगर को जीवन-दान देने से आनंद की अनुभूति हुई वह अवर्णनीय है। मेरे जीवन का यह सर्वोत्तम कार्य था।

साकेत में मेरा मान बहुत ही बढ़ गया था, फिर भी अब मैं कौशांबी जाने के लिए तरस रहा था। चित्रकला में निष्णात बनने का मेरा काम पूरा हो चुका था। अब यहां रहने का कोई मतलब नहीं था और बारबार मुझे जन्मभूमि की याद आ जाती थी। जन्मभूमि चाहे जैसी हो किन्तु मनुष्य उसे कभी भूल नहीं सकता।

''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।''

....और मैं बिना विलंब कौशांबी नगरी में आ पहुंचा। मैं पहुंचु उससे पूर्व मेरी कीर्ति वहां पहुंच चुकी थी। नगर के बड़े-बड़े चित्रकार भी मुझे सन्मान देने लगे। पदार्थ के एक अंश को ही देखकर पूरा चित्र बनाने की मेरी विशेषता से मैं अपने आप महान चित्रकारों की प्रथम पंक्ति में आ गया। सभी चित्रकार मेरी ऐसी विशेषता से बने हुए चित्र देखकर बोल उठते- ऐसी कला यक्ष के वरदान के बिना हो नहीं सकती।

हमारे कौशांबी नगर के राजा शतानीक ने एक बार एक अद्भूत चित्रशाला बनाने का सोचा। इसके लिये महान चित्रकारों को बुलाया। उसमें मेरा भी नंबर लगा। मैं दिल देकर काम करने लगा।

अब ऐसा हुआ कि मुझे जो जगह मिली थी वह अन्तःपुर के बिलकुल नजदीक ही थी। एक बार मैंने गवांक्ष में से किसी स्त्री का अंगूठा देखा.... अंगूठे की मृदुता तथा उसके विशिष्ट लक्षण देखकर मैंने सोचा- यह अंगूठा अवश्य महारानी मृगावती का ही होगा। उसी समय मेरी मन-गगन में विचार की बिजली चमक उठी- इस अंगूठे के आधार पर यदि मैं मृगावती रानी का चित्र बनाऊं तो ? महाराज कैसे प्रसन्न हो जायेंगे ? सचमुच ही मेरा नाम हो जायेगा और उसी समय मैंने महारानी का चित्र बनाना प्रारंभ किया। एक अंगूठा देखा इतना तो बहुत हो गया ! मेरे समक्ष यक्ष के वरदान के प्रभाव से महारानी की पूरी आकृति दिखने लगी और उसी के अनुसार मैं चित्र बनाने लगा। जब मैं महारानी की आँख बना रहा था तब पींछी में से काले रंग की बूंद जांघ पर पड़ी। मैंने उसे पौंछ लिया। फिर गिरी। फिर साफ किया। ऐसे तीन बार हुआ तब मैंने सोचा- महारानी की जांघ पर अवश्य ऐसा कोई लांछन होगा। तो अब यह भले रहे। थोड़ी देर में महारानी का आबेहूब चित्र तैयार हो गया। मैंने सोचा कि यह चित्र देखकर राजा मेरे पर प्रसन्न हो जाएंगे। मुझे उस समय कल्पना भी नहीं थी कि इस चित्र द्वारा राजा को गेरसमझ खड़ी होगी और मुझे नाहक परेशान होना पड़ेगा। भला करते बुरा होगा ऐसी कल्पना तो किसे होती

है ? थोड़ी ही देर में महाराजा शतानीक पधारे। रानी का चित्र देखते ही उनका चेहरा लाल-पीला हो गया। उनके चेहरे से मैं उनके मन के भाव पढ़ रहा था- इस हरामखोर चित्रकार ने मेरी रानी को भ्रष्ट कर दी लगता है। नहीं तो वस्त्र के अंदर रहे जाँघ के चिन्ह को यह कैसे जान सकता हैं ? यह चित्रकार ऐसा निकला ? इसे बराबर मेथीपाक चखाना पड़ेगा।

और थोड़ी ही मिनिटों में मेरे हाथ-पैर में बेड़ीयें लगी। राजा के सेवकों ने मुझे मजबूती से बांधा।

मुझ पर आयी हुई आपत्ति से चौंक उठे मेरे साथी चित्रकारों ने राजा को विनंती की- राजन्! इस चित्रकार को यक्ष का वरदान मिला हुआ है। इस कारण वह किसी व्यक्ति या वस्तु के अमुक भाग को देखकर भी पूरा चित्र बना सकता है। रानी के चित्र में इसका कोई भी दोष नहीं है। कृपा करके इस पर कोई शंका मत करना या कोई सजा मत करना। यह बिलकुल निर्दोष है। हमारे वचन पर यदि आपको भरोसा न हो तो आप परीक्षा कर सकते हैं।

राजा ने मेरी परीक्षा करने के लिए एक कुबड़ी दासी का मुंह बतलाया। मैंने उसके आधार से पूरा चित्र बना दिया। इससे राजा की शंका तो दूर हो गई, परन्तु अंदर ईर्ष्या रह गई। इससे राजा ने मेरे दाहिने हाथ का अंगूठा कटवा दिया। मैंने उस यक्ष के पास जाकर तप से उसे प्रसन्न किया और बायें हाथ से भी वैसा ही चित्र बनाने का वरदान पा लिया। फिर भी मैं अंदर से चिढ़ उठा था- राजा को इतना कर दिखाने के बाद इतना गुस्सा ? मेरा ऐसा कौन सा गुनाह ? भले आज राजा ने मुझे सजा की परन्तु अब मैं भी नहीं छोडूंगा। भले वह राजा हो और मैं चित्रकार रहा, लेकिन उसमें क्या हो गया ? छोटा मच्छर बड़े हाथी को हैरान नहीं कर सकता ? छोटा छिद्र बड़े जहाज को डूबा नहीं सकता ? छोटा कांटा बड़े आदमी को बिठा नहीं देता ? छोटा कण आँख को बंद नहीं कर देता ? चाहे कुछ भी हो मैं बदला लेकर ही रहूंगा, लेकर ही रहूंगा।

अपमान की आग कितनी भयंकर है ? साकेतनगर के तमाम लोगों के हित की कामनावाला और हित करनेवाला मैं, कोई मेरा बुरा करे यह सहन कर नहीं सका। सचमुच ही दूसरों का भला करना सरल है, परन्तु दूसरों की तरफ से होता बुरा सहन करना मुश्किल है। दूसरों का भला करने में अहं का पोषण होता है। जबकि अपमान में अहं को ठेस लगती है। अहं को ठेस लगती है तब सहन करना बहुत मुश्किल है। इसके लिये अहंरहितता की साधना चाहिये। मैंने चित्र-कला की साधना तो की थी परन्तु अहंशून्यता की साधना नहीं की थी। चित्रकला मैंने हस्तगत की थी परन्तु धर्म-कला मुझ से अब भी दूर थी।

शतानीक को पछाड़ने की मैंने मन ही मन योजना बनाई है.... एक उपाय है। अभी पूरे भारत में उज्जैन का चण्डप्रद्योत राजा कामी है। जो जो अच्छी रुपवती स्त्रीयां इसके ध्यान में आती है उन सभी को चाहे वहां से उठा लाकर अन्तःपुर में भरता जाता है। यदि मैं मृगावती का चित्र उसे बताऊंगा तो जरुर वह ललचायेगा फिर मुझे कुछ भी करना नहीं पड़ेगा। मुझे सिर्फ तमाशा देखकर खुश होना रहना।

जिस चित्रकला से यक्ष को प्रसन्न करके मैंने पूरी नगरी को बचाई थी, उसी चित्रकला से आज मैं मेरी नगरी को, मेरी नगरी के राजा को बरबाद करने को तैयार हो गया था। मिली हुई कोई भी विशिष्टशक्ति दोधारी तलवार जैसी है। उसका सदुपयोग भी हो सकता है और दुरुपयोग भी। शक्ति तो कोरा कागज है। उस पर सुंदर चित्र भी बन सकते हैं और काला रंग भी उस पर डाला सकते हैं। शक्ति तो मैदान है। उस पर बगीचा भी बन सकता है और कचरा भी। शक्ति तो केवल शब्द है। उसके द्वारा गीत भी गा सकते हैं और गाली भी बकी जा सकती है। क्या करना वह हमारे हाथ की बात है। आज भी अपनी शक्ति को विनाशक कार्य में प्रवर्तित करने के लिये तैयार हुआ था।

आखिर मैंने अपनी योजना अमल में रख दी और सचमुच ही मेरा सोचा परिणाम ही आया। राजा चण्डप्रद्योत मृगावती का चित्र देखकर पागल ही हो गया और नमक मिर्च लगाकर मैंने कहा- राजन्! इस चित्र का यह रुप तो कुछ नहीं है। उसे चित्र में विचित्र करने में बड़े-बड़े चित्रकार भी पीछे रह जाते हैं। देवांगनाओं से बढ़कर इसका रुप है। बाकी चित्र से या शब्दों से तो कितना कहा जा सकता हैं ? आँखों से देखने पर ही विशेष ख्याल आ सकता है।

चण्डप्रद्योत के लिये इतना तो काफी था। वह मृगावती को पाने के लिये आकाश-पाताल एक करने लगा। सर्वप्रथम शतानीक राजा के पास दूत भेजा, लेकिन कोई अपनी पत्नी ऐसे देता होगा ? अतः चण्डप्रद्योत क्रोधित हुआ और विशाल सैन्य के साथ कौशांबी पर चढ़ाई की।

ये समाचार सुनते ही शतानीक राजा को इतना आघात लगा कि वह लड़ाई शुरु होने से पूर्व ही अतिसार के रोग से मर गया। मेरे कारण मृगावती अकाल ही विधवा हो गई।

मैं खुश-खुश हो गया- चलो मेरी योजना सफल हुई।

मेरी यह बात सभी को कह रही है कि- कभी किसी छोटे व्यक्ति की भी उपेक्षा मत करना और नाहक सजा मत देना। छोटा भी कभी भारी पड़ सकता है यह कभी मत भूलना मत।

संवर भावना : आत्म सुरक्षा का विज्ञान

✻ आचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

आस्रव भावना में आत्मा को मलिन और कर्मों से भारी करने वाले मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, हिंसा, असत्य आदि तत्वों के दुष्परिणामों का चिन्तन किया जाता है। इसलिये आसव के कारणों का व परिणामों का चिन्तन करना ''भावना'' बन जाता है। भावना से भाव विशुद्धि होती है। जब आत्मा आस्रव के दुष्परिणामों का विचार कर उनसे विरक्त होने के लिए प्रयत्नशील होता है तब वह ''संवर भावना'' में प्रवेश करता है।

आस्रव और संवर का स्वरुप तथा परिणाम समझाने के लिए ज्ञातासूत्र में एक उदाहरण दिया गया है-

एक नदी के किनारे झाड़ियों वाले सघन वन में दो दुष्ट श्रृगाल (सियार) रहते थे। वे अपना शिकार पाने की टोह में इधर-उधर घूमते रहते थे। नदी के पास ही एक छोटी सी तलैया (द्रह) थी उसमें दो कछुए रहते थे। एक बार वे कछुए बाहर कुछ देर नदी की मुलायम बालू में घूमने के लिये निकले। दोनों कछुए नदी के तट पर घूमते हुए जंगल की ओर निकल गये। अचानक उन दुष्ट सियारों की नजर इन मोटे ताजे कछुओं पर पड़ी। वे शिकार को पकड़ने दौड़े। कछुए भी चौकन्ने थे। सियारों को अपनी ओर आते देखा, तो अपनी जान बचाने के लिए गर्दन और पंजों को अपनी कांटेदार मोटी चमड़ी के भीतर छुपा लिया और चुपचाप मुर्दे जैसे चेतना विहीन होकर पड़ गये।

सियारों ने पंजों से उलटा-पुलटा किया परन्तु उनका कोई भी अंग उनकी पकड़ में नहीं आया, जिससे वे कछुओं का बाल भी बांका नहीं कर सकें। सियार भी बड़े चालाक थे। सोचा-इन्होंने अपना पूरा शरीर सिकोड़ लिया है। जब तक पंजा या गर्दन बाहर नहीं निकालेंगे तब तक हम इनको पकड़ नहीं सकते और इनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। वे भी झाड़ियों की ओट में छुप गये। बहुत देर तक शरीर को संकुचित रखने के बाद एक कछुए ने आँखें खोलकर इधर-उधर झांका, तो उसे लगा खतरा टल गया है। सियार भाग गये हैं। उसने अपनी गर्दन बाहर निकाली, फिर पंजा बाहर निकाला। मगर दूसरा कछुआ चतुर था। उसने सोचा जब तक पूरा खतरा नहीं टल जाये, अपने शरीर को हिलाना भी नहीं। ताक लगाकर बैठे सियारों ने भी मौका देखा और गर्दन बाहर निकालकर हिलने वाले कछुए पर झपट पड़े। अपने तेज नाखूनों और पंजों से उसे पकड़कर चीर डाला, उसका शिकार कर लिया किन्तु दूसरा कछुआ जिसने अपने आप पर नियंत्रण रखा, गुप्त होकर पड़ा रहा। सियार उसका कुछ नहीं बिगाड़ सके। रात होने पर जब सियार चले गये तो वह भी धीरे-धीरे पूरी सावधानी से दौड़कर अपने तालाब में आकर छुप गये। भगवान महावीर फरमाते है- ''जो आत्मा अपनी इन्द्रियों पर, अपनी भोग वृत्तियों पर पूरा नियंत्रण रखकर संसार में पूरी सावधानी, जागरुकता और आत्म-संयम से रहता है, उसका आस्रव रुपी दुष्ट श्रृगाल कुछ नहीं बिगाड़ सकते। किन्तु जो जरा भी प्रमाद व भोगोपभोग में असावधानी हो जाता है, मित्यात्व, अव्रत आदि आस्रव रुपी सियार उसको अपनी पकड़ में लेकर नष्ट कर डालते हैं।

इसलिये अपना कल्याण चाहने वाले को अपने मन, वचन, कर्म आदि सभी योगों पर सभी प्रवृत्तियों पर पूरा नियंत्रण रखना चाहिये। आत्म नियंत्रण का अभ्यास ही संवर है। भगवान फरमाते हैं- **मणसंवरे, वयसंवरे,संवरेकाय इन्दिये।** मन पर संवर करो, वचन पर संवर करो, शरीर के प्रत्येक अंग का, हाथ का, पाँव का, आँखों का संवर करो। पांचों इन्द्रियों पर संवर (संयम) रखो ताकि संसार में चारों ओर फैला पापस्रवों का जाल तुमको अपनी गिरफ्त में न ले सके और तुम अपना कल्याण कर सको।

शास्त्र में पाँच आस्रवों को पाँच द्वार बताया है। एक महल में कोई व्यक्ति बैठा है। उसके पास अपार धन-संपत्ति, ऐश्वर्य रखा है। महल के बाहर घूमनेवाले चोरों को पता चल गया। इसके पास धन संपत्ति रखी है परन्तु महल में घूसने के जो पाँच द्वार थे, वे पूरी तरह लोहे की जालियों व लकड़ी के दरवाजों से बन्द थे। चोरों को कहीं से भी महल में घुसने का रास्ता नहीं मिल सका। वे उसका कुछ भी धन नहीं चुरा सके।

संवर भावना में यही चिन्तन किया जाता है। मेरे आत्मा रुपी महल में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सुख, शांति, विनय, संतोष आदि अनेक प्रकार के अमूल्य हीरे रत्न रखे हैं। मिथ्यात्व, प्रमाद रुपी चोर लूटेरे इन सद्गुणों को लूटने की ताक में खड़े हैं। अतः मुझे प्रतिक्षण सावधान रहना है। जीवन के हर कदम पर जागरुक रहना है, कहीं भी, कभी भी मुझसे प्रमाद का आचरण, पाप का कार्य न हो जाय अन्यथा मेरी आत्मा के सद्गुण लूट लिये जायेंगे। संवर के पाँच भेद है- 1सम्यक्त्व 2-विरति, 3-अप्रमाद 4-अकषाय और 5-योगनिग्रह।

संवर के सभी उपायों व साधनों के प्रति सजगता जागरुकता और पुनः पुनः इनका चिन्तन करते रहना यही संवर भावना है।

श्रीसीमंधर स्वामी भगवान : एक परिशीलन

✻ मुनि यशरत्नविजय

भरत क्षेत्र और महाविदेह क्षेत्र दोनों एक दूसरे से बहुत दूर होने के बाद भी दोनों क्षेत्रों के बीच अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटित हुई है जो इनके बीच प्रेम-सौहार्द को प्रकट करती है।

दुनिया में ऐसे अनेक लोग है जो देवों के अस्तित्व पर संदेह व्यक्त करते है और अनेक लोग ऐसे भी है जो यह प्रश्न करते है कि- क्या वर्तमान में तीर्थंकरों का अस्तित्व है ? अनेक मनुष्य ऐसे भी है जो यह मानते है कि सूक्ष्मबल जैसी कोई चीज दुनिया में नहीं है और अनेक ऐसे भी है जो पूरी ताकत- जोरशोर से यह प्रचार करते हैं कि-साधना का पुण्य और इसका प्रभाव केवल कहने की बातें है ऐसा कुछ नहीं है।

भरत क्षेत्र की विरल विभूतियों और महाविदेह के सीमंधर स्वामीजी के बीच संबंध बताने वाली ऐसी अनेक रहस्यमय बातें और कड़ियां है जो इस बारे में सच्चाई बतलाते हुए ऐसे लोगों को जोरदार प्रतिउत्तर देती है। इन सब बातों को जानने के लिये, इन रहस्य से जुड़ी कड़ियों से आपको अवगत कराने के लिये आपके हृदय को आनंदित करनेवाले प्रसंग प्रस्तुत है।

1- नादर ऋषि का आकाशीय विहारः-

परम तारक परमात्मा श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी के समय में घटित रामायण की घटनाएं प्रसिद्ध है, उस समय एक बार राजा दशरथ के पास नारद ऋषि का आगमन हुआ। महाराजा दशरथ ने उचित गौरव और सम्मान के साथ नारद ऋषि को आसन पर विराजमान करवाया, राजा दशरथ ने पूछा- ऋषिवर ! आप कहां से पधारे है ? इस पर नारद ऋषि बोले- राजन् ! सीमंधर स्वामीजी का दीक्षा महोत्सव देखने के लिये मैं पूर्व विदेह पुंडरिकिणी नगरी में गया था। जहां से मेरुपर्वत पर तीर्थंकर की प्रतिमा को वंदन कर, लंका जाकर शांतिगृह में श्री शांतिनाथ भगवान को वंदन कर रावण के पास होकर यहां आया हूं।[1] यह उल्लेख त्रिषष्टि ग्रंथ में मिलता है।

इस उल्लेख से ऋषियों की लब्धि-विद्या और सिद्धियों के साथ सीमंधर स्वामी भगवान का अस्तित्व और आपश्री की दीक्षा कब हुई इस निश्चित अवधि को बहुत अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

2- चार चरम शरीरी केवली भगवंत-

भरत क्षेत्र में वैताढ्य पर्वत पर शुक्रदेवलोक से च्यवकर चार विद्याधरों का जन्म हुआ। चारों विद्याधरों ने चारण श्रमण के पास दीक्षा ग्रहण की थी। एक बार यह चारों विद्याधर मुनि सीमंधर स्वामीजी के समवसरण में गये। जहां राजा को प्रभु बोले- यह चारों विद्याधर मुनि भरत क्षेत्र से आये है। भरत क्षेत्र में इस समय कोई केवल ज्ञानी है ? ऐसा पूछते हुए राजा को प्रभु ने बतलाया कि- गृहस्थ वेश में कूर्मापुत्र केवली के रुप में है। इस पर विद्याधर मुनि ने पूछा- हमें केवलज्ञान हो सकता है क्या ? इस पर प्रभु ने कहा- आपको कूर्मापुत्र के पास ही महाशुक्र मंदिर की कथा सुनते हुए केवलज्ञान होगा। यह सुनकर चारों विद्याधर मुनि भरत क्षेत्र में कूर्मापुत्र के पास पूर्वभव के महाशुक्र देवलोक का वर्णन सुनकर जाति स्मरण ज्ञान होने से वैराग्य प्राप्त कर क्षपक श्रेणी द्वारा केवल ज्ञान को प्राप्त किया।

यह उल्लेख अनेक पुस्तकों में प्राप्त होता है परन्तु जिनमाणिक्य रचित ''कूर्मापुत्र चरित्र'' में मंगलावती विजय की रत्न संचया नगरी में जगदुत्तम नाम के तीर्थंकर की पर्षदा में यह चार विद्याधर मुनि गये थे, ऐसा उल्लेख भी मिलता है।[2] उनके ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सही भी लगती है। अतः इस घटनाक्रम को सीमंधर स्वामी के साथ नहीं जोड़ते हुए पूर्व में हुए जगदुत्तम तीर्थंकर के साथ देखना चाहिये।

3- वासुदेवादि के शोक का अपहरण-

बलरामजी के छोटे भाई-देवकी के पुत्र तीन खंड के अधिपति श्रीकृष्णवासुदेव और उनकी पटरानी रुक्मिणी आदि परिवारजन, प्रद्युम्नकुमार के जन्म लेते ही अपहरण हो जाने से अत्यन्त विरह दुःख के कारण शोक में डूब गये थे।

पूज्य सीमंधरस्वामी भगवान ने नारद मुनि द्वारा प्रद्युम्नकुमार के पूर्व भव आदि का सम्पूर्ण वृतांत कहलवाया। इस कारण से शोक दूर होने से समस्त परिवार ने परमानंद पाया। इस बारे में समस्त जानकारी ''वसुदेवहिंडी''और ''प्रद्युम्न चारित्र''[3] में विस्तार के साथ दी गई है।

4- सौधर्मेन्द्र का शत्रुंजय पर अवतरण-

एक बार प्रथम देवलोक के अधिपति सौधर्मेन्द्र महाविदेह क्षेत्र में श्री सीमन्धर स्वामीजी के पास गये थे वहां परमात्मा के श्रीमुख से सौधर्मेन्द्र ने श्री शत्रुंजय महातीर्थ के प्रभाव एवं महिमा के बारे में सुना तथा सुधर्मा सभा में जाकर आश्रित देवों को इस बारे में जानकारी देते हुए कहा कि- कंडु राजा के समान महापापी जीव शत्रुंजय गिरिराज की भाव से आराधना कर शुद्ध होकर सिद्धगति पाते हैं, यह वर्णन सुनकर सभी देव बहुत आनंदित हुए। इसके बाद श्री सौधर्मेन्द्र सभी देवों के साथ श्री शत्रुंजय गिरिराज आये परमात्मा श्री

ऋषभदेव को वंदन करने के साथ रायण पगला पर तीन प्रदक्षिणा दी। इसके बाद श्री महावीर स्वामी जहां विचरण कर रहे थे वहां जाकर नमस्कार किया ऐसा उल्लेख ''श्री शत्रुंजय माहात्म्य''[4] ग्रंथ में मिलता है।

5- कामगजेन्द्र का यात्रा प्रवास-

भरत क्षेत्र में भगवान श्री महावीर के समय चरम शरीरी कामगजेन्द्र ने सीमंधर स्वामी की यात्रा की थी। ''कुवलयमाला'' तथा ''श्री सीमंधर शोभातरंग'' [5] में कामगजेन्द्र पूर्वभव में मां के सामने अपनी सगी बहन के साथ व्यभिचार करने के पाप से बच गया और कामगजेन्द्र के भव में श्री सीमंधर स्वामी प्रभु के उपदेश से सम्यक्त्व प्राप्त किया और श्री महावीर स्वामीजी के पास दीक्षा लेकर उसी भव में मोक्ष गया यह रोमांचकारी उल्लेख आता है।

यह कथानक अत्यंत अप्रसिद्ध है इसलिये इसके बारे में संक्षिप्त में परिचय पाना बहुत ही आनंद प्रदाय है- अरुणाभ नगर में रेणुगजेन्द्र का पुत्र कामगजेन्द्र रहता था, उसकी सहमति पर उसका विवाह प्रियंगुमती के साथ हुआ था एक बार रानी ने राजा को प्रिय वणिक पुत्री के साथ स्वयं उसका विवाह करा दिया तब राजा कामगजेन्द्र ने प्रसन्न होकर उससे एक वरदान मांगने को कहा- तब उसने कहा -आप मुझ पर प्रसन्न हुए है तो यह वरदान दें, कि-कोई भी वस्तु जो आप सुने, देखे या अनुभव करें वह वस्तु मुझे सत्यरुप में कह देना।

एक दिन उज्जैन का चित्रकार अपने राजा की बेटी का चित्र बनाकर लाया उसने वह चित्र कामगजेन्द्र को बतलाया। राजा उसके रुप, लावण्य और सौंदर्य देखकर बहुत ही हर्षित हो गया और उस पर मोहित हो गया। उसने अपनी पत्नी से बात की। इस पर पत्नी ने राजा को शादी करने की सहर्ष अनुमति प्रदान कर दी। इस पर राजा पत्नी तथा सैनिकों के साथ उज्जैन की और रवाना हो गया।

मार्ग में सूर्यास्त हो गया। इसलिये एक स्थान पर सब लोग सो गये। रात में दो सुन्दर कन्याओं ने राजा को स्पर्श किया तो राजा तुरन्त उठ गया, राजा ने कन्याओं को देखकर पूछा-आप कौन हो ? यहां किसलिये आई हो ? राजा के पूछने पर वे बोली-वैताढ्य पर्वत पर सुन्दरानंद मंदिर नाम के नगर मैं पृथ्वी सुन्दर राजा की पुत्री- बिन्दुमती है ,वह पुरुषद्वेषी स्त्री है एक बार हम तीनों मौज मस्ती से घूमने के लिये गये थे। घूमते-घूमते हम पर्वत की गुफा में चले गये। वहां मिले किन्नरी जोड़े (युगल) ने आपका गुणगान हमारे सामने किया, तब से आप हमारे मन में बस गये थे। किन्नरी युगल से पूछने पर पता चला कि- आप अरुणाभ नगर के राजा हो इससे आपका कुल का पता चला और आपकी खोजबीन करते प्रज्ञप्ति विद्या के बल पर हम यहां आये है। आप हमारे वचन को मानकर बिंदुमती से विवाह कर उसे जीवनदान दिजीए नहीं तो आपके विरह में मर जाएगी। इसलिये आप अकेले ही हमारे साथ चलें।

स्त्री प्रेमी राजा ने कहा- मैंने मेरी पत्नी को वचन दिया है कि कोई भी देखी सुनी कही बात उनको बतानी है। अतः यह बात उनको बताकर मैं जवाब दूंगा। इस पर दोनों विद्याधरीओं ने कहा- आप खुशी से कहो परन्तु आने का निश्चित रखना।

इसके बाद राजा ने अपनी पत्नी प्रियंगुमती से कहा- इस प्रकार दोनों विद्याधर कन्याओं ने बिन्दुमती के विवाह निमंत्रण पर आने को कहा है इस पर वह बोली- आपकी इच्छा हो तो खुशी से पधारे और दोनों विद्याधर कन्याओं को कहा - मेरे पति को एक अमानत के तौर पर ले जाएं पर जल्दी समर्पण करना।

दोनों विद्याधर कन्याएं राजा को विमान में बैठाकर ले गई। रात्री में प्रियंगुमती विचार करने लगी कि- ये दोनों कौन है ? वापस आयेगी या नहीं ? ऐसा विचार करते हुए उसे एक प्रहर तक नींद नहीं आई। जैसे-तैसे रात गुजरती गई। जब थोड़ी रात बाकी थी तब दोनों विद्याधर कन्याओं के साथ कामगजेन्द्र विमान से आया। दोनों कन्याओं ने रानी से कहा- यह आपकी अमानत संभालो। यह कहकर कामगजेन्द्र को छोड़कर चली गई। इसके बाद रानी प्रियंगुमती ने कामगजेन्द्र के पैरों पर विनय पूर्वक गिरकर पूछा- पतिदेव ! आप कहां गये थे ? क्या हुआ क्या मिला ? क्या अनुभव हुआ ? इस पर कामगजेन्द्र ने कहा- दोनों कन्याएं विमान में बैठाकर प्राकृतिक सौंदर्य वाले वृक्ष छोटे-बड़े अनेक पर्वतों को दिखलाती हुई एक पर्वत पर उतर गई। यहां फूलों की शय्या में एक सुकुमारी कन्या सोई हुई थी। उसकी आंखें बंद थी। हृदय के ऊपर हाथ फेरकर देखा तो धड़कन बंद थी, श्वास बंद थी, उसके हाथ पैर ठंडे हो गये थे। उसको इस स्थिति में देख, मृत समझ कर दोनों कन्या रोने लगी। मैं भी कर्तव्यविमूढ़ हो गया। क्या करुं क्या नहीं करुं? यह विचार करने लगा। कुछ ही समय में सूर्योदय हो गया।

मैंने उनसे कहा- क्या करना चाहिये ? इस पर वे बोली- अग्नि संस्कार-तुरन्त ही चंदन लकड़ी आदि लाकर चिता बनाई गई। उस पर बिन्दुमती के शव को रखकर आग लगा दी। भभकती आग को देखती हुई हाय ! हाय ! करती दोनों विद्याधर कन्या चिता में कूद गई और जलकर मर गई, मैं तो देखता ही रह गया। इसके बाद आपको जलांजलि समर्पित करने को मैं बावड़ी के पानी में कूदा तो वह वाव वापस विमान

बन गया। पर्वतों पर उड़ते हुए बड़े-बड़े शरीरवाले घोड़े, वृषभ, हाथी आदि देखते हुए पर्वतों को पार करके 500 धनुष ऊंचे शरीर वाले मनुष्यों को देखा। क्या यह महाविदेह है ? क्या यह विद्याधर लोक है ? मैं यह सोचने लगा।

हे प्रिये ! विमान में से नीचे उतरा। मेरे मन में आया कि किसी से पूछ लूं कि यह कौन सा द्वीप है। इतने में तो देवकुमार जैसे दिखनेवाले विशाल शरीरवाले दो लड़के मिले। मैंने उनसे कहा- आपको किसी प्रकार की परेशानी न हो तो मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूं ? इस पर उन्होंने मेरे सामने देखा पर मैं उनके सामने कीड़ा-मकोड़ा जैसा दिखाई दे रहा था, बड़ी मुश्किल से मेरी आंखें उनसे मिली। वे आपस में बात करने लगे- महाविदेह में यह छोटा सा जीव कहां से आ गया ? छोटा सा है पर आभूषण आदि से श्रृंगार कर रखा है। हमें समझ में नहीं आ रहा है, चलो ! हम समवसरण में सीमंधर स्वामीजी परमात्मा के पास जाकर बात करते है वहां पता चल जायेगा। यह बात करते हुए एक ने मुझे हथेली में बैठा लिया।

मुझे यह देख बहुत ही खुशी हुई चलो ! आज मुझे साक्षात् तीर्थंकर परमात्मा के दर्शन हो जायेंगे। दोनों मुझे समवसरण में ले गये। हथेली में रखते हुए समवसरण में एक तरफ बैठ गये। मैंने और अन्य सबने भगवान की मधुर वाणी,देशना को बहुत ही आनंद से सुनी। मेरा तो रोम-रोम रोमांचित हो गया।

तीर्थंकर भगवान कर्म बंध समझा रहे थे। उन्होंने मुझे हथेली में से उतार दिया। इस बीच मैंने प्रभु को प्रदक्षिणा की। उस समय एक राजा ने हाथ जोड़ कर प्रश्न किया- यह मनुष्य है ? कि अन्य कोई दूसरा ? यहां किस लिये आया है ? इसे यहां कौन लेकर आया है ?

इस पर भगवान ने बतलाया कि- ''यह भरत क्षेत्र के अरुणाभ नगर का राजा कामगजेन्द्र है। यह स्त्री प्रेमी है। यह दोनों देव स्त्री का रुप धरकर वैताढय पर्वत से इस राजा को लेकर आये हैं और नकली कुमारिका बताकर उसे मृत बतलाकर अग्निसंस्कार कर स्वयं चिता में गिर पड़े। इसके बाद दोनों देवों ने लड़कों का रुप बना लिया है और यह कीड़ा है कि कौन है ऐसी हंसी मजाक किया। ''यह जीव सर्वज्ञ भगवान को देखकर सम्यक्त्व पायेगा क्या ?'' इस विचार से इसको यहां लेकर आये है। पूर्व भव की धार्मिक प्रीति से पूर्वभव के संकेत प्रतिज्ञा के आधार पर प्रतिबोध करने के लिये इन दोनों देवों ने विषय में आसक्त कामगजेन्द्र को धर्म की प्राप्ति करवाने के शुभ भाव से यह सब किया। यह कामगजेन्द्र चरमशरीरी है।

बाद में परमात्मा ने मुझे संबोधित करते हुए कहा- हे कामगजेन्द्र ! तू सम्यकत्व स्वीकार कर लें, तो मैंने कहा- आपकी आज्ञा का स्वीकार करता हूं। बाद में परमात्मा ने मेरे पूर्व के चार भवों की जानकारी दी। इसको सुनते हुए प्रभु के ज्ञानातिशय पर भावविभोर होकर प्रभु के चरणों में नतमस्तक होकर सिर ऊंचा कर आँखें खोली तो तुम्हें और इस सन्निवेश को दृष्टि गोचर किया।

मेरी नजरों के सामने से निकले हुए प्रसंगों से मेरा मन व्यथित हो गया। यह सच्चाई है कि कल्पना ? पर मुझे पता चला है कि यहीं पास में चरम तीर्थंकर परमात्मा श्री भगवान महावीर स्वामीजी पधारे है। तो हे प्रिये ! परमात्मा के पास जाकर इस बारे में जानकारी प्राप्त कर लूं प्रभु यदि कहें तो यह सही होगा। इसके बाद कामगजेन्द्र और उसकी पत्नी ने श्री महावीर प्रभु के पास जाकर उन घटनाओं को वास्तविकता जानकर उससे वैराग्य पाकर दीक्षा ले ली और केवलज्ञान प्राप्त कर कामगजेन्द्र मोक्ष में गया।

संदर्भ

1-त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र-7/4/136

2-कूर्मापुत्र चरित्र श्लो. 156-175

3-वसुदेवहिंडी पेढ़िया : पा.84-90,श्री प्रद्युम्न चरित्र 5/86-202,श्री सीमंधर स्वामी शोभा तरंग ढाल-16/3

4- शत्रुंजय महात्म्य, सर्ग-प्रथम

5-कुवलयमालाकथा-प्रस्ताव-दूसरा,श्री सीमंधर शोभा तरंग-ढाल-17 से 43

8- जैन परम्परा का इतिहास भाग-1 पृष्ठ-149

नीति पर दृढ़ता

अमेरिका में बसे एक सज्जन बैंक में डाइरेक्टर के पद पर नियुक्त हुए। उन्हें ग्राहकों को ऋण देने का कार्य सौंपा गया। एक बार ऋण के कागज देखने पर ध्यान आया कि इसमें तो कत्लखाने के जैसे कार्य होते है और उन्होंने वह पद छोड़ दिया। छह माह तक बिना नौकरी के बैठे रहना पड़ा। अनेक कष्टों में भी व्याकुल नहीं करता था। वे सद्बुद्धि से श्रद्धा में टिके रहे।

सुनने में आया कि मछली पकड़ने के जालों की बड़ी फैक्ट्री प्रारंभ हुई। उसके शेअर जैनों ने भी खरीदे थे। उसमें बुद्धि भी कैसी। श्रद्धा का तो मानो अकाल ही पड़ गया।

संसार में खुशियां है कम, बेसुमार है गम...!

✻ पं.गुणसुंदरविजयजी गणी

''**हैलो** मि.शॉ ! आप आनंद में है ?'' एक विशाल भोजन समारंभ में पाश्चात्य फिल्म जगत की अत्यंत सुंदर युवान अभिनेत्री ने प्रसिद्ध अंग्रेजी नाटककार ज्योर्ज बर्नार्ड शॉ से पूछा ! बनार्ड शॉ ने ''हाँ'' में उत्तर दिया तो अंग प्रदर्शन करती हुई, आकर्षक स्मित के साथ वह अभिनेत्री शॉ के अधिक निकट आकर कहने लगी- ''मि.शाँ !'' मैं आपसे एक महत्वपूर्ण विषय पर बात करना चाहती हूं- अपने वैयक्तिक जीवन से संबंधित एक प्रश्न पूछना चाहती हूं।

''हाँ ! हाँ ! '' अवश्य कहिये।'' मजाक भरे स्वर में। बर्नार्ड शॉ ने उत्तर दिया। ये प्रसिद्ध लेखक जैन धर्म के सिद्धांतों से बहुत प्रभावित थे।

''मि.शाँ ! आप तो जानते ही है कि मैं एक युवान सुंदर अभिनेत्री हूं और अभिनय साम्राज्ञी के रुप में प्रसिद्ध हूं। आप बुद्धिमान, विद्वान नाटककार है। मैं चाहती हूं कि हम विवाह-शादी कर लें। हमारे विवाह से जगत को मुझसे भी सुंदर और आपसे भी अधिक बुद्धिमान युवान प्राप्त हो ऐसी मेरी भावना है।'' अभिनय में निपुण उस युवती ने वाग्जाल गूंथना आरंभ किया।

इस बात को भी एक मजाक के रुप में ही लेते हुए, मुस्कुराते हुए बर्नाड शॉ बोले- ''मेडम, आपकी भावना तो बहुत अच्छी है। लेकिन अगर आपकी कल्पना से विपरित ही अगर हुआ तो क्या होगा ? बालक अगर मेरा रुप और आपकी बुद्धि ले कर आये तो ? क्योंकि इस जगत में सब कुछ हमारी इच्छा के अनुसार ही होगा ऐसा तो संभव नहीं है।'' उस अभिनेत्री के पास इस तर्क का कोई उत्तर नहीं था। वह बात वहीं रुक गई। बर्नाड शॉ की स्याद्वाद गर्भित बुद्धिमानी की जीत हुई।

हाँ, जहां से सुख प्राप्त करने की सुंदर कल्पना की हो वह पत्नी, परिवार, शेर बाजार, बंगला, मोटरगाड़ी आदि भी अंत में दुःखदायक सिद्ध होते है, लेकिन यह बात-यह सत्य सबकी समझ में कहां आता है ? और इसी कारण से जीवन के अंत तक इन्हीं सब साधनों से सुख प्राप्त करने के लिए व्यर्थ प्रयत्न लोग करते रहते हैं और इसी आशा में जीते है। कभी-कभी व्यक्ति या वस्तु बदल जाते है, परन्तु दुःख तो किस्मत में लिखा हुआ होता ही है।

याद आ जाती है एक भोली वृद्धा की बात। वृद्धा की सुंई घर में कहीं खो गई थी और वे दूंढ रही थी, घर के बाहर म्युनिसिपालिटी की लाईट के प्रकाश में यह सुई उन्हें कैसे मिल सकती है...? कब मिल सकेगी ?

किसी ने सच ही कहा है- संसार में खुशियां है कम, बेसुमार है गम...!

मूरख मांही परम मूर्ख।
जो संसारी मानी सुख॥

पुस्तक

विचारों के युद्ध में पुस्तकें शस्त्र है। **- बर्नार्ड शो**

कोट पुराना पहनो परन्तु पुस्तक नया खरीदो। **- थोरो**

आपके पास यदि दो रुपये हों तो एक रुपये से रोटी और दूसरे रुपये से पुस्तक खरीदो। रोटी जीवन देती है, तो सुन्दर पुस्तक जीवन जीने की कला सिखाता है। मैं नरक में भी सुन्दर पुस्तकों का स्वागत करुंगा क्योंकि उनमें ऐसी शक्ति है कि वे जहां होगी वहां स्वयं स्वर्ग बन जायेगा।

नयों की अपेक्षा से प्रभु-दर्शन

नैगमनय- *मन वचन, काया की चंचलता पूर्वक सिर्फ तुम्हारी ऑखों ने प्रभुमूर्ति देखी ? तो भी मैं कहूंगा कि तुमने प्रभु दर्शन किये !*

संग्रहनय- *यदि तुम सर्व जीवों को सिद्ध भगवंतों के साधार्मिक बंधुतुल्य को देखे तो ही मैं सही दर्शन मानूंगा।*

व्यवहारनय- *आशातना रहित वंदन-नमस्कार सहित यदि तुम प्रभु की मुद्रा को देखो तो ही मैं दर्शन मानूंगा।*

ऋजु सूत्रनय- *स्थिरता और उपयोग पूर्वक के दर्शन को ही ''दर्शन'' के रुप में मान्य करता हूं।*

शब्द नय- *प्रभु के अनंत ऐश्वर्य को देखकर तुम्हारी आत्म-संपत्ति को प्रकटाने की इच्छा हुई होगी तो ही मैं सही ''दर्शन'' मानूंगा।*

समभिरुढ नय- *तुम केवलज्ञानी बनोगे तब ही सच्चे दर्शन कर सकोगे- ऐसा मैं मानता हूं।*

एवंभूत नय- *तुम सिद्ध परमात्मा बनोगे तब ही सच्चे दर्शन कर सकोगे- ऐसी मेरी मान्यता है।*

श्री गुरु गौतमस्वामी आदि गणधर दीक्षा दिवस एवं चतुर्विध संघ- शासन स्थापना दिवस वैशाख सुदी -11 दिनांक 23 मई 2021 पर विशेष आलेख

✻ डॉ. सुभाष जैन

चतुर्विध संघ की स्थापना

प्रत्येक देश एवं काल में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते है जो अपने जीवन कृतित्व एवं धर्म को समर्पित महान कार्यो से युगों-युगों तक के लिये अपनी विशिष्ट पहचान बना लेते हैं और अखिल विश्व के मानस पटल पर अपनी अनुकरणीय आध्यात्मिक और संसार के कल्याण की भावना से अपनी ऐसी छवि उत्कीर्ण कर लेते है जो संसार के तारणहार के रुप में स्थाई रुप से जग में प्रसिद्ध हो जाते है। प्रत्येक जीव के व्यत्त्वि में सकारात्मक और नकारात्मक पहलु होते हैं, अकारात्मक प्रबलता के कारण ऐसे महान व्यक्तित्व के जीवन में नकारात्मक भाव दिखाई ही नहीं देता है। ऐसे महान तारक परमात्मा श्रीप्रभुवीर का जीवन चरित्र है जो हम सबके लिये कल्याणकारी होने के साथ ही सर्वार्थ पूजनीय है। परमात्मा का अंर्तमन, अंतस, अंतःकरण और अद्भूत ब्राह्य स्वरुप सब कुछ संसार के लिये वात्सल्य और करुणा से भरा हुआ है।

देवाधिदेव तीर्थकर परमात्मा भगवान श्री महावीर स्वामीजी का जीवन बचपन से ही स्व पर आत्मकल्याणकारी रहा है। परमात्मा अपार समृष्टि सम्पदा को छोड़कर संसार कल्याण के लिये दीक्षित होकर विचरण करने लगे थे। आत्मिक चरित्र प्रधान होती है, आत्म जगत के अत्वेषकों का लक्ष्य चूंकि संस्कार कोशों का परिवर्तन, परिवर्धन और जागरण होते हैं, परमात्मा इसी लक्ष्य को लेकर संसारी बंधनों से मुक्त होकर जगत मात्र के कल्याण के लिये अभयदान प्रेम करुणामय जीवन जीना आरंभ कर दिया था। जगत के सब जीवों के प्रति मैत्री का भाव गुणीजनों के प्रति आदर का भाव संसार के दुखियों के लिये करुणा का भाव और दुश्मनों के प्रति समता का भाव लिये सबके होकर जीवन जीने लगे। परमात्मा के इसी आत्मीय भाव ने जीयो और जीने दो का अमृतभरा ऐसा सूत्र दिया जिसका आज भी अनुकरण का पृथ्वी पर स्वर्ण को उतारा जा सकता है।

परमात्मा एकला चला रे के भाव से संपूर्ण जगत के उद्धार के लिये आज से 2600 वर्ष पूर्व जब देश में विकास स्थिति थी तब अहिंसा के सिद्धांत के साथ विचरण कर रहे थे, परमात्मा ने संसार की उन समृद्धि, सत्ता, सम्पदा को छोड़कर जिसकी साधना हम परमात्मा से करते है। प्रभु ने अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह के ऐसे सिद्धांतों को संसार के सामने रखा। जिन पर चलकर मानव संसार के दुःखों को दूर कर सकता है। जब प्रभु ने श्रमणत्व स्वीकार किया तब प्रभु के साथ कोई नहीं था। प्रभु का कोई शिष्य नहीं था लेकिन केवल्य और मोक्ष मार्ग की ओर प्रभु निरंतर आगे बढ़ रहे थे परमात्मा एक ऐसे धर्म की प्ररुपणा दे रहे थे जहां इहलौक परलोक, भौतिक, अध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है।

संसार में ज्ञान प्रचुरता से जिनका नाम रोशन था ऐसे श्री गौतमस्वामीजी परमात्मा के सम्पर्क में आये गुरु शिष्य का यह सम्बंध संसार मे असाता पाने के लिये ही हुआ था। परमात्मा का शिष्यत्व ग्रहण कर गुरु गौतमस्वामी के साथ प्रभु के 10 अन्य शिष्य बने। प्रभु ने सभी शिष्यों को वैशाख सुद- 11 को गणधर पद प्रदान करते हुए जिन शासन नाम की संस्था को स्थापित किया और जिनधर्म के लिये आधार शिला रखी। आगे इतिहास भी बहुत ही जोरदार है। तारणहार तीर्थंकर परमात्मा श्रीमहावीर स्वामी-वर्धमान स्वामी की पाट परम्परा पर पांचवें गणधर श्री सुधर्मस्वामीजी विराजमान हुए थे। भगवान श्रीमहावीर स्वामीजी के11 गणधर में से 9 गणधर श्री महावीर प्रभु की उपस्थिति में ही निर्वाण को प्राप्त कर चुके थे अब दो ही गणधर विराजमान थे। इनमें से प्रथम गणधर श्री इन्द्रभूति गौतमस्वामीजी को भगवान श्री महावीर स्वामीजी के निर्वाण के पश्चात अल्प समय में केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। अतः प्रभु के निर्वाण के बाद शासन की कमान संभालने के लिये संघनायक बनने योग्य केवल गणधर श्री सुधर्मा स्वामीजी विद्यमान रहे, अतः संघ व्यवस्था का सम्पूर्ण भार श्री सुधर्मास्वामी पर आया था। अन्य सभी गणधर के सुशिष्य भी श्रीसुधर्मा स्वामी की आज्ञा में रहे। इस कारण वर्तमान कालिन समस्त श्रमण समुह श्री सुधर्मास्वामी का अनुयायी स्वीकृत किया जाता है, माना जाता है। श्री सुधर्मास्वामी निग्रंथ गच्छ के आदि स्थापक थे इसलिये हम कह सकते है कि-आज के सभी श्रमण संघ का मूलगच्छ निग्रंथगच्छ है। पूज्य तारक तीर्थकर परमात्मा श्री वीरप्रभु ने जो त्रिपदी दी, उपदेश दिये उसे अर्धमागधी भाषा में नव गणधरों ने आगम रुप में तैयार किया गणधर श्री सुधर्मास्वामीजी द्वारा द्वारशांगी के 12 अंगों की रचना की थी वर्तमान समय में यह अंग ही विद्यमान में है, दुःषमकाल के प्रभाव से इसमें से कुछ अंशों का विच्छेद हो गया है, कुछ अभी भी अवशेष है। उसके आधार पर ही वर्तमान जैन शासन प्रवर्तित हो रहा है।

परमात्मा ने शासन स्थापना के साथ जिस धर्म की प्ररुपणा दी वह हमारे लिये परम आराध्य है, प्रभु ने कहा कि-धर्म के द्वारा ही मुक्ति संभव है, धर्म सभी सुख दिला सकता है इसीलिये धर्म को मंगल कहा है, मंगलमय का अर्थ है हिंसा, पाप, चोरी आदि बुराईयों से रहित एवं आत्मीय सुख प्रेम एवं करुणा का जन्मदाता धर्म है, जो व्यक्ति के लिये मंगलमय वह धर्म है जो विश्वास में मैत्री, शांति के लिये मंगलमय है वह धर्म है इसमें कहीं भी जाति, पथ, सम्प्रदाय की बात नहीं आती है। आत्मोत्थान और परमात्म प्राप्ति के लिये प्रभुवीर ने अहिंसा, अचौर्य, अपरिग्रह, अकाम का सिद्धांत दिया, आईये हम सब शासन स्थापना दिवस पर प्रभु के दिये वचनों पर चलें, यही निवेदन !

कैसे कर्म करें जिससे ग्रहों के आशुभ प्रभाव दूर हो

* रुपेश नाहर

आध्यात्मिक और ज्योतिषीय दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व कर्म प्रधान है। हमारे शास्त्र भी कर्म बंधन की बात करते हैं। ''कर्म प्रधान विश्व रुचि राखा, जो जस कराई तो तस फल चाखा, सकल पदार्थ है जग माही, कर्महीन नर पावत नाही।'' कोई पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता है केवल रुप बदल जाता है। इसी प्रकार किया गया कर्म भी कभी निष्फल नहीं होता है। हम जैसा कर्म करते हैं वैसा ही फल पाते हैं। ग्रहों को प्रसन्न करने के लिये उपासना, यज्ञ, रत्न आदि धारण करने का विधान है। हम लोग जड़ की अपेक्षा सीधे जीव से संबंध स्थापित रखें तो ग्रह अतिशीघ्र प्रसन्न हो सकते हैं। वेदों में कहा गया है कि-

मातृ देवो भवः पितृ देवो भवः गुरु देवो भवः अतिथि देवो भवः।

हमारे शास्त्रों में सूत्र संकेतों के रुप में है जिन्हें समझने की कोशिश करनी चाहिये।

अभिवादन शीलस्य नित्य वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धते, आयुर्विद्या यशो बलं॥

अर्थात् मात्र प्रणाम करने से, सदाचार के पालन से एवं नित्य वृद्धों की सेवा करने से आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि होती है। भगवान श्री गणेश अपने माता-पिता में त्रैलोक समाहित मानकर उनका पूजन और प्रदक्षिणा (चक्कर लगाना) करने से प्रथम पूज्यनीय बन गए। यदि हम जीवों के प्रति परोपकार की भावना रखें तो अपनी कुंडली में ग्रहों की रुष्टता को न्यूनतम कर सकते हैं।

नवग्रह इस चराचर जगत में पदार्थ, वनस्पति, तत्व, पशु-पक्षी इत्यादि में अपना वास रखते हैं। इसी तरह ऋषियों ने पारिवारिक सदस्यों और आसपास के लोगों में भी ग्रहों का प्रतिनिधित्व बताया है। माता-पिता दोनों के संयोग से किसी जातक का जन्म होता है इसलिए सूर्य आत्मा के साथ-साथ पिता का प्रतिनिधित्व करता है और चंद्रमा मन के साथ-साथ माँ का प्रतिनिधित्व करता है। आजकल ज्योतिष में तरह-तरह के उपाय प्रचलित है परन्तु व्यक्ति के आचरण संबंधी और जीव के निकट संबंधियों से जो उपाय शास्त्रों मे वर्णित है कदाचित वे चलन में नहीं रह गए हैं।

यदि कुंडली में सूर्य अशुभ स्थिति में हो, नीच का हो, पीड़ित हो तो कर्मविपाक सिद्धांत के अनुसार यह माना जाता है कि पिता रुष्ट रहे होंगे तभी जातक सूर्य की अशुभ स्थिति में जन्म पाता है। सूर्य के इस अनिष्ट परिहार के लिये इस जन्म में जातक को अपने पिता की सेवा करनी चाहिये और प्रातः उनके चरण स्पर्श करें और अन्य सांसारिक क्रियाओं से उन्हें प्रसन्न रखे तो सूर्य अपना अशुभ फल कम कर सकते हैं। यदि सूर्य ग्रह रुष्ट हैं तो पिता को प्रसन्न करें, चंद्र रुष्ट है तो माता को प्रसन्न करें, मंगल रुष्ट है तो भाई-बहन को प्रसन्न करें, बुध रुष्ट है तो मामा और बंधुओं को प्रसन्न करें, गुरु रुष्ट है तो गुरुजन और वृद्धों को प्रसन्न करें, शुक्र रुष्ट है तो पत्नी को प्रसन्न करें, शनि रुष्ट है तो दास-दासी को प्रसन्न करें और यदि केतू रुष्ट है तो कुष्ठ रोगी को प्रसन्न करें, ज्योतिष ग्रंथों के अनुसार यदि हम प्रेम-सत्कार और आदर का भाव रखकर ग्रहों के प्रति व्यवहार करें तो रुष्ट ग्रह की नाराजगी को शांत किया जा सकता है।

सिद्धों का उपकार

कितने लोगों को समझ में नहीं आता कि अरुपी सिद्ध भगवंत कैसे उपकार कर सकते हैं? न तो वे यहां आ सकते हैं और न कुछ कह सकते हैं। सिद्धों की बात हम बाद में करेंगे, लेकिन यहां पर अरुपी द्रव्य जो उपकारी बनते हैं उनका विचार प्रथम कर लें। धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय-दोनों अरुपी होने पर भी चलने में और स्थिर होने में सहायक बनते हैं। आकाश अरुपी है, फिर भी अवग्रह देकर उपकार करता है।

आकाश आदि जड़ होने पर भी उपकार करते हो तो परम चैतन्य स्वरुप सिद्ध भगवंत उपकार क्यों न करें? सूर्य का स्वभाव है प्रकाश फैलाना। अग्नि का स्वभाव है ठंडी को उड़ाना। चंदन का स्वभाव है ठंडक-शीतलता देना। फूल का स्वभाव है सुगंध फैलाना। उसी तरह सिद्ध का स्वभाव है उपकार करना। सिद्ध कुछ भी नहीं करने पर भी किस तरह उपकार करते है- यह प्रश्न है? ध्रुव का तारा कुछ भी नहीं करता फिर भी नाविकों को दिशा बताता है।

सिद्ध भगवंतों का भी यही बड़ा उपकार है। वे हमें दिशा बताते हैं, ध्येय बताते हैं। ध्येय के बिना आप क्या करेंगे? कहां जायेंगे? ध्येय का ख्याल सतत कराते रहना यह क्या कम उपकार है?

जेष्ट वदी -5 दिनांक 30 मई 2021 आगमोध्दारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा की पुण्यतिथि

श्रमण संस्कृति के संरक्षक आगमोध्दारक श्री महाराजा

जेष्ट वदी -5 यह बड़ा ही पावन दिन है आज के दिन हम सब के चरित्र चक्रवर्ती **आगमोध्दारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा** की पुण्य तिथि मना रहे है। **आगमोध्दारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा** महान जीवन और चरित्र के साथ देश को आदर्श जीवन देने वाले महापुरुष थे, वे वात्सल्य एवं त्याग की प्रतिमूर्ति थे। जब भीश्रमण परम्परा पर खतरे के बादल मंडराने लगते थे तब **आगमोध्दारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा** भारत कीवसुंधरा पर विचरण करते नजर आते हैं तो उसका श्रेय आचार्यश्री जवेर सागरजी महाराज को ही जाता है।

संसार में चार प्रकार के लोग:-

दुनिया में चार तरह के लोग होते हैं। एक सुपारी की तरह, दूसरे बेर की तरह, तीसरे नारियल की तरह और चौथे किशमिश की तरह। सुपारी भीतर और बाहर से कठोर होती है, कुछ लोग ऐसे ही होते हैं जो आचरण और विचार दोनों से कठोर होते हैं जो बाहर से मुलाकात एवं अन्दर से कठोर होते हैं। तीसरे वे लोग होते हैं जो नारियल के समान होते हैं, नारियल बाहर से कठोर एवं अन्दर से मुलायम होता है। कुछ लोगों का स्वभाव भी नारियल के समान होता है जो बाहर से कठोर लगते है लेकिन वे हृदय के अत्यन्त कोमल होते हैं लेकिन चौथे प्रकार के लोग किशमिश की तरह होते हैं जो भीतर-बाहर से कोमल होते हैं। किशमिश में अगर सुई भी चुभाई जाए तो उसकी नोंक टूटती नहीं है अपितु मीठी हो जाती है। इस संसार में भी ऐसे विरले महापुरुष होते हैं जिन पर कोई उपसर्ग भी करें तो वे उसका भला ही सोचते हैं। **आगमोध्दारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा** इसी प्रकृति के महापुरुष थे, वे भीतर व बाहर से चारित्रिक मिठास लिए हुए थे। उनकी चर्या में मूलाचार, चिन्तन में शासन की भक्ति और साधना में नियमानुसार के दर्शन होते थे।

आगमोध्दारक जैसा संत बनना तलवार की धार पर चलने जैसा:-

श्वेतांबर संत की साधना एवं चर्या के बारे में दुनिया के अधिकांश लोगों को श्वेतांबर संतों की केवल बाहरी दुनिया दिखाई देती है। उनके भीतर चरित्र, आचरण, त्याग और अध्यात्म दर्शन वे नहीं कर पाते है। श्वेतांबर संत बनना तलवार की तरह है एक निश्छल शिशु का जीवन जीना श्वेतांबर मुनि ही बता सकते हैं। कठोर तपश्चरण हैं।

होनहार पूत के होत चीकने पात :-

आगमोध्दारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा माता के गर्भ में जब वे आये तो नौ माह गर्भ में रहने वाले शिशु को रखने वाली माँ स्वयं जान जाती है कि आने वाली संतति का भविष्य क्या होगा। क्या फल मिलेगा नवजात के आने से। आचार्यश्री की माता के मन में अनेक शुभ विचार आने लगे थे तो पंडितजी ने बताया कि- कोई महान आत्मा जन्म लेने वाली है। जब कंस माता के गर्भ में आया था तो उसकी माता का खून पीने की इच्छा होती थी। आचार्यश्री ने गर्भ में ही अपनी माता-पिता के सपनों को पूरा कर दिया था हमें भी जीवन में जीते माता-पिता के सपने पूरे करना चाहिये ,युवाओं को माता पिता का नाम रोशन करने के कार्य करना चाहिये। **आगमोध्दारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा** की पुण्यतिथि पर एक संकल्प लेना होगा कि हम उनके सपने टूटने नहीं देंगे, जैन धर्म को चरित्र के माध्यम से अमर और अक्षुण्य बनाने का संकल्प लें

मानव जीवन की सार्थकता

मानव जन्म की वास्तविक सफलता और सार्थकता संपूर्ण त्यागमय जीवन जीकर मोक्षमार्ग की आराधना और साधना करने में ही है और इसीलिए तो जिनेश्वर भगवंतों ने सर्वप्रथम त्यागमय साधु धर्म का उपदेश दिया है।

जो आत्माएं संपूर्ण त्यागमय साधु-धर्म को स्वीकार करने में असमर्थ हैं, उनके लिए श्रावक धर्म अर्थात् आंशिक त्यागधर्म का मार्ग बतलाया है। श्रावक जीवन अर्थात् अर्थ और काम का सर्वथा त्याग नहीं, अपितु अर्थ और काम पर नियंत्रण रखनेवाला जीवन।

अर्थ पर नियंत्रण के लिए न्याय-नीति और परिग्रह परिमाण का विधान किया गया है। सर्वविरति को अपने जीवन का आदर्श रखनेवाले श्रावक का जीवन भी अन्य सद्गृहस्थों के लिए एक आदर्श जीवन होता है। ऐसे जीवन को देखकर अनेक को सदाचार-प्रधान जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है।

आर्य संस्कृति में लग्न विधान भोगों के पोषण के लिए नहीं, अपितु भोगों पर नियंत्रण के लिए है।

जिनशासन.... जयवन्ता

भगवान श्रीमहावीर ने अपने पिछले जन्मों (भवों) में कुल 11 लाख 85 हजार 645 मास क्षमण (मासखमण) उत्कृष्ट भाव से किये, प्रभु ने अपने अंतिम भव में भी साढ़े बारह वर्ष की कठोर तपस्या की, इस अंतराल में सिर्फ 349 दिवस ही आहार ग्रहण किया था। सर्व कर्मो से मुक्त होकर वैशाख शुक्ला-10 को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई।

लाखों, करोड़ें वर्ष से चले आ रहे वीतराग-श्रमण धर्म की पुनः स्थापना की। आज से करीब 2547 वर्ष पूर्व वैशाख शुक्ला 11 के दिन प्रभु ने जिनशासन में चतुर्विध संघ : साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका की स्थापना करके हमारे कल्याण मार्ग को बहुत सरल बना दिया।

प्रभुजी ने अनंत लब्धिनिधाय श्री गौतमस्वामीजी को श्रमण प्रमुख और चंदनबालाजी को साध्वीजी प्रमुख, उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने बारह व्रत स्वीकार किये। भगवान श्रीमहावीर के समुदाय में 14 हजार मुनि, 36 हजार साध्वीजी और 1 लाख 59 हजार बारह व्रतधारी श्रावक, 3 लाख 18 हजार बारह व्रतधारी श्राविकाएं थी। केवलज्ञान प्राप्त करने के उपरांत तीस वर्षो तक सकल प्राणी मात्र के कल्याणार्थः कर्म से मुक्ति, आत्म ज्ञान जैसे समग्र विषयों पर धर्म-देशना प्रदान की।

प्रभु जब मोक्ष पधारे, तब पंचमकाल शुरु होने में सिर्फ तीन वर्ष साढ़ेआठ मास का समय शेष था, अतः इस कलियुग की जरुरतों को संज्ञान में लेकर- जीयो और जीने दो, अहिंसा परमो धर्म, क्षमा वीरस्य भूषणम् आदि का पवित्र संदेश फैलाया, जो कालान्तर तक विश्व में अनुकरणीय, आत्म कल्याण , आदर्श के लिए शाश्वत गुंजता रहेगा।

प्रभु ने 72 वर्ष की आयु में पावापुरी के प्रांगण में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण प्राप्त किया था। वर्तमान में प्रभु श्रीमहावीर का शासन- यह पंचमकाल अर्थात् पाँचवां आरा 21 हजार वर्षो का है जिसमें करीब 2547 वर्ष पूर्ण हुए हैं। प्रभु की देशना, जो उनके निर्वाण के 980 वर्ष बाद गुरुदेव देवर्धिक्षमा श्रमण द्वारा वर्तमान भावनगर में लिप्पीबद्ध हुई।

वर्तमान में हमारे मार्ग दर्शक साधु-साध्वीजी भगवंतों द्वारा उसी श्रीमहावीर देशना का समय-समय अनुसार रुपांतर लिपि और प्रवचन के द्वारा सकल चतुर्विद्ध संघ को कल्याण हेतु दी जा रही है। वन्दे शासनम् ! जैनम् शासनम्

जय जिनशासन.... जय जय हो....

माँ तो है माँ....

कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश एवं प्रसिद्ध विद्वान आशुतोष मुकर्जी के जीवन की एक घटना बहुत ही सार-गर्भित एवं आँखें खोलने वाली है। वो मुख्य न्यायाधीश के साथ-साथ बंगाल विश्वविद्यालय के ''उपकुलपति'' पद पर भी रहे थे।

आशुतोष यानि कि परम मातृभक्त ! बचपन से ही माँ के प्रति अटूट श्रद्धा उनके खून में कुछ ऐसी घूली हुई थी कि वे बड़े हुए.... पढ़े-लिखे.... देश और विदेशों में प्रसिद्ध हुए.... बड़े-बड़े सरकारी पद उनको मिले किन्तु उनके जीवन में माँ का स्थान वैसा ही और उतना ही रहा.... जितना कि बचपन में था। अध्ययन में बहुत ही कुशाग्र और प्रतिभाशाली आशुतोष जब युनिवर्सिटी में प्रोफेसर थे तब उनके मित्रों और साथियों ने उनको विदेश जाकर पढ़ने और बड़ी डिग्रीयाँ लेने की सलाह दी.... लोगों ने बहुत आग्रह किया.... एक दिन माँ के पास बैठकर हँसी-मजाक की बातें कर रहे थे.... माँ का स्वास्थ्य जैसा चाहिये वैसा नहीं था.... माँ को भी बेटे पर बहुत प्यार था.... आशुतोष ने माँ को धीरे से पूछा.... ''मेरे दोस्त मुझसे विदेश जाकर पढ़ने का आग्रह करते है.... मेरे साथी प्रोफेसर भी कहते हैं.... तू यदि विदेश जाकर पढ़ेतो बहुत आगे बढ़ सकता है, बड़ा आदमी बनकर इस देश की सेवा कर सकता है। माँ, तुम्हारी क्या इच्छा है ?

बेटा.... मैं तो अब बूढ़ी हो गई हूं.... कितना जीऊंगी ? तेरा भविष्य यदि सुनहरा होता हो तो मैं तुझे क्यों रोकूं ? लेकिन बेटे तेरे बिना मुझे बिल्कुल नहीं सुहाता.... तेरे बिना तो मैं....माँ का गला भर आया। नहीं माँ, नहीं जाऊँगा.... कभी नहीं जाऊँगा....तुम्हें छोड़कर कहीं भी नहीं जाऊँगा....बस। आशुतोष ने सर माँ की गोद में रख दिया....

बंगाल के तत्कालीन वायसराय ''लॉर्ड कर्जन'' ने आशुतोष को बुलाकर ज्यादा पढ़ाई के लिये विदेश जाने का कहा- तो आशुतोष ने साफ मना कर दिया। किन्तु तुम्हारी माँ से कहो कि- वायसराय का आदेश है मुझे जाना ही पड़ेगा, कर्जन ने कहा। यह नहीं हो सकता। मैं मेरी माँ की इच्छा के विरुद्ध कभी कोई कदम नहीं उठा सकता। माँ की आज्ञा के सामने आपकी आज्ञा तनिक भी अहमियत नहीं रखती। मेरे लिये तो मेरी माँ ही भगवान् है। आप ज्यादा क्या करोगे ? मेरी नौकरी ले लोगे ? कोई बात नहीं, लेकिन माँ की इच्छा को मैं कभी नहीं उलांघ सकता, लॉर्ड कर्जन तो आशुतोष की जोश भरी आवाज सुनते ही रहे.... मातृभक्ति से छलकती हुई उनकी आँखों को वे देखते रहे।

रूढ़ियों को तोड़ने की चाहत ने डॉक्टर बना दिया

✻ चन्द्रकांतसिंह

दुनिया में सबसे खूबसूरत जगहों में से एक-लेह कुदरत ने जैसे अपना सारा हुस्न यहीं आकर बिखेर दिया है। इसी जिले के एक किसान खानदान में 75 साल पहले शेरिंग पैदा हुई। हालांकि इस परिवार के किसी सदस्य की औपचारिक शिक्षा से दूर-दूर तक कोई नाता नहीं था, लेकिन शेरिंग के लिये नियति ने कुछ और मुकाम तय कर रखा था। अगले दो साल में न सिर्फ हिन्दूस्तान एक ऐतिहासिक करवट लेने जा रहा था, बल्कि लेह-लद्दाख के लोगों की जिंदगी में भी एक नई रोशनी फूटने वाली थी। उम्मीदों से भरे उस दौर में शेरिंग के परिवार ने आने वाले वक्त में शिक्षा की अहमियत को जाना-समझा और बच्चों को स्कूल की तरफ मोड़ दिया। शेरिंग पढ़ने में काफी अच्छी थी इसलिये उन्हें घर-स्कूल से भरपूर सराहना मिलती है और इससे उनका हौंसला मजबूत होता गया। मोरावियन मिशन स्कूल से प्राइमरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद शेरिंग मैट्रिक की पढ़ाई के लिये लेह के गवर्नमेंट हाई स्कूल पहुंची लेकिन उनके स्कूल में विज्ञान की पढ़ाई के लिये जरुरी संसाधनों की भारी कमी थी। अंग्रेजी वर्णमाला तो उन्हें छठे दरजे में पढ़ने को मिली। शेरिंग कहती है, हमें शास्त्रीय तिब्बती, हिंदी और उर्दू की भी पढ़ाई करनी पड़ती थी। सारी किताबें तब उर्दू में होती थी, लेकिन मैट्रिक के इम्तिहान के परचे इंग्लिश में होते। हमें काफी कठिनाई होती थी। शेरिंग जब छोटी थी, उनके गांव में एक डॉक्टर आया करता था। उसके गले में लटकते स्टे थोस्कोप ने नन्हीं शेरिंग पर जादू-सा कर दिया। डॉक्टर बनने के सपने ने तो तभी जन्म ले लिया था, लेकिन इसे उन्होंने मजबूत इरादा तब बनाया, जब वह होशमंद हुई। वह जिस समाज में पली-बढ़ी, उसमें अंधविश्वासों का साम्राज्य कायम था। प्रसव को लेकर कई तरह की रुढ़ियां प्रचलित थी। परिवार की औरतों को भी दर्द से कराहती गर्भवती स्त्री की मदद करने की इजाजत न थी, क्योंकि इससे देवता के नाराज होने का भय बताया जाता। नतीजन, बच्चा जनने के क्रम में काफी त्रियां और शिशु दम तोड़ देते थे। शेरिंग को यह स्थिति मंजूर न थी। उनकी जेहनीयत ने श्रीनगर के गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज के दरवाजे उनके लिये खोल दिये। वहां से स्त्री रोग में विशेषज्ञता हासिल करने के बाद उन्होंने श्रीनगर में कुछ साल अनुभव हासिल किया और फिर 1979 में वह लेह स्थित सोनम मोरबू मेडिकल हॉस्पिटल से जुड़ गई। अपने इलाके की वह पहली स्त्री रोग विशेषज्ञ थी। जिस समाज में प्रसव के दौरान किसी अन्य औरत को मौजूद न रहने देने की प्रथा हो, उसके लिये यह एक अजूबा ही था। मगर शेरिंग को अपने पिता रिग्जिन नामग्याल का साथ हमेशा मिला। उन दिनों जिन परिस्थितियों में डॉक्टरों को लेह में ऑपरेशन करना पड़ता था, आज किसी को भी हैरानी हो सकती है। रक्त जमा देने वाले तापमान में प्रसव कराना पड़ता, बिजली नियमित रुप से नहीं आती थी। सर्दी के दिनों में तो लकड़ी की आग वाले चूल्हों का इस्तेमाल करना पड़ता, जो अपने प्रदूषण की वजह से जहरीले होते थे। यहां तक कि एनेस्थेसिया के इस्तेमाल में भी काफी कठिनाई आती, क्योंकि वे बेहद ज्वलनशील होते हैं और पास में लकड़ी का चूल्हा जल रहा होता था। चूंकि तापमान सामान्य बनाने की यह पद्धति हानिकारक थी, इसलिये शेरिंग ने कश्मीर के पारंपरिक हमाम सिस्टम का सहारा लिया और कुछ विदेशी गैर-सरकारी संस्थाओं की मदद से वह इसे अपने अस्पताल में लाने में कामयाब हो सकीं। हमाम कक्ष प्रसव व ऑपरेशन, दोनों में काम आने लगी और कई सालों की सशक्कत के बाद सरकार ने उनके अस्पताल में सेण्ट्रल हिटिंग सिस्टम लगाया। सेहत के लिहाज से औरतों के रहन-सहन और खान-पान को लेकर काफी समस्याएं आती थी। वहां इतनी सर्दी पड़ती है कि लोग बड़ी मुश्किल से स्नान करते हैं। उन दिनों कई लोग महीने में बमुश्किल एक बार नहाते थे। जाहिर है, औरतों की स्थिति अलग न थी, बल्कि वे खाना भी अक्सर बासी खाती। गर्भवती

> **शेरिंग लांडोल**
> **पहली लद्दाखी महिला डॉक्टर**
> **वहां जिस समाज में पली-बढ़ी, उसमें अंधविश्वासों का बोल-बाला था। परिवार की औरतों को भी गर्भवती स्त्री की मदद की इजाजत न थी, क्योंकि इससे देवता के नाराज होने का भय बताया जाता। इस कारण काफी स्त्रियां और शिशु दम तोड़ देते। शेरिंग को यह स्थिति मंजूर न थी।**

औरतों को इस वजह से कई तरह की तकलीफें पैदा हो जाती थी। फिर एक बड़ी समस्या यह थी कि औरतें यौन समस्याओं के बारे में किसी से चर्चा नहीं करती थी, पर शेरिंग के आने से उन्हें बल मिला और वे आहिस्ता-आहिस्ता खुलने लगी। चूंकि शेरिंग स्थानीय भाषा, लोगों की माली हालत समझ सकती थी, इसलिये महिलाएं उनके पास आने लगी। लद्दाख के सुदूर इलाकों में भी उन्होंने औरतों को स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करने के लिये शिविर लगाए। उनकी कोशिशों की बदौलत महिलाएं प्रसव के लिए सरकारी अस्पताल में आने लगी। 1980 में उनके अस्पताल में जहां 114 बच्चों का जन्म हुआ था, वह 2004 में उनके अवकाश लेते समय 1,241 तक पहुंच चुका था। उनकी इस सेवा ने उन्हें भारी प्रतिष्ठा दिलाई है। अपनी मरीजों की पोतियों तक के प्रसव कराने वाली इस ममतामयी डॉक्टर को साल 2006 में भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया। इस साल उन्हें पद्म भूषण से नवाजा गया है।

भाग्यशाली कौन ?

शास्त्र-प्रसिद्ध माषतुष मुनि का अक्षरज्ञान बहुत ही अल्प था, ''मा रुष मा तुष'' जैसे दो छोटे वाक्य भी याद नहीं कर सकते थे, किन्तु राग-द्वेष से पर रहने की कला सीख सके थे। इसलिए ही वे शायद अक्षरज्ञान से अल्पज्ञानी किंतु संवेदन-ज्ञान से, संस्पर्शी ज्ञान से महाज्ञानी थे। अतः एवं वे केवली बन सकें। केवलज्ञान की प्राप्ति अक्षरज्ञान से नहीं, किन्तु संवेदनज्ञान से होती है।

एक साधु ''मा रुष मा तुष'' (राग-द्वेष नहीं करना) ये दो वाक्य बराबर याद तो रख सकता है, किन्तु राग के प्रसंग में राग करने से या द्वेष के प्रसंग में द्वेष करने से रुक नहीं सकता और दूसरा साधु ''मा रुष मा तुष'' इतने छोटे दो वाक्य भी याद नहीं रख सकता, किन्तु राग के प्रसंग में राग नहीं करता या द्वेष के प्रसंग में द्वेष नहीं करता। दोनों में महान कौन ? वाक्य बोलनेवाला कि वाक्य जीनेवाला ?

एक आदमी हजारों मिठाईओं के नाम याद रख सकता है, किन्तु एक भी मिठाई खा नहीं सकता या खाने नहीं मिलती और दूसरी और एक बच्चे को एक भी मिठाई का नाम याद नहीं है, फिर भी सब मिठाईयां खाने को मिलती है और वह खा भी सकता है तो दोनों में भाग्यशाली कौन ? मिठाई का ज्ञान पानेवाला कि मिठाई खानेवाला ?

स्वार्थ का प्रेम

एक राजकुमार और एक श्रेष्ठीपुत्र परम मित्र थे। दोनों किशोर वय से साथ खेले, पढ़े। युवावस्था में आने पर दोनों की शादी उनके माता-पिता ने सुलक्षणी सुशील एक-एक कन्या से की। अब वे सांसारिक मोहपाश में जकड़ गये। अब मिलना कभी-कभी होता था।

एक बार दोनों उद्यान में क्रीड़ा करने गये थे। वहां एक संत पुरुष का समागम हो गया। संत पंच महाव्रतधारी, कंचन-कामिनी के त्यागी एवं निःस्पृही सरलमना थे। मुनिराज ने उन्हें वैराग्य एवं त्याग का उपदेश दिया। श्रेष्ठी पुत्र को तो उपदेश असर कर गया, पर राजकुमार ने कहा- गुरुदेव ! मेरा परिवार तो मेरे लिए प्राण देने को तैयार है। मेरे सिर में एक बार थोड़ी सी वेदना हुई थी। पूरा परिवार भूखा प्यासा मेरे लिए पूरे दिन एवं रात मेरे पास खड़ा रहा था। कितना प्रेम है, मैं तो मेरे भाग्य की प्रशंसा करता हूं कि ऐसा प्रेमाल परिवार मुझे मिला है।

गुरुदेव ने कहा- ये सब स्वार्थ का प्रेम दर्शाते हैं। जब स्वार्थ पूर्ण हो जाता है तब वे एक भी पास में नहीं रहते। मैं तुझे एक बात कहता हूं सो सून और उसका प्रयोग कर। तू एक बार पेट दर्द का बहाना बनाकर रोना चिल्लाना। शाम के समय वह श्रेष्ठीपुत्र संत का वेश पहनकर आयेगा। एक बार जल का प्याला मंत्रित कर कहेगा- अब इसका अंतिम समय आ गया है। इसकी मृत्यु मैंने इस प्याले में उतार दी है। अब इसे जो पीयेगा वह यम का अतिथि बनेगा और वह बच जायेगा, फिर देखना, तुझ पर किसका प्रेम है ? राजकुमार ने यह स्वीकारा। चार दिन तक पेटदर्द का बहाना बनाकर पड़ा रहा। अनेक वैद्य आदि बुलाये। दर्द शांत न हुआ। चौथे दिन संत के वेश में श्रेष्ठीपुत्र आया। पूर्व कथनानुसार क्रिया की। परन्तु कोई भी वह प्याला पीने को तैयार नहीं हुआ। पत्नी ने कहा- मेरा पुत्र छोटा है। पिता ने कहा- मुझे अभी तक एक पुत्री की शादी करनी है। माता ने कहा- मेरे बिना मेरे पति की सेवा कौन करेगा ? सब ने अपने अपने स्वार्थ की बात की। तब श्रेष्ठीपुत्र रुपी संत ने कहा- मेरा जीवन परोपकार के लिए ही है अतः इसके बदले मैं यम का अतिथि बन जाता हूं। यों कहकर उसने पानी पी लिया। राजकुमार ने कहा- मैंने दुनिया का स्वार्थ देख लिया। मैं साधु बनने जा रहा हूं। वे दोनों मित्र मुनिराजश्री के पास आकर चारित्र लेकर आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़े।

चौबीस तीर्थंकर कैवल्य-वृक्ष

✲ डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई

जैन दर्शन में प्रकृति और पर्यावरण की अतिशय महिमा बताई गई है। इसका एक प्रबल प्रमाण यह है कि सभी जैन तीर्थंकरों के केवलज्ञान कल्याण किसी न किसी वृक्ष के नीचे हुए हैं। ध्यान व तप की उत्कृष्ट साधना के साथ जिन वृक्षों के नीचे तीर्थंकरों को केवलज्ञान उपलब्ध हुआ, उन वृक्षों के नाम ग्रंथों से मिलते हैं, उन्हीं की सूची यहां दी जा रही हैः-

क्र.	तीर्थंकर का नाम	केवलज्ञान वृक्ष
1-	भगवान श्री ऋषभदेवजी	वटवृक्ष (बरगद)
2-	भगवान श्री अजितनाथजी	सप्तपर्ण
3-	भगवान श्री संभवनाथजी	साल (शालवृक्ष)
4-	भगवान श्री अभिनंदन स्वामीजी	असन या बीजक (कहीं चीड़वृक्ष का उल्लेख)
5-	भगवान श्री सुमतिनाथजी	प्रियंगु वृक्ष
6-	भगवान श्री पद्मप्रभुजी	प्रियंगु वृक्ष
7-	भगवान श्री सुपार्श्वनाथजी	शिरीष वृक्ष
8-	भगवान श्री चन्द्रप्रभजी	नागवृक्ष (नागपुष्प या नागकेशर का पेड़)
9-	भगवान श्री सुविधिनाथजी	अक्ष या बहेड़ी (कहीं नागवृक्ष का उल्लेख)
10-	भगवान श्री शीतलनाथजी	पलाश (कहीं बेलवृक्ष का उल्लेख)
11-	भगवान श्री श्रेयांसनाथजी	तेन्दू वृक्ष (कहीं तुम्बरु का उल्लेख)
12-	भगवान श्री वासुपूज्यजी	पाटल वृक्ष (कहीं कदम्ब का उल्लेख)
13-	भगवान श्री विमलनाथजी	जम्बू वृक्ष (जामुन का पेड़)
14-	भगवान श्री अनन्तनाथजी	अश्वत्थ (पीपल)
15-	भगवान श्री धर्मनाथजी	सप्तपर्ण
16-	भगवान श्री शांतिनाथजी	नन्दीवृक्ष (तगर)
17-	भगवान श्री कुन्थुनाथजी	तिलक वृक्ष
18-	भगवान श्री अरनाथजी	आम्र वृक्ष (आम का पेड़)
19-	भगवान श्री मल्लिनाथजी	अशोक वृक्ष
20-	भगवान श्री मुनिसुव्रतजी	चम्पक (चम्पावृक्ष)
21-	भगवान श्री नमिनाथजी	बकुल वृक्ष
22-	भगवान श्री अरिष्ट नेमीजी	मेषश्रृंग, मेढ़ासिंगी (बांसवृक्ष)
23-	भगवान श्री पार्श्वनाथजी	देवदार या देवदारु
24-	भगवान श्री महावीर स्वामीजी	साल (शालवृक्ष या शाल्मलि)

कुछ तीर्थंकरों के कैवल्य-वृक्ष के नाम अलग-अलग ग्रंथों में भिन्नता लिये हुए हैं। तीर्थंकरों के दीक्षा कल्याणक भी किसी वृक्ष के नीचे हुए हैं। कैवल्य वृक्ष की तरह तीर्थंकरों के दीक्षा-वृक्षों की पूरी सूची नहीं मिल सकी। यदि ऐसी सूची मिलती है तो उसका भी चार्ट बनाया जा सकता है।

वस्तुतः तीर्थंकरों की दीक्षा, साधना, कैवल्य, देशना, विहार, प्रवास, समवसरण आदि सभी निमित्तों के साथ वृक्ष, उपवन, वन, वनस्पति, वन्य-जीव, अन्य जीव, पशु-पक्षी, नदी, सरोवर, पर्वत, गुफा आदि के प्रचुर उल्लेख मिलते हैं। ये उल्लेख पर्यावरण और आत्म-साधना के अभिन्न संबंध को दर्शाते हैं। स्पष्ट है कि अध्यात्म की ऊंचाइयाँ और गहराईयां पाने के लिये कोई वातानुकुलित कक्ष या आलीशान भवन नहीं, अपितु नैसर्गिक परिवेश सर्वाशिक उपयुक्त होता है। खर्चीले ध्यान करवाने वाले आधुनिक साधुओं और पंडितों को इस तथ्य पर ध्यान देना चाहिये।

जलगांव (महाराष्ट्र) स्थित ''अहिंसा तीर्थ'' परिसर में एवं ''जैन पर्वत'' पर 24 तीर्थंकर केवलज्ञान वृक्ष वाटिकाएं हैं। उदयपुर (राजस्थान) में गुलाबबाग स्थित ''अरिहंत वाटिका'' तथा देबारी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर परिसर में ''कैवल्य वाटिका'' है। देश में अन्य स्थानों पर बने कैवल्य वृक्ष उपवनों की जानकारी जुटाई जा सकती है। इस प्रकार के उद्यानों का विकास करके पर्यावरण, संस्कृति और अध्यात्म के त्रिभुज बनाए जा सकते हैं। एक तथ्य यह भी ख्याल में आया है कि कुछ क्षेत्रों में कुछ वृक्ष वहां के भूगोल व जलवायु के कारण पनप नहीं सके। ऐसे में कुछ वृक्ष स्थानीय जलवायु के अनुसार प्रतिस्थापित किये जा सकते हैं।

छः आवश्यक

छः आवश्यक आगमसूत्रों का प्रथम सोपान है। उसमें भी प्रथम है- सामायिक !

सामायिक मतलब समता का आय-लाभ ! सम+आय=समाय।

समाय शब्द को स्वार्थ में ''इकण्'' प्रयत्न लगने पर ''सामायिक'' शब्द बना। अतः सामायिक का अर्थ हुआ- समता का लाभ !

सामायिक से लेकर चौदहवां पूर्व लोक-बिंदुसार यहां तक के सभी शास्त्रों का सार समता है।

छः आवश्यकों में ''सामायिक'' ध्येय है, लक्ष्य है। सब कुछ करने के बाद आखिर साधक को समता में प्रतिष्ठित होना है, सामायिक में स्थिर होना है।

किन्तु यह सामायिक मिलेगा किस तरह ? पश्चानुपूर्वी से सोचेंगे तो साधना का प्रारंभ कहां से करना ? यह बात अच्छी तरह से समझ में आ जायेगी।

पच्चक्खाण अंतिम आवश्यक है। वहां से प्रारंभ होगा। पच्चक्खाण मतलब प्रत्याख्यान-प्रतिज्ञा ! नये आगंतुक को गुरुदेव धर्म-प्रवेश के लिए सर्व प्रथम कुछ न कुछ प्रतिज्ञा देते हैं। सचमुच प्रतिज्ञा धर्म का प्रवेशाद्वार है। किन्तु प्रतिज्ञा का सम्यक पालन किस तरह होगा ? शरीर पर मोह होगा तो पालन हो सकेगा ? इसलिए शरीर का-काया का मोह छोड़ना जरुरी है। काया के मोह का उत्सर्ग-त्याग, इसका नाम ही कायोत्सर्ग ! पच्चक्खाण के बाद विपरीत क्रम से दूसरा आवश्यक है, कायोत्सर्ग ! किन्तु काया का उत्सर्ग तो युद्ध में सैनिक भी करते है, उसे कायोत्सर्ग कहेंगे ? जहां पाप से पीछे हटने की-प्रतिक्रमण करने की भावना जगे, वही सच्चा कायोत्सर्ग है, इसलिए कायोत्सर्ग के बाद आया प्रतिक्रमण ! प्रतिक्रमण का मतलब है- पाप से पीछे हटना। पाप से पीछे किस तरह हटेंगे ? क्या अपने बल से ? अपने बल से साधना में एक कदम भी नहीं चल सकते हैं। देव-गुरु की कृपा तो चाहिये.... चाहिए और चाहिए ही। देव-गुरु में भी प्रथम उपकार गुरु का है इसलिए प्रतिक्रमण के बाद गुरुवंदन और उसके बाद भगवान की कृपा को दिखानेवाला-चउविसत्थो-चतुर्विशतिस्तव-चोवीसों भगवान की नामपूर्वक स्तुति ! यह सब करने के बाद पाना है क्या ? समता ! अतः उसके बाद सामायिक !

छः आवश्यकों में सामायिक प्राप्तव्य है। सामायिक प्रभु की कृपा से मिलता है, अतः उसके बाद चउविसत्थो ! भगवान की कृपा गुरु कृपा के बिना नहीं मिलती है, अतः गुरुवंदन ! पाप से पीछे लौटे बिना गुरु-कृपा कैसी ? अतः प्रतिक्रमण ! काया की आसक्ति नहीं छूटेगी तो प्रतिक्रमण कैसे होगा ? अतः कायोत्सर्ग ! प्रतिज्ञा के बिना कायोत्सर्ग किस तरह होगा ? अतः पंच्चक्खाण ! यों छः आवश्यकों में साधना का संपूर्ण क्रम समाविष्ट हैं।

नाम और रुप

सामान्यतः मेरे पास आनेवाले लोगों को मैं दो वस्तुओं की सौंगध के लिए आग्रह करता हूं। 1- प्रभु के दर्शन और 2- नवकारवाली (जाप)

हमारे यहां इन दो के लिए क्यों इतना आग्रह करते हैं ? क्योंकि हमारे जीवन का लक्ष्य है : प्रभु प्राप्ति।

और ये दोनों माध्यम ही हमें प्रभुमय बना सकते है, जिसे अगर समझकर भावपूर्वक करें तो !

और ये दोनों ऐसे अनुष्ठान है कि जो बालक से लेकर बूढ़े.... सभी सरलता पूर्वक कर सकते हैं।

दर्शन और जाप दोनों में भगवान रहे हुए हैं। मूर्ति में आकार रुपी भगवान है। जाप में नाम रुपी भगवान है।

जाप भगवान के नाम का होता है। नाम में भगवान का ही अवतरण है। मूर्ति में आकार रुप से और जाप में मंत्र रुप से भगवान ने स्वयं अवतरण किया है, इस तरह समझकर आराधना करनी चाहिये।

हमें हमारा रुप बहुत ही अच्छा लगता है। ग्रुप फोटो हमें कब अच्छा लगता है ? अगर हमारा फोटो अंदर हो तो ! नहीं तो ?

और दूसरी बात हमें हमारा नाम बहुत ही अच्छा लगता है। शब्दकोष के हजारों शब्दों में से हमें हमारा नाम ही सबसे अच्छा लगता है। इस नाम और रुप को अमर करने के लिये हम कितना प्रयत्न करते हैं ? हम जानते है कि नाम या रुप किसी के रहे नहीं, रहेंगे भी नहीं, फिर भी इसे अमर बनाने के लिये मोह छुटता नहीं, यह भी आश्चर्य है न ?

ऐसा नाम और रुप के मोह का नाश करने के लिए क्या करना ? ज्ञानियों ने कहा है कि अनामी और अरुपी प्रभु के साथ प्रेम करो। अनामी प्रभु का नाम सभी नामों का सार है और अरुपी प्रभु का रुप (मूर्ति) सभी रुपों का सार है।

हिमालय के सिद्धयोगी महात्मा के मार्गदर्शन में महामंत्र की साधना करने वाले श्री दामजीभाई जेठाभाई लोड़ाया

❋ गणि महोदयसागरजी म.सा.

मंत्राधिराज श्री नवकार महामंत्र !... जिसके विषय में गाया जाता है कि-

''योगी समरे भोगी समरे, समरे राजा रंक।
देवो समरे दानव समरे, समरे सहु निःशंक॥

ऐसे महामंत्र नवकार का स्मरण जैन कुलोत्पन्न प्रत्येक मनुष्य आध्यात्मिक मात्रा में भी करते है इसमें आश्चर्य नहीं, लेकिन हिमाचल में रहते हुए सैकड़ों वर्ष की उम्रवाले सिद्धयोगी महात्मा भी नवकार महामंत्र का आलंबन लेकर योग साधना करते हैं। यह बात निम्नोक्त दृष्टांत से जानकर महामंत्र की सर्व व्यापकता देखकर सानंद आश्चर्य के साथ अहोभाव वृद्धिंगत हुए बिना रहता नहीं।

मूलतः कच्छ-सुथरी गांव के निवासी लेकिन हाल मुंबई-दादर में रहते हुए सुश्रावक श्री दामजीभाई जेठाभाई लोड़ाया (उम्र वर्ष 88) पिछले 52 वर्षो से हिमालय के ऐसे योगीराज के मार्गदर्शन के अनुसार नवकार महामंत्र के आलंबन से योग साधना कर रहे हैं। आईए, हम उनके जीवन में थोड़ा दृष्टिपात करें।

दामजीभाई के पिताश्री जेठाभाई उज्जैन (म.प्र.) कपास का व्यापार करते थे। इसलिये उज्जैन में स्नातक बने हुए दामजीभाई उनके चाचाश्री वालजीभाई लधाभाई की मुंबई में कपास की बड़ी पेढ़ी चलती थी उसमें हिस्सेदार के रुप में शामिल हुए।

दामजीभाई ने अपने चाचाश्री को सट्टा नहीं करने की विज्ञप्ति की, मगर भवितव्यतावशात् अन्य तीन व्यापारियों के आग्रह से अपनी कंपनी के नाम से बड़ा सट्टा किया और कर्म संयोग से उसमें 90 लाख रुपयों की हानि हुई। दूसरे व्यापारियों ने वालजीभाई से नाता तोड़ दिया इसलिए वालजीभाई की कंपनी को इतनी भारी राशि चुकाने की जिम्मेदारी आ गयी। इसके आघात से उनको हृदय का दौरा पड़ गया और उनका देहावसान हो गया। अब वह धनराशि चुकाने की जिम्मेदारी दामजीभाई पर आ पड़ी, इसलिए वे चिंतामग्न हो गये। उनको चिंतातुर देखकर एक श्रावक उनको दादर में कबूतर खाना के पास शांतिनाथ जिनालय के उपाश्रय में चार्तुमास बिराजमान परम शासन प्रभावक प.पू.आ.भ.श्रीमद् विजय लक्ष्मणसूरीश्वरजी म.सा. के पास ले गये।

उस वक्त दामजीभाई नास्तिक जैसे थे। धर्म के प्रति उनको जरा भी आस्था नहीं थी। यह जानकर आचार्य भगवंत ने उनको कहा कि- ''नास्तिकता को छोड़ दो। जैन धर्म में अनेक उत्तम मंत्र हैं। आपको मैं एक मंत्र देता हूं, तीन दिन तक कुछ भी खाये पीये बिना अर्थात् चौविहार अट्ठम तप करके इस मंत्र का जप करना होगा। मैं जानता हूं कि नास्तिक होने से आपके पास दीपक, अगरबत्ती, आसन इत्यादि कुछ भी नहीं होगा। इस प्रकार से मंत्र जप करने द्वारा तीन दिनों में अगर 90 लाख रुपये मिल जावे तो मेरे पास आना, मैं आपको धर्म में जोड़ दूंगा !!!...'' (वह मंत्र था-''ॐ परमगुरु-गुरुभ्यो नमः स्वाहा'')

''डूबता हुआ मनुष्य तृण को पकड़ने के लिए भी तैयार हो जाता है।'' इस उक्ति के अनुसार दामजीभाई इस अनुष्ठान को करने के लिए तैयार हो गये.... और तीसरे ही दिन जैसे कोई चमत्कार ही हुआ हो उसी तरह एक मारवाड़ीभाई ने उनको फोन द्वारा अपने घर पर बुलवाकर एक करोड़ रुपये सामने से भेंट के रुप में दिये !

दामजीभाई के आश्चर्य और अहोभाव का पार न रहा। परम पूज्य आचार्य भगवंत के प्रति और जैन धर्म के प्रति उनके हृदय में अपार श्रद्धा और आदर उत्पन्न हो गये।

बात ऐसी हुई थी कि, एक वर्ष पूर्व में उपरोक्त मारवाड़ी भाई को कपास के सट्टे में तीन करोड़ रुपयों की हानि होने की परिस्थिति का सर्जन हुआ था। तब वे भाई दामजीभाई के पास आकर कहने लगे कि- ''अंग्रेज गर्वनर के साथ आपकी अच्छी मित्राता है, तो आप उनको समझाइए कि कपास का सट्टा बंद करने का वटहुकम जाहिर कर दें और कपास का भाव भी कम कर दें तो मैं बड़ी हानि से बच सकूंगा और आपका उपकार कभी भी नहीं भूलूंगा। उनकी बात सुनकर दामजीभाई ने वैसा करवाया, फलतः उस भाई के तीन करोड़ रुपये बच गये।

उस वक्त उस मारवाड़ी भाई ने अपने मन में संकल्प किया था कि अगर मेरे तीन करोड़ बच जायेंगे तो 1 करोड़ रुपये दामजीभाई को दूंगा। इस संकल्प की बात उन्होंने दामजीभाई को बताई नहीं थी। फिर भी दामजीभाई की आर्थिक विषम परिस्थिति की खबर मिलते ही उन्होंने स्वयंमेव फोन करके दामजीभाई को एक करोड़ रुपये अर्पण कर दिये।

दामजीभाई संकट से पार हो गये। कपास के बड़े-बड़े व्यापारी भी दामजीभाई के प्रति आदर की दृष्टि से देखने लगे।

इस प्रसंग के बाद दामजीभाई प्रतिदिन प.पू.आचार्य भगवंतश्री के पास जाने लगे। पूज्यश्री ने भी उन पर कृपा दृष्टि बरसायी और जैन धर्म का मर्म समझाकर नवकार महामंत्र की आराधना में जोड़ा। दामजीभाई के भाग्य के द्वार खुल गये और नियति उनको और भी आगे बढ़ाने के लिए चाहती हो वैसी एक विशिष्ट घटना उनके जीवन में घटित हुई।

एक बार वे पूना में एक लायब्रेरी में बैठकर योग, प्राणायाम और स्वरोदय संबंधी किताबें पढ़ रहे थे तब एक अजनबी महात्मा उनके पास आकर कहने लगे- ''आपको जिसकी चाहना है वह आपको हिमालय में हरिद्वार में लंगड़ाबाबा की टेकरी (छोटी सी पहाड़ी) है वहां मिल जायेगा।''

दामजीभाई का जिज्ञासु और साहसिक हृदय यह सुनकर अत्यंत हर्षित हो गया और कुछ दिन बाद वे सचमुच हवाई जहाज और रेलगाड़ी द्वारा हरिद्वार पहुंच गये। वहां जाकर उन्होंने लंगड़ाबाबा की पूछताछ की तब लोगों ने बताया कि- ''आप उनके पास जाओ भले, मगर वे आपको मार पीटकर निकाल देंगे।''.... दामजीभाई ने कहा-''जो मेरे भाग्य में होगा, वैसा होगा।''

बाद में हिम्मत करके नवकार महामंत्र का स्मरण करते हुए ऊपर चढ़ने लगे। रास्ते में अजगर और दो हाथी क्रमशः मिले। 7-7 नवकार सुनाने से वे दूर हो गये और दामजीभाई लंगड़ाबाबा के निवास स्थान में पहुंच गये और उनको प्रणाम किया।

महात्माजीने प्रथम तो उनकी परीक्षा करने के लिए कठोर शब्दों में कहा- ''क्यों आये हो यहां ? चले जाओ यहां से।'' दामजीभाई ने नम्रता से प्रत्युत्तर दिया तो भी विशेष परीक्षा करने के लिए उनका गला पकड़करके टेकरी से नीचे फेंक देने के लिये तैयार हो गये। तो भी दामजीभाई डरे नहीं और नवकार महामंत्र का स्मरण करते रहे। आखिर में उनकी हिम्मत और दृढ़श्रद्धा देखकर महात्माजी प्रसन्न हुए और उनको नवकार महामंत्र की साधना के विषय में सुंदर मार्गदर्शन दिया।

पंच परमेष्ठी के पांच रंगों के साथ पंच भूतमय हमारे शरीर में और विश्व में रहे हुए पांच रंगों का संबंध समझाया और हमारे शरीर में रीढ़की हड्डी में आयी हुई सुषुम्णा नाड़ी में रहे हुए मूलाधार, स्वाधिष्ठान मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि आज्ञा और सहस्त्रार नाम के सात चक्रों पर नवकार महामंत्र का जप करने की विधि समझायी। दामजीभाई को तो मानो अमृत भोजन मिला हो उतना आनंद हुआ। घर आकर वे महात्माजी के मार्गदर्शन के मुताबिक वे प्रतिदिन रात को और ब्राह्म मुर्हूत में घंटों तक नवकार महामंत्र की साधना करने लगे। जब जब मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है तब दूरभाष (टेलीफोन) की तरह महात्माजी की आवाज स्वयमेव दामजीभाई को सुनाई देती है। इस तरह दूर बैठे-बैठे भी वे अपने शिष्य की देखभाल करते हैं।

उपरोक्त घटना के बाद हर पल 10-10 साल के बाद वे दामजीभाई को दिल्ली-आबु-कन्याकुमारी और नेपाल में क्रमशः प्रत्यक्ष मिलते हैं।

साधना के प्रभाव से दामजीभाई को विविध प्रकार की आध्यात्मिक अनुभूतियां होती रही है, मगर महात्माजी के मार्गदर्शन के मुताबिक वे उन्हें गुप्त रखना ही पसंद करते हैं, लेकिन योग्य जिज्ञासु मुमुक्षुओं को वे नवकार महामंत्र की आराधना के विषय में निःसंकोच भाव से मार्गदर्शन देते रहते हैं। कई बार विदेशों से भी उनको निमंत्रण मिलते है और वे विदेश जाकर वहां के लोगों को नवकार महामंत्र की महानता समझाते है और उसकी साधना के विषय में मार्गदर्शन देते हैं। नवकार महामंत्र का शुद्ध उच्चार करने के बारे में खूब भार देते हैं। शुद्ध और अशुद्ध उच्चार करने से विश्व के पांच महाभूत (पृथ्वी-पानी-अग्नि-वायु और आकाश) के ऊपर कैसा अलग-अलग प्रभाव पड़ता है यह बात उन्होंने विदेश के वैज्ञानिकों के सहयोग से प्रयोग करके सिद्ध किया है।

कच्छी दशा ओसवाल ज्ञाति के मुखपत्र ''प्रकाश समीक्षा'' मासिक में दामजीभाई के ''सरल योगदर्शन'' के विषय में करीब 13 लेख प्रकाशित हुए है, जो जिज्ञासुओं के लिये खास पठनीय हैं।

आध्यात्मिक साधना के अलावा व्यवहार में भी वे अंग्रेजों के समय में और आज भी सरकार में अच्छा संबंध रखते हैं। दिनांक 14-4-1944 में मुंबई में प्रचंड विस्फोटक हुआ था तब एवं उसके बाद भी अकाल, अतिवृष्टि, भूकंप आदि अनेक प्रसंगों में सरकार की विज्ञप्ति से उन्होंने अनुमोदनीय लोकसेवा की है। इ.सं. 1994 के अप्रेल के महिने के ''जन्मभूमि'' अखबार में दामजीभाई की लोकसेवाओं पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है।

वि.सं.1967 में अषाढ़ शुक्ल 2 के दिन जन्मधारण किये हुए दामजीभाई आज 88 साल की उम्र में भी नवकार महामंत्र की साधना प्रतिदिन उल्लासपूर्वक करते हैं।

प्रभु करुणा सागर है....

भगवान दूर है, तो उनके साथ प्रेम कैसे किया जाये ? नजदीक रहनेवालों के साथ प्रेम कर सकते हैं, चीज दे सकते है, ले सकते हैं, बात-चीत कर सकते हैं, मन के भावों को पहचान सकते हैं, लेकिन दूर रहनेवाले भगवान के साथ न बात कर सकते हैं, न उनके प्रतिभावों को पहचान सकते हैं, तो प्रेम कैसे होगा ? एक पक्षीय प्रेम तो कैसे पैदा हो सकता है ?

भक्त की यह विशेषता है कि वह दूर रहनेवाले प्रभु के साथ भी प्रेम कर सकता है। वास्तव में जहां मन होता है वहाँ दूर भी नजदीक हो जाता है। मन नहीं हो वहां नजदीक भी दूर बन जाता है। सागर से चन्द्रमा दूर है फिर भी सागर उससे उछलता है। दूर रहे हुए मेघ (बादल) से मोर नाचने लगता है। दूर रहे हुए सूर्य से कमल खिल जाता है। दूर से आये हुए पत्र से मित्र का हृदय नाचने लगता है उसी तरह दूर रहनेवाले भगवान की मूर्ति भक्त देखकर आनन्द विभोर बन जाता है।

भक्त यह जानता है कि -भगवान तो सर्वत्र करुणा और प्रेम का बरसात बरसा रहे है, लेकिन मैं ही प्रभु के सम्मुख गया नहीं, मैं ही अहंकार का छाता ओढ़कर घूम रहा हूं। अगर मैं थोड़ा प्रभु के सन्मुख बनूं, अहंकार के छाते को हटा दूं तो तुरन्त प्रभु के प्रेम का अनुभव होगा। भक्त सिर्फ यह बात जानता नहीं, लेकिन अनुभव भी करता है।

प्रभु सिर्फ वीतरागी नहीं, प्रेम और करुणा के सागर भी है। आज हमें भगवान की वीतरागता याद रह गयी है, लेकिन भगवान की करुणा को हम भूल गये है, इसलिये ही हृदय पूर्वक भक्ति नहीं हो सकती। हमारा अंतःकरण ऐसा ही मानता है कि भगवान तो वीतराग है, भक्ति करने पर भी प्रसन्न होनेवाले नहीं तो फिर भक्ति क्यों करनी ?

अगर भगवान की करुणा हमारी नजर के सामने रहे तो ऐसा नहीं हो सकता। भगवान वीतराग होने पर भी भक्ति करनेवाले का तो अवश्य कल्याण करते ही है। सूर्य भले ही वीतराग (अंधकार दूर करने भी उसकी इच्छा नहीं है) है, फिर भी वह उगता है तो अंधकार दूर होता ही है। भक्ति करता है उसका कल्याण होता ही है। प्रभु का स्वभाव ही ऐसा है। स्वभाव में तर्क नहीं होता।

साधक के दो साथी

अध्यात्म अगर पर्वत है तो सरलता तलहट्टी है और समता शिखर है।

तलहट्टी से प्रारंभ करो। शिखर पर पहुंचो।

भ्रव-भ्रमण तोड़ना हो तो सरलता और समता के बिना चलेगा नहीं।

माया के त्याग बिना सरलता नहीं मिलती है।

क्रोध के त्याग के बिना समता नहीं मिलती है।

माया छूटी तो साथ में लोभ भी छुटा ही।

क्रोध छूटा तो अभिमान भी छुटा ही समझो।

चार कषायों में माया-लोभ अदृश्य विभाग है, क्रोध-मान-दृश्य विभाग है। क्रोध-मान दिखाई देते हैं, माया-लोभ दिखाई नहीं देते। इसलिये वे ही बहुत ही दुरुद्धर है।

संक्षेप में सरलता और समता से चार कषायों का नाश करना है। सरलता से माया और लोभ तथा समता से क्रोध और मान को जीतने हैं। इतना हो गया तो बेड़ा पार हो गया समझो। क्योंकि ज्ञानियों ने संसार वृक्ष की जड़ें इन चार कषायों को बताई है। जड़ें अगर कट गई तो अभी मुक्ति मिली समझो। ''**कषाय मुक्तिः किल मुक्तिरेव।**'' करने जैसा यह एक ही काम है- सरलता-समता की प्राप्ति अथवा तो कषायों का नाश।

जब-जब मन में माया की, दंभ की, कंचना की वृत्ति उठे तब सावध बन जाना। मन की चालाकी समझ लेना। दिखावा करने की वृत्ति उठे तब सावध बन जाना। मन की चालाकी समझ लेना। दिखावा करने की वृत्ति छोड़ देना। जब जब किसी के प्रति दुर्भावना पैदा हो तब भी जागृत हो जाना। यों आन्तर-निरीक्षण करते जाएंगे तो मन के अपार रहस्य जान सकेंगे। मन कैसा खेल खेलता है ? यह जानने की मझा आयेगी। बहुत ही रहस्य की बात यह है कि जो अपने मन को जान लेता है, उसे दूसरों के मन की भी तुरन्त ही जानकारी मिल जाती है।

फिर दिखावा करने की वृत्ति या दूसरों के ऊपर अधिकार जमाने की वृत्ति चली जायेगी। क्योंकि साधक अच्छी तरह से समझ जाता है कि मैं मेरे पर भी अधिकार नहीं जमा सकता, मेरा कहा मैं भी नहीं कर सकता तो दूसरा कैसे करेगा ?

❊ मन की विशुद्धि का अवसर मात्र मनुष्य भव में ही मिलता है।

"इज्जत" किसे कहते है ?

हर व्यक्ति को अपनी ''इज्जत'' प्रिय होती है, वैसे इज्जत अदृष्य है-परन्तु व्यक्ति की यह अभिलाषा होती है कि समाज में कुटुम्ब में व परिजनों में उसकी इज्जत बनी रहे, तब सवाल होता है कि ''इज्जत'' क्या होती है व इज्जत का स्वरुप क्या है, कहा जाता है कि संपत्ति गई, कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया, कुछ गया, चरित्र गया सब कुछ गया, इज्जत पर धब्बा लग गया, अब जीना व्यर्थ हो गया, जब इज्जत जीवन के लिए इतनी मूल्यवान है, तब इज्जत का स्वरुप व इज्जत के कारण को समझना आवश्यक है, ''इज्जत'' व्यक्ति के चरित्र व लोक-व्यवहार से जुड़ी हुई है अतः लोक विरुद्ध अथवा लोक निंदनीय कार्य करने की इजाजत नहीं दी जाती, इज्जत की बात व्यक्ति के परिचित क्षेत्रों में अधिक चर्चित होती है, जैसे यदि अपरिचित स्थान पर कोई गलत काम करके, मार खाकर अथवा अपरिचितों से बुरा भला सुनकर आ जावे तो वह स्वयं की दृष्टिसे दोषी मानता है पर खुले आम यह महसूस नहीं करेगा कि मेरी इज्जत चली गई, यद्यपि उसका विवेक व आत्मा में अपनी हरकतों के प्रति एहसास होता रहेगा तथा विवेकशील व्यक्ति पुनः ऐसी गलती नहीं दोहरायेगा, परन्तु आम तौर पर यदि वही घटना अपने परिचित क्षेत्र में घटती है तब उसे लगता है कि मेरी इज्जत पर आँच आ गई, व्यक्ति का व्यक्तित्व जितना विस्तृत होता है उसका परिचय व कार्य क्षेत्र का दायरा बढ़ता जाता है, विशेष गुण व कार्य क्षमता के आधार पर व्यक्ति की पहचान व लोकप्रियता का विस्तार होता है, साथ ही परिचतों का क्षेत्र भी बढ़ता है, तब ''इज्जत'' को बरकरार बनाये रखने की अधिक आवश्यकता हो जाती है। कहा जाता है कि ''बद से बुरा भला'' यानी बुरे व्यक्ति से अच्छे व्यक्ति का बदनाम होना समाज में अधिक उपेक्षित माना जाता है। इज्जत का खोना व बदनाम होना एक ही सिक्के के दो पहलू है। ''इज्जत'' लोक व्यवहार में उन्हीं को प्राप्त होती है जो जबान के पक्के होते है, व्यवहार में छलकपट नहीं होता चरित्र से स्वच्छ होते हैं व स्वार्थ के खातिर झूठ का सहारा नहीं लेता हो। कभी अमानत में खयानत नहीं करता हो ऐसे व्यक्ति को सर्वत्र इज्जत दी जाती है व आदर-सम्मान प्राप्त होता है। ''इज्जत'' का स्वरुप विस्तृत है। व्यक्तिगत जीवन के अतिरिक्त कुटुंब, संपत्ति, पत्नी का समुचित रक्षण करना भी अपना कर्त्तव्य हो जाता है यदि इन पर किसी प्रकार की बुरी नजर पड़ती है व आक्रमण होता है तो वह भी अपनी इज्जत पर हमला माना जाता है। ऐसी परिस्थिति में ''साम, दाम, दंड व भेद'' जैसी नीति अपनाकर भी अपनी ''इज्जत'' को बचाना आवश्यक हो जाता है। जिस प्रकार हमें अपनी इज्जत प्रिय है वैसे ही दूसरों को भी उनकी इज्जत प्रिय है, अतः किसी अन्य की इज्जत पर भी हमारे द्वारा आंच नहीं आनी चाहिये। ''इज्जत'' देना व इज्जत पाना परस्पर आदान-प्रदान है। समाज में धोखेबाज, झूठा व व्याभिचारी व सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन करने वाले को न तो इज्जत दी जाती है न कोई आदर करता है। अतः इज्जत प्राप्त करने में व इज्जत बरकरार रखने में बाधा रुप कारणों को जीवन में स्थान नहीं देना चाहिये, इसी में जीवन की सफलता है व महापुरुषों के कहे अनुसार ''इज्जत'' के साथ जीओं व यश के साथ मरों वाली कहावत चरितार्थ हो सकती है-

इन्सान को जब मौत नजर आती है।
जिन्दगी राह पर चलने लगती है॥

इज्जत वहीं पाता है- जो व्यक्ति सुयोग्य है।

एक धना वटवृक्ष आप थे ....!

*डॉ. रेणु सिरोया उदयपुर

पथ संधर्ष का हो चाहे, कर्म ही जीवन धुरी है
सीख आपकी याद रहेगी धर्म पथ ही जरुरी है
दान शील तप त्याग से आपने जीवन को साकार किया
एक सूत्र में बांध कुटुंब को सदा स्नेह और प्यार दिया
एक धना वटवृक्ष आप थे सबको छाया मिलती थी
स्वजनों को देख खुशी से मन की कलियां खिलती थी
थे कठोर पर मन कोमल था अनुशासन मन भाता था
अंतिम क्षण तक चले श्रम से गहरा नाता था
कमल सा व्यक्तित्व अनुपम तन मन प्रमुदित रहता था
उमंग और उत्साह का झरना सदा हदय में बहता था
मृत्यु शैया पर छलकी उम्मीदों की आशा थी
नाम सिरेमलजी का सम्पूर्ण एक परिभाषा थी

✱ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोद्धारक भविष्य फल मई-2021

मेष– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा,व्यापारिक लाभ की प्राप्ति हेतु परिश्रम की अधिकता रहेगी में संचित धन में वृद्धि होगी। परिवार में कोई विशेष आयोजन संभावित है।

वृष– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा,कार्यक्षेत्र में पदोन्नति की संभावना रहेगी। अधिकारी वर्ग का सहयोग शुभ फलदायक रहेगा, किसी प्रकार के सामाजिक एवं धार्मिक कार्य की संभावना रहेगी। इस समय पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

मिथुन– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी परंतु व्ययों की अधिकता मानसिक तनाव दे सकती है महिला वर्ग से वैचारिक मतभेद संभावित है। संतान संबधित कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा।

कर्क– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, दूरस्थ स्थानों से बेहतर लाभ की प्राप्ति होगी। कोई डूबत धन भी प्राप्त हो सकता है। आकस्मिक लाभ की प्राप्ति हेतु बेहतर समय रहेगा। पारिवारिक वातावरण तनाव युक्त रहेगा।

सिंह– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, कार्य में किये गये परिश्रम के अनुसार लाभ प्राप्ति से उत्साह में वृद्धि होगी एवं नई योजना बनेगी। माह के उत्तरार्ध में क्रोध एवं वाणी पर नियत्रण रखें।

कन्या– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक सिध्द होगा,व्यापारिक लाभ बाधा सहित प्राप्त होगें। परन्तु आशा अनुसार लाभ से मन उत्साहित होगा। दूर स्थानों से कोई विशेष लाभ की संभावित है, धार्मिक कार्यो में भी रुचि रहेगी।

तुला– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, अधिकारी वर्ग का सहयोग पदोन्नति में सहायक बनेगा। विलासता संबंधी व्ययों की अधिक्ता रहेगी। दूर स्थानों की यात्रा संभावित है। पारिवारिक वातावरण बेहतर रहेगा। विद्यार्थी वर्ग में उत्साह रहेगा।

वृश्चिक– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ के प्रति मानसिक तनाव रहेगा। महिला वर्ग का बेहतर फलदायक सिध्द होगा इस समय स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है। कोई पुरानी बीमारी और बढ सकती है। विद्यार्थी वर्ग के लिये समय तनाव का रहेगा।

धनु– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा। व्यापारिक प्रतिष्ठा के प्रति चिंता रहेगी।इस समय कर्मचारी वर्ग हानी पहुचानें की कोशिश कर सकता है। सर्तक रह कर कार्य करें दूर स्थानों से लाभकारी सूचना प्राप्त होगी। विद्यार्थी वर्ग को रोजगार के अवसर प्राप्त होगें।

मकर– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा। व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी। निवेश संबंधी योजना बनेगी।भूमि भवन संबंधी कोई महत्वपूर्ण कार्य संभावित है। पारिवारिक वातावरण में तनाव संभावित है। विद्यार्थी वर्ग के लिए बेहतर समय रहेगा।

कुम्भ– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा,वाद विवाद में विजय प्राप्त होगी। व्यापार में बेहतर लाभ रहेगें। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में वर्चस्व बढेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा।

मीन– आपके लिये यह मास सामान्यता शुभ फलदायक रहेगा,अधिकारी वर्ग के सहयोग से कार्य क्षेत्र में विस्तार होगा। साथ परिश्रम की अधिकता रहेगी। मनोबल बनाये रखना आवश्यक है।स्वविवेक से लिये निर्णय बेहतर साबित होगें। दूर स्थानों की यात्रा शुभ फलदायक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को बेहतर परिणाम प्राप्त होगें।

वर्ग पहेली क्रमांक-*312*

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		■	3	4		■	5
■		■	6			■	7	
8		9		■	10			
	■	11	■	12	■	■		■
13	14		■		■	15		16
■		■	17		18		■	
19			■	■	20		21	
22		■	23	24		■		■
	■	25			■	26		

बाएं से दाएंः-

1-परिश्रम कर विलोम शब्द.........(3)

3-काकन्दी में जन्में भ.सुविधिनाथ के मोक्ष कल्याणक की तिथि भादवा सुद........(3)

6-प्रभु महावीर का एक भव मुनि........(3)

7-मंत्र जपो नवकार मनवा,मंत्र जपोनवकार पांच पदों के पैतीस अ ...है सुख के आधार फिल्म महासती मैनासुन्दरी का एक भजन .....(2)

8-16 वें तीर्थकर की जन्म स्थली ....र (4)

10जावरा के पास भ.नेमीनाथ की कसौटी पाषाण की प्राचीन प्रतिमा वाला तीर्थ-ई ...... (4)

11-गैया,गाय,धेनु का पर्यायवाची शब्द........(1)

13-पेट का पर्यायवाची शब्द........(3)

15-विमलनाथ भगवान का लांछ्न चिन्ह........(3)

17-शिकागो की धर्म संसद में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करने वाले श्री ....गांधी(4)

19-शीतलनाथ भगवान का लांछ्न चिन्ह........(3)

20-दर्शनम देव देवस्य,दर्शनम पापनाशनम। दर्शनम स्वर्ग सोपानम, ...मोक्ष साधनम (4)

22-उत्तर भारत की प्रमुख नदी जिसका उदम स्थल गोमत ताल है गो..... (2)

23-राजा सुदर्शन -रानी महादेवी के तीर्थकर पुत्र का नाम .....थ (3)

25-जो निरर्थक न हो ....(3)

26-आसोज विदी 13 को भ .महावीर का ......कल्याणक का दिन (3)

ऊपर से नीचेः-

2-प्रभु महावीर ने दसवां चातुर्मास यहां किया था........(3)

3-शीतलनाथ भगवान के प्रथम गणधश्री ......स्वामी (2)

4-बडवानी के निकट पहाड से काटकर निर्मित भ. आदिनाथ की 72 फी ट उंची प्रतिमा वाला तीर्थ बा....जा (3)

5-भ. शांतिनाथ कस दसवां भव...में ...... (3)

6- लक्ष्मणी व मोहनखेडा के निकट फि रोजवर्णी भ. आदिनाथ की प्रतिमा वाला तीर्थः ताल...... (2)

7- दिगबंर साधुओं के लिये प्रयुक्त एक शब्द...... (4)

8- अबुर्दाचल की तलहटी में वरनाण-जीरावला के निकट भ. आदिनाथ का तीर्थ ...... (3)

12- इस पुरस्कार को साहित्य का ऑस्कर माना जाता है ...... (3)

14- बालु की प्रतिमा वाला लोढण पार्श्वनाथ का तीर्थ.. (4)

15- वर्धमान की बडी बहन का नाम ......ना (3)

16- राशि, गहना का पर्याय ...... (3)

18-प्रभु महावीर की प्रथम आर्या........(3)

19-जैसे पति पत्नी वैसे ही श्रीमान........(3)

21-अिरनाथ भगवान का लांछ्न अष्ट मंगल में से एक........र्त(3)

23- भावार्थ दो शब्दों से मिलकर बना है भा + ... (2)

24- एक प्रतिवासुदेव का नाम -त ...... (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-311 का परिणाम

अ	म	र	मु	नि	■	वि	मा	न
■	हु	■	नि	र्वा	ण	भू	■	ग
द	वा	■	सु	■	वि	ष	धा	र
र्प	■	सु	व्र	ता	■	ण	क	■
ण	मो	■	त	नि	क	■	र	वि
■	ह	न	■	क	द	म	■	ज
■	न	वि	न	■	म्ब	■	ज	या
मा	■	म	ब्धा	र	गि	■	मा	■
ला	च	ल	■	पु	रि	म	ता	ल

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-312

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न-प्रस्तुत प्रश्न अंताक्षरी पर आधारित है। पहले प्रश्न के उत्तर का अंतिम अक्षर, दूसरे प्रश्न के उत्तर का प्रथम अक्षर होगा।

1- वीर प्रभु का अंतिम चार्तुमास किसने करवाया ?
2- आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि का नाम ?
3- ऐसी कौन सी गति है जो बार-बार प्राप्त नहीं होती ?
4- प्रभुवीर का बाल्यावस्था में क्या नाम था ?
5- दमयन्ति सति के पति का नाम क्या था ?
6- स्त्री का श्रेष्ठ आभूषण क्या है ?
7- श्री कृष्ण महाराजा कौन से कुल के थे ?
8- श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरिम सा.को इन्द्र महाराजा ने कौन सा प्रभावशाली स्त्रोत प्रदान किया ?
9- पालने में झुलते-झुलते 11 अंगों का अध्ययन किसने किया था ?
10-श्री कृष्ण महाराजा की परम भक्त कौन थी ?

✻ ऊंचाई पर पहुंचने के बाद भी नीचे वालों को भूलना नहीं चाहिये क्योंकि उतरने के बाद वे ही लोग मिलने वाले हैं।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता क्रं. 030001000331
IFSC Code ICIC0000300

वर्गपहेली क्रमांक-311 के परिणाम

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-311 के परिणाम

सही उत्तरवालों के नाम अगले अंक में देखों

मेरे सात अज्ञान

1- मैं सर्वोपरि चैतन्य का अंश हूं, वह मैं नहीं जानता।
2- मैं अहं में भरा हुआ हूं, वह मैं जानता नहीं हूं।
3- मुझे नाम-रुप अत्यन्त प्रिय है, परन्तु वस्तुतः वही दुःखदायी है, वह मैं नहीं जानता।
4- दृश्यमान-जगत् ही मुझे सत्य प्रतीत होता है।
5- अदृश्यमान विश्व कैसा होगा ? उसका मैं कदापि विचार नहीं करता।
6- मैं शरीर हूं- इसी ध्यान में मैं रचता रहता हूं।
7- जगत के जीवों के साथ मेरा सम्बन्ध मैं भिन्न मानता हूं।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-5-2021 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

वागड़ नरेश जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी का चार्तुमास उदयपुर में

✻ महामांगलिक रामगंज मंडी में हुई।

रामगंजमंडी- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागर सूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. अर्हम् रत्नसागरजी सा. आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यश्री की महामांगलिक की आयोजन युवा जैनाचार्य श्रीविश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी के साथ रामगंजमंडी में हुआ। ओली आराधना दिनांक 19 अप्रेल से 27 अप्रेल तक रामगंजमंडी में ही होगी। 28 अप्रेल को पारणा के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होगी। आराधना के दौरान प्रतिदिन प्रवचन, पूजन महा पूजन के आयोजन भी होंगे। **आपका आगामी चार्तुमास उदयपुर आयड़ में सुनिश्चित हुआ है।**

आगमोद्धारक सागर समुदाय के पूज्यपाद गच्छाधिपति की निश्रा में पूना में घर-घर में ओली आराधना हुई : तपस्वीयों का बहुमान हुआ

पूना- श्री आदिश्वर महाराज मंदिर एवं श्री गोटीवाला ओसवाल जैन संघ के तत्वावधान में पूना में चैत्रा नवपद ओली आयंबिल आराधना दिनांक 19 अप्रेल से 27 अप्रेल तक सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्य आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धन सागर सूरीश्वर जी म.सा.,पूज्य आचार्य देव श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि-12 ठाणा की निश्रा में हुई 28 अप्रेल को पारणा हुआ।नवपद ओली आयंबिल आराधना से जुडे सभी तपस्वीयों का बहुमान संघपूजन नवकार फ्रेंडर्स ग्रुप एवं सागर ोवा मंडल के द्वारा किया गया।

कालधर्म

✻ आगमोद्धारक समुदाय के साध्वीश्री गुणज्ञा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीश्री जयमाला श्रीजी का कोरोना के कारण 19अप्रेल को अहमदाबाद में कालधर्म हुआ।

✻ आगमोद्धारक समुदाय की साध्वी वर्या श्री जयनंदी श्रीजी म.सा. (56) दीक्षा पर्याय 35 वर्ष का 20 अप्रेल को सूरत में कालधर्म हुआ।

✻ आगमोद्धारक समुदाय के साध्वीश्री हेमेन्द्र श्रीजी म.सा. की सुशिष्या ढकगिरी तीर्थ स्थापित करने वाली साध्वीश्री चारुव्रता श्रीजी का 17 अप्रेल को ढकगिरी तीर्थ के पास उपलेटा में सुबह 10 बजे कालधर्म हुआ। शाम को आपकी पालकी निकली।

श्री सिरेमलजी सिरोया नही रहे

श्रीवर्धन- राजस्थान और महाराष्ट कार्य क्षेत्र होने बाद भी आपके मालवा में अपनी धर्माराधना ओर दान प्रवृति से शासन में खुब नाम कमाया। मेरे कल्याण मित्र रहे श्री सिरेमलजी छोगालालजी सिरोया का 4 अप्रेल को दु:खत निधन होने शासन को बडी क्षति हुई है। श्री सिरेमलजी सिरोया आचार्य गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा युवाजैनाचार्य श्री विशवरत्नसागरसूरीजी के साथ आचार्य श्री हर्षसागासूरीजी म.सा. के साथ अतिनिकट थे। उज्जैन में आपने नवपद ओली आराधना करवाई थी आगमोध्दारक परिवार से आप निकटता से सर्म्पक में रहे है। आपने अपने नाम के अनुरुप परिवार मे ही नहीं समाज में भी सिरमोर रहे श्री सिरेमलजी सिरोया अपनी धार्मिक कार्यशैली के कारण साधु साध्वी भगवंतो में एक जाना पहचाना नाम थे। आपकी नस-नस में जैनत्व के प्रति जो अनुराग था वह हमेशा अनुमोदनीय और अनुकरणीय रहा है,***ओली आयंबिल तप*** की आराधना कर आप शासन भक्ति के द्वारा जिस सद्पथ पर आगे बढ़ रहे वहां आपके जाने केआद भी वहां धर्मध्वजा लहराती रहेगी। धर्म साधना के हेतु बनकर आपने तन,मन और धन से जिन शासन की सेवा कर जो पुर्ण्याजन किया है वह हमारे लिये अनुकरणीय है, यह शासन सेवा आपकी आत्मा की कल्याणक बने,यही कामना है।आगमोध्दारक परिवार आपकी आत्मिय शांति की मनोकामना करते हुवे हार्दिक भावाजंलि अर्पित करता है।

युवा जैनाचार्यश्री की निश्रा में पन्द्रह दिन में दो दीक्षा सम्पन्न हुई : चैत्र ओली रामगंजमंडी में हुई

✻ नववर्ष की महामांगलिक रामगंजमंडी में हुई। ✻ कुमारी युतिका मेहता ने प्रवज्या ग्रहण की अब युगादिप्रिया कहलायेगी ✻ श्री नाकोड़ा महातीर्थ में 1000 धर्मिष्ठों के साथ चार्तुमास का मंगल आयोजन।✻ उज्जैन में भव्य उपाश्रय आयंबिल भवन की योजना। ✻ 10 मई बाद पुनः उज्जैन आगमन की संभावना। ✻ राजस्थान के नगरों में शासन प्रभावना। ✻ श्री अमीझारा तीर्थ के नवनिर्माण आरंभ के निश्रादाता। ✻ मालवा के अनेक छोटे-बड़े नगरों में शासन प्रभावना।

रामगंजमंडी- गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवा हृदय सम्राट, महा मांगलिक प्रदाता परम पूज्य आ.देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा, प.पू.मुनि श्रीकीर्ति रत्नसागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री तीर्थरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री उदयरत्न सागरजी म.सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागर जी म.सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ववलरत्नसागरजी म.सा.,प.पू.मुनि श्री गंभीर रत्नसागर जी म.सा., प.पू.मुनि प. पू. मुनि श्री रम्यरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री लब्धि रत्न सागर जी म.सा.आदि ठाणा का मालवा में सुन्दर धर्म प्रभावना के साथ सुवासरा की ओर विहार किया। सुवासरा में चीकु बहन छाजेड़ की दीक्षा महोत्सव 1 अप्रेल को हुई । 28 मार्च से 2 अप्रेल तक हुए महोत्सव के अंतर्गत श्री मणिभद्र, श्री सिद्धचक्र, श्री गौतमस्वामीजी की पूजन भी पढ़ाई गई। 31 मार्च को मुमुक्षु बहन का विदाई समारोह आयोजित हुआ। 1 अप्रेल को यहां नव निर्मित उपाश्रय भवन का उद्घाटन प्रसंग भी हुआ। प्रातः शुभ लग्नांशवेला में गुरु भगवंतों की निश्रा में मुमुक्षु बहन की दीक्षा क्रियाविधि सम्पन्न हुई । यहां से आपका विहार अकलेरा में परमात्मा प्रवेश करवाकर आपश्री रामगंजमंडी पधारे। यहां पूज्य आचार्य श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी के साथ कुमारी युतिका मेहता का दीक्षा महोत्सव का भव्य आयोजन 13 अप्रेल से आरंभ हुआ, इसी दिन नूतन वर्ष की महा मांगलिक का आयोजन किया गया। 15 अप्रेल को मुक्तिपथ गामी मुमुक्षु बहन युतिका का वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया । साध्वीश्री मुक्तिप्रिया श्रीजी के सानिध्य में आपको वैराग्य के भाव जाग्रत हुए। 16 अप्रेल को प्रातःकाल दीक्षार्थी की भव्य शोभायात्रा के साथ दीक्षा मंडप में पधारी, यहां पूज्यद्वय आचार्य भगवंतों के साथ साधु-साध्वी और सैकड़ों की संख्या में श्रावक-श्राविका की उपस्थिति में शुभ लग्नांश बेला में दीक्षा क्रिया विधि का शुभारंभ हुआ। दीक्षा उपकरणों के चढ़ावे भी अच्छे रहे। दीक्षा के बाद युतिका मेहता मुमुक्षु अब साध्वी श्री युगादिप्रिया कहलायेगी। 17 अप्रेल को नूतन साध्वीवर्या के पगले मेहता परिवार के घर पर हुए। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी म.सा., आचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा का विहार दीक्षा के उपरांत रामगंजमण्डी से श्री नागेश्वर महातीर्थ में चैत्र नवपद ओली आराधना के लिये होना था परन्तु सरकारी गाईड लाईन के कारण सभी कार्यक्रम को रोक दिया गया है अब आप ओली आराधना के दौरान रामगंजमंडी में ही स्थिरता करेंगे। यहां आपकी निश्रा में 19 से 27 अप्रेल तक चैत्र नवपद ओली का आयोजन होने जा रहा है। ओली सम्पन्न करवाकर आप श्री अमझेरा पार्श्वनाथ तीर्थ पधारने का

कार्यक्रम है। यहां 8 मई को प्रथम ढांकना के साथ भव्य शिलारोपण कर भव्य जिनालय का नवनिर्माण आरंभ होगा। यहां से आपने 10 मई के बाद पुनः उज्जैन आने की संभावना भी है। इसके बाद विभिन्न श्री संघों में शासन प्रभावना करते हुए श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ की ओर विहार होगा। यहां 1000 धर्मिष्ठों को दो माह का चातुर्मास करवाने की भावना के साथ उपधान तप का आयोजन भी करवाया जाएगा। चातुर्मासिक आराधना पर भी प्रश्न खड़ा हो गया है, आगे समय में क्या बदलाव होता है उसके अनुसार निर्णय होगा।

कालधर्म

✻पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीअभयदेव सूरीश्वरजी महाराजा डेहला वाला की आज्ञानुवर्तीय साध्वीश्रीशीलपूर्णा श्रीजी का 16 अप्रेल को कीर्तिधाम चांदखेडा में कालधर्म हुआ।

✻ आचार्य भगवंत श्री नेमी सूरीजी महाराजा के समुदायवर्तीय साध्वीश्री भव्य प्रभाश्रीजी म.सा. का 18 अप्रेल को अहमदाबाद में कालधर्म हुआ।

✻ आचार्य भगवंत श्री धर्म सूरीजी म.सा के समुदायवर्तीय साध्वी श्रीविश्व प्रज्ञाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री हेमकलाश्रीजी का का वरकणा तीर्थ बडोदा के प ास में रात्री 2010 बजे 15 अप्रेल को कालधर्म हुआ।

✻ आचार्य भगवंत श्री बुध्दिसागर सूरीश्वरजी महाराजा के समुदायवर्तीय साध्वीश्रीपुण्यप्रभाश्रीजी म.सा.की सुशिष्या साध्वीश्री पद्म कीर्तिश्रीजी का का विश्वमैत्रीतीर्थ गांधीनगर अहमदाबाद 21 अप्रेल को कालधर्म हुआ।

मोडासा (गुज.) में प्रतिष्ठा- कोरोना के प्रभाव के कारण वर्षीतप पारणा महोत्सव नीमच आने में संशय

✻ चार्तुमास ठाणा (मुंबई) में

पालीताना- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नवअपूर्व अमर कृपापात्र बंधु त्रिपठी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म.सा. की एक माह उपस्थिति मुनिश्री आगम प्रशमरत्नसागरजी को महानिशीध के योगोद्हन के लिये एक माह उपस्थिति पालीताना रही इस दौरान योग की पूर्णाहुति पर मुंबई से दो बस तथा मालवा से 7 बसें आई। लगभग 1500 से अधिक गुरुभक्तों की उपस्थिति के 200 साधु-साध्वी की निश्रा रही। साधु-साध्वी को एक माह गोचरी वोराई गई तथा 6 जिन मंदिरों में 18 अभिषेक भी हुए। पूर्णाहुति पर मुनिश्री का वर्धमान विद्या का पद अर्पण किया गया ।महानिशीध योगोद्हन की क्रिया के पूर्ण होने पर आपका विहार हुआ है अब आपश्री 19 अप्रेल को मोडासा (गुज.) में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव में अमृत निश्रा प्रदान करेंगे। मई में मालवा में पदार्पण कर नीमच में 11दिवसीय वर्षीतप पारणा महोत्सव में निश्रादाता रहने की भावना थी अब आने में संशय है ।आपका आगामी चार्तुमास ठाणा (मुंबई) में होने की संभावना है। कोरोनो की स्थिति पर भीब कुछ निर्भर करता है।

24 तीर्थकरों के निर्माण दिवस वर्ष 2021 में इन दिनांकों को आयेंगे

श्री तीर्थकर का नाम	दिनांक एवं वार	निर्वाण तिथि	निर्वाण क्षेत्र
श्री नमिनाथ	10 मई,सोमवार	वैशाख वदी-14	सम्मेदशिखरजी
श्री कुन्थुनाथ	12 मई, बुधवार	वैशाख सुदी-1	सम्मेदशिखरजी
श्री अभिनंदननाथ	18 मई, मंगलवार	वैशाख सुदी-6	सम्मेदशिखरजी
श्री शांतिनाथ	9 जून, बुधवार	ज्येष्ठ वदी-14	सम्मेदशिखरजी
श्री धर्मनाथ	14 जून,सोमवार	ज्येष्ठ सुदी-4	सम्मेदशिखरजी
श्री विमलनाथ	2 जुलाई,शुक्रवार	आषाढ़ वदी-8	सम्मेदशिखरजी
श्री नेमीनाथ	16 जुलाई,शुक्रवार	आषाढ़ सुदी-7	गिरनारपर्वतजी
श्री पार्श्वनाथ	15 अगस्त,रविवार	सावन सुदी-7	सम्मेदशिखरजी
श्री श्रेयांसनाथ	22 अगस्त, रविवार	सावन सुदी-15	सम्मेदशिखरजी
श्री पुष्पदंतनाथ	14 सितंबर,मंगलवार	भादो सुदी-8	सम्मेदशिखरजी
श्री वासुपूज्यजी	19 सितंबर, रविवार	भादो सुदी-14	चम्पापुरी
श्री शीतलनाथ	13 अक्टूबर,बुधवार	आश्विनसुदी8	सम्मेदशिखरजी
श्री महावीर स्वामी	4 नवंबर, गुरुवार	कार्तिक वदी-30	पावापुरीजी

साध्वीवर्या श्री मोक्षिता श्रीजी म.सा. का कालधर्म अहमदाबाद में हुआ: आगमोद्धारक की सादर भावांजलि

आप युवा हृदय सम्राट आचार्यदेव श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी महाराज एवं साध्वीवर्या श्रीचन्द्ररत्नाश्रीजी म.सा.की मां महाराज थे

मालवा के श्रीसंघों ने आदराजंलि दी

अहमदाबाद- आगमोद्धारक समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री कुसुमश्रीजी म.सा. की प्रशिष्या साध्वीवर्या श्री मोक्षिता श्रीजी म.सा. का दुःखत कालधर्म 21अप्रेल को प्रातः ब्रहमबेला में अहमदाबाद के नरोडा स्थित शैल्बी अस्पताल में हो गया। आप गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवा हृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य आचार्यदेव श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी महाराजा एवं साध्वी श्री चन्द्र रत्नाश्री म.सा. की मां महाराज थे।

आपका आपरेशन होने के बाद शारीरिक पीडा कारण आपको अस्पताल में भर्ती किया गया था। आपकी पुत्री महाराज साध्वी श्री चन्द्र रत्नाश्री म.सा. आपके साथ ही थे इस समय पूज्य युवा आचार्यदेव श्री विश्व रत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा रामगंजमंडी राजस्थान में दीक्षा के उपरांत चैत्र नवपद ओली आराधना के लिये विराजमान है। अपने दो युवा पुत्र-पुत्री को कमलाबहन ने शासन को समर्पित कर मालवा में इतिहास बनाया था और इसके बाद आपने भी पूज्यपाद गुरुदेव श्री मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा की मंगल प्रेरणा से दीक्षा ग्रहण कर ली थी। अभी पूर्व का आपका चार्तुमास पालीताना महातीर्थ में पूज्य युवा आचार्यदेव श्री विश्व रत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के साथ ही था वहां से विहार कर आप अहमदाबाद पहुंचे थे आगामी चार्तुमास श्री नाकोडा महातीर्थ में होना था पूज्यपाद गुरुदेव श्री मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के दर्शन वंदन के लिये जब भी कमलाबहन पहुंचते थे तो गुरुदेव श्री बहुत ही सौम्यता के साथ उनसे पूछते थे - कहो-कमलाबहन कैसे हो उज्जैन आने पर भी कमलाबहन का आगमन आगमोद्धारक के प्रधान सम्पादक, डॉ.सुभाष जैन के निवास स्थान पर होता था। यही नही कमलाबहन की 8-10 दिन स्थिरता भी रहती थी उनकी गहरी आत्मीयता थी। आपके दुःखत कालधर्म से मालवा के श्रीसंघों में शोक की लहर व्याप्त हो गई ।डॉ.सुभाष जैन ने तत्काल पूज्य आचार्यदेव श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी महाराजा एवं साध्वी श्री चन्द्र रत्नाश्री म.सा. से चर्चा भी की आपका अग्नि संस्कार 21 अप्रेल को नरोडा में ही किया गया ।आगमोध्दारक परिवार आपकी आत्मिय शांति की मनोकामना करते हुवे हार्दिक भावाजंलि अर्पित करता है ।

श्री पी के - प्रमोद राजगढ नही रहे

राजगढ- जिनवाणी को सच्चे अर्थो के साथ जीवन में आत्मसात कर धर्म की राह पर चलकर गुरु भगवंतों के सानिध्य का सतत् लाभ लेते हुए जिनेन्द्र धर्म को मनसा वाचा कर्मणा अपने जीवन में अंगीकार करते हुए पी के प्रमोद राजगढ ने जाने में बहुत जल्दी कर दी गुण संपन्न, सदा प्रसन्न रहने वाले पी के की सहज,सरल सौम्य मुस्कान और वाणी सबको बहुत याद आयेगी कोरोना कर रिपोर्ट नेगेटिव आने के बाद परिवार प्रसन्न था अस्पताल से छुट्टी की तैयारी थी की पी के सबको व्यथित कर चले गये भोपावर महातीर्थ की प्रतिष्ठा के साथ प्रथम ध्वजारोहण आदि में आपकी सक्रियता ओर शासन के काम सहयोग का भाव देखने लायक था राजगढ में तो वे हमेशा आगेवान रहते ही थे प्रमोदजी का इस तरह जाना अत्यन्त दु:खत है आगमोध्दारक परिवार की और से हार्दिक भावाजंलि।

36 दिन का श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ का संघ जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरी निकालेंगे

उज्जैन -पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा.,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में 36 दिवसीय श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ छःरि पालित यात्रा संघ निकालने पर योजना का काम चल रहा है। यह संघ दिसंबर 2021 में निकलकर जनवरी 2022 में नाकोड़ा तीर्थ पहुंचकर माल होगी। उज्जैन में चार्तुमास सम्पन्न कर आप मालवा के श्रीसंघों में शासन प्रभावना करते हुए 9 से 11 मार्च तक नलखेड़ा रहे। आप 20 मार्च को उज्जैन पहुंचे आगे की कार्ययोजना पर काम चल रहा है।

उज्जैन में गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा.का मंगल पर्दापण उज्जैन हुआ

उज्जैन- बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत के गुरुकुल के चमकते श्रमण भगवंत परमात्मा की वाणी प्रभावना से सबको मोहित करनेवाले पूज्य गणिवर्य श्री आनंदचंद्र सागर जी म.सा. मुनि प्रवर श्री चारित्र चंद्रसागरजी म.सा. मुनिश्री उत्सवचंद्र सागरजी म.सा.एवं साध्वीवर्या श्री मेघावर्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 की निश्रा में उज्जैन में नवपद चैत्र ओली आराधना का भव्य आयोजन श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर है। परन्तु करोना के कारण सरकार की सक्ती से आराधना के आयोजन पर प्रश्नचिन्ह लग गया है ओली आराधना दिनांक 19 अप्रेल से 27 अप्रेल तक थी आराधको को घर पर ही आयंबिल और आराधना करने का कहा गया. मार्गदर्शन गणि म.सा. के द्वारा दिया गया 28 अप्रेल को पारणा के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होनी थी। विभिन्न श्री संघों में धर्म प्रभावना कर आप ओली आराधना के भव के 16 अप्रेल को प्रातःकाल उज्जैन पधारें आपकी अगवानी श्री संघ के द्वारा की गई। प्रसंगानुसार आपश्री ने मांगलिक प्रदान कर श्रीसंघ को कृतज्ञ किया आगे की कार्ययोजना पर काम चल रहा है।

मौन आराधना

पूना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा के साथ सेवाभवी ,पूज्य आचार्य देव श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा.ओली आराधना दिनांक 19 अप्रेल से 27 अप्रेल के दरमियान मौन साधना आराधना में रहे।

अनुयोगाचार्यश्री का चार्तुमास

देवास- अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा. का आगामी चार्तुमास श्री चंद्रप्रभ स्वामी श्री संघ के अंतर्गत ओयसिस कालोनी इन्दौर में होगा।

पूज्यपाद गच्छाधिपति का चार्तुमास मुंबई में

सूरत- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्य आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धन सागर सूरीश्वरजी म.सा.,पूज्य आचार्य देव श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि-12 ठाणा का आगामी चार्तुमास काला चौकी, मुंबई में होगा।

चार्तुमास....

✲ पूज्य आचार्यश्री दीक्षा दानेश्वरी श्री गुणरत्नसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी म.सा.आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास अहमदाबाद के श्री साबरमती जैन संघ में होगा। अप्रेल के अंतिम सप्ताह में सूरत में आपकी निश्रा में सामुहिक दीक्षा हुई। 2 मई को दो बहनों की दीक्षा हुई, 3 मई को सूरत में दो गणि पदवी मुनिश्री अतिरत्न एवं मुनिश्री देवरत्नविजयजी की हुई। 9 मई को सूरत में पाल में भी दीक्षा होगी। 15 मई को वेगु में 5 साधु-साध्वीजी को वर्षीतप पारणा होगा एवं 19 मई को वेसु में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव है। 22 मई को उमरा में रैवतभाई की दीक्षा होगी।

चार्तुमास....

✲ बारामती- पूज्य साध्वीवर्या श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीवर्या श्री अर्चितगुणाश्री म.सा. आदि ठाणा-8 का मंगलमय चार्तुमास बारामती जैन श्री संघ में होने जा रहा है। आप मार्च के अंतिम सप्ताह तक कात्राज तीर्थ पूना में विराजमान रहे।

कोरोना के कुप्रभाव से धर्माराधना-दर्शन-वंदन-पूजन से आराधक बुरी तरह प्रभावित हुए

✻ अनेक स्थानों पर ओली आराधना स्थगित करना पड़ी।
✻ तीर्थयात्रा भी प्रभावित हुई।
✻ श्री महावीर जन्म कल्याणक के कार्यक्रमों पर भी प्रश्नचिन्ह लगा।

उज्जैन- विगत एक वर्ष से अधिक समय से फैली संक्रमक बीमारी कोरोना ने सम्पूर्ण विश्व की व्यवस्थाओं को प्रभावित कर रख दिया। सामाजिक आर्थिक, धार्मिक तनाबना छिन्न-भिन्न हो गया है। लाखों की संख्या में लोग काल के गाल में समा गया जिससे पारिवारिक संकट पैदा हो गये। अनेक परिवार पर घोर संकट की गंभीर घड़ी आ गई है। प्रकृति के निर्णय को रोकने के सभी उपाय निष्फल सिद्ध हो रहे है। यह कहानी किसी एक जात संप्रदाय की न होकर संपूर्ण मानव जाति की है। सभी अनेक कारणों से प्रभावित हुए है। अभी वर्तमान में इसका कोई पक्का समाधान भी दिखाई नहीं दे रहा है और न ही यह कहा जा सकता है कि इस कोरोना का कब और कैसे अंत होगा। न वैज्ञानिक और न ही ज्योतिष्य इस विषय में कुछ कह पा रहे है और न ही इसका कारण ढूंढ पा रहे हैं। प्रकृति पता नहीं किस बात का बदला मानव जाति से ले रही है।

हमारे धार्मिक अनुष्ठान विधि विधान की बात करें तो यह सम्पूर्ण समय धार्मिक भावना को नुकसान पहुंचाने वाला रहा चातुर्मासिक आराधना तप, जप, महोत्सव, वर्षीतप, ओली आराधना सभी कोरोना की भेंट चढ़ गये फिर भी व्यक्तिगत स्तर पर धर्मिष्ठों ने अपनी धार्मिक भावना को बनाकर रखा घर परिवार में रहते हुए तप, जप पूजा, पाठ सब किसी न किसी रुप में चलते रहे है, एक बार फिर सामुहिक रुप से होनेवाले वर्षीतप, ओली जैसे आयोजन के साथ अनेक धर्म प्रसंगों पर रोक लग गई। छःरिपालित संघ, महोत्सव सब पर ब्रेक लग गया है। पर हम उम्मीद करते है कि मानव की धैर्य शीलता उसकी भावना के आगे यह कोरोना भी घुटने टेक देगा और एक बार फिर हम सब लोग शोक दुःख संकट से उभर कर सामान्य हो जायेंगे, हम सब की सामुहिक भावनाओं का परिणाम हमें शीघ्र मिलेगा यह विश्वास हमें जीवित रखना है।

भाई हितेश खोना गणिवर्य आदर्शरत्नसागरजी का शिष्यत्व ग्रहण कर सागर समुदाय के श्रमण बनेगें

प्रथम चार्तुमास दिल्ली के मंडार संघ में होगा

हरिद्वार - आचार्य भगवंत श्रीमृद रत्नसागर सूरीजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास श्री सुमतिनाथ परमात्मा के परिसर नई दिल्ली के श्री मंडार जैन श्वेतांबर संघ के अंतर्गत होगा। इसकी स्वीकृति विगत दिनों संघ की चार्तुमास विनंती पर दी गई ।साध्वीवर्या अमितगुणा श्रीजी म.सा. की प्रशिष्या साध्वी श्री स्नेहझरा श्रीजी का चार्तुमास भी मंडार संघ में होगा। इस मंगल प्रसंग पर मौंटेक्स ग्रुप के श्री रमणभाई मुथा की विशेष उपस्थिति रही। आपश्री की नववर्ष की महामांगलिक का आयोजन 13 अप्रेल को अलखनंदा के तट पर हुई सुश्रावक उच्च शिक्षा,उच्चपद पर कार्य करने वाले श्री हितेशभाई खोना को संसार की असारता का ज्ञान हुआ। आपने सब कुछ मोह माया का त्याग करते है, श्री महावीर स्वामीजी के श्रमण समुदाय में दीक्षित होने का संकल्प लिया है। श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर परिसर हरिद्वार में आदर्श फाउण्डेशन के तत्वावधान में ज्येष्ठ वदी-5, 30 मई को मुमुक्षु हितेशभाई खोना की दीक्षा सम्पन्न होगी। दीक्षा महोत्सव के आयोजन 28 मई से आरंभ होंगे। 28 मई को छाब भरने, मेंहदी-सांझी के आयोजन के साथ श्री सिद्धचक्र महा पूजन भी पढ़ाई जायेगी। 29 मई को वर्षीदान का भव्य वरघोड़ा आयोजित किया गया है साथ ही मुमुक्षु का अंतिम वायणा तथा रात्री में विदाई समारोह होगा। 30 मई को प्रातःकाल गृहत्याग कर दीक्षा के लिये प्रस्थान कर दीक्षा मंडप में शुभ लग्नांशबेला में गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. के वरदहस्त रजोहरण ग्रहण कर दीक्षा स्वीकार करेंगे।

आचार्यश्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी म.सा.कोरोना से प्रभावित इन्दौर के अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा, अब स्वस्थ है।

धार- वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100 +100+154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म.सा.,मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी म.सा.,मुनिश्री ज्ञानेश रत्नसागरजी म. सा.,मुनिश्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणा कोरोना से प्रभावित होने से आचार्यश्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी म.सा.कोरोना से प्रभावित इन्दौर के अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा, अब स्वस्थ है एवं धार वापस आ गये है। पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. धार में ही आइसोलेट थे मालवा के विभिन्न श्री संघों में शासन प्रभावना कराते हु श्री भक्तामर महातीर्थ अभ्युदय धाम धार पधारे थे, पिताश्री जी म.सा. भी साथ में ही थे,आगे के अन्य आयोजन की रुपरेखा भी बन गई थी कि अचानक पिताश्री आचार्य भगवंत का 21 मार्च को देवलोक गमन हो गया।19 से 21 अप्रेल तक महिदपुर में ओली आराधना आपकी निश्रा में होनी थी किन्तु कोरोना के कारण निरस्त करना पडी। आपश्री की निश्रा में सांवेर में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 22 मई को होना है एवं चार्तुमास मलाड मुंबई में होने की संभावना है परन्तु आगे समय में क्या बदलाव होता है उसके अनुसार निर्णय होगा।

किलपाक संघ में चार्तुमास

चैन्नई- प्रसिद्ध महातीर्थ केशरवाड़ी में विराजित सागर समुदाय के पूज्यपाद वर्धमान तपोनिधि आचार्य भगवंत श्री नयचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ साध्वीवर्या पूज्य श्री दिव्ययशाश्रीजी म.सा.एवं दिव्यदर्शा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास किलपाक संघ के श्री मुनिसुव्र स्वामी जैन संघ में होगा।

अकोला में चार्तुमास

मुंबई- पूज्य आचार्य भगवंत राष्ट्रसंत श्री चन्द्राननसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री गुणचंदसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अकोला जैन श्रीसंघ श्री आदिनाथदादा की छत्राछाया में होगा।

सांवेर में 22 मई को प्रतिष्ठा में होगी

उज्जैन- श्री अभ्युदय भक्तामर धाम महातीर्थ धार में पूज्यपाद वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100 +100+154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म.सा.,मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी म.सा.,मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी म. सा.,मुनिश्री गोयमसागर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सांवेर में होनेवाले श्री आदिनाथ परमात्मा के जिनालय की प्रतिष्ठा के लिये जाजम बिछाई गई जिसमें 50 लाख रुपये के चढ़ावे हुए साथ ही 30 लाख रुपये की टीप प्रतिष्ठा आयोजन के लिये भी हुई। प्रतिष्ठा का आयोजन 22 मई को होने जा रहा है। परन्तु सरकारी गाईड लाईन के कारण आगे समय में क्या बदलाव होता है उसके अनुसार निर्णय होगा।

प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीजी ने देपालपुर में चैत्राओली की आराधना करवाई।

देपालपुर- सागर समुदाय के वचन सिद्ध, भोपावर महातीर्थ के प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा, पूज्य आचार्य श्री चन्द्रकीर्ति सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्म कीर्तिसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में चैत्र नवपद ओली आराधना दिनांक 19 अप्रेल से 27 अप्रेल तक हुई। 28 अप्रेल को पारणा के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई। अनेक शासन प्रभावक कार्यो की श्रृंखला के साथ पुनः उज्जैन पधारने पर आपका जन्मोत्सव कार्यक्रम 7 मई 2021 को भव्य रुप से आयोजित करने का कार्यक्रम है। परन्तु सरकारी गाईड लाईन के कारण आगे समय में क्या बदलाव होता है उसके अनुसार निर्णय होगा।

रुचिका माधुरी की दीक्षा 6 मई को

हैदराबाद- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में कुमारी रुचिका सकलेचा एवं माधुरी कंकुचोपड़ा की भगवती प्रवज्या 6 मई को दादा के दरबार श्री शत्रुंजय महातीर्थ में होगी। इस निमित्त दोनों मुमुक्षु बहनों का वर्षीदान वरघोड़ा हैदराबाद में 28 मार्च को भव्य रुप से आयोजित किया गया। चैन्नई के श्री मोहन मनोज के द्वारा अंतिम बिदाई कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ प्रभु के भव्य जिनप्रसाद का नवनिर्माण 8 मई को भट्ट शिलारोपण के साथ आरंभ होगा

✻ भोपावर महातीर्थ में ट्रस्ट मंडल की मीटिंग युवा जैनाचार्य के मार्गदर्शन में हुई।

✻ अध्यक्ष श्री रमेशजी मुथा ने कहा-पुण्यबल से हमें प्रभु का कार्य करना है।

✻ मंदिरजी का नक्क्षा पास हुआ : मार्बल के लिये एग्रीमेंट हुआ।

भोपावर- दादा शांतिनाथ प्रभु की प्रथम वर्षगांठ पर भोपावर महातीर्थ में पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.की मंगल उपस्थिति में श्री अमीझरा पार्श्वनाथ दादा के भव्य त्रिलोकदर्शयी जिनप्रसाद के नवनिर्माण के लिये 16 मार्च को श्री अमीझरा ट्रस्ट मंडल की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष श्री रमेशजी मुथा मैनेजिंग ट्रस्टी श्री प्रकाश सिरोही के द्वारा भट्ट शिलारोपण के लिये पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. से मंगल मुर्हूत प्रदान करने का आग्रह किया गया। पूज्यश्री ने 8 मई को एक दिवसीय आयोजन के साथ भट्ट शिलारोपण के साथ भव्य जिनप्रसाद निर्माण का संकल्प दोहराया। प्रथम ढांकना विधान के साथ भट्ट शिलारोपण का कार्य विजय मुर्हूत 12.39 बजे सम्पन्न होगा। प्रारंभिक तौर पर 21 लाख का नाम मुर्हूत के लिये आया है, 8 मई को इसका चढ़ावा आगे और बढ़ेगा। लाभार्थी को लाभ दिया जायेगा।

मैनेजिंग ट्रस्टी श्री प्रकाशजी सिरोही ने बैठक में अवगत कराया कि- मकराना में मंदिरजी के लिये संगमरमर के लिये एग्रीमेंट किया गया जिसमें अध्यक्ष श्री रमेशजी मुथा मकराना गये थे साथ ही मंदिरजी का नक्क्षा में फाईनल किया गया। इस अवसर पर सोमपुरा की उपस्थिति भी रही, सभी शंकाओं का समधान किया गया। बैठक में अनेक निर्णय लिये गये। श्री रमेशजी मुथा ने कहा क- मंदिरजी निर्माण के सभी नक्क्षे निश्चित कर देवद्रव्य के लिये अपील तैयार की जावे तथा दादाश्री अमीझरा पार्श्वप्रभु और तीर्थ के सभी देवी-देवताओं से विनंती कर निर्माण की आज्ञा भी प्राप्त करें और शीघ्र ही निर्माण सम्पन्न हो ऐसा आग्रह भी करें। ट्रस्ट मंडल की अगली बैठक अमीझरा में रखने का निश्चित किया गया। भोपावर में हुई मीटिंग में ट्रस्ट मंडल के संघवी श्री रमेशजी मुथा, चैन्नई, संघवी श्री प्रकाशजी सिरोडी वाला, अहमदाबाद, संघवी श्री तेजराज जी कोठारी, चैन्नई, संघवी श्री दिनेश जी दोशी, दिल्ली, श्री रखबजी बिजावत, बडौद, श्री राजेशजी जैन, उज्जैन, श्री मनोहरलालजी काँग्रेसा, राजगढ़, श्री राजेशजी पोसीत्रा, अमेझरा, डॉ. श्री सुभाषजी जैन, उज्जैन, श्री दिलीपजी फरबदा, राजगढ़, श्री राजेन्द्रजी मेहता, सरदारपुर, श्री दिनेशजी संघवी, राजगढ़, श्री सुरेशजी काँग्रेसा, राजगढ़ आदि की उपस्थिति रही।

अभिनव शत्रुंजयधाम की अंजन-प्रतिष्ठा जनवरी 2022 में होगी

रानी- श्री जैनाचार्य श्री नेमी सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवश्री सुशीलसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यदेव श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा. के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर रानी के सुशील विहारधाम अभिनव शत्रुंजय धाम का नव निर्माण किया गया है। तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 24 जनवरी 2022 तक आयोजित होगा। प्रतिष्ठा 22 जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 153 चढ़ावों का लाभ लेने के लिये 1 लाख 8 हजार का नकरा तैय किया गया जिसका ड्रॉ निकालकर विजेता लाभ दिया जायेगा। ड्रॉ 26 फरवरी 2021 को श्री अष्टापद तीर्थ सुशील विहार रानी में निकाले जायेंगे।

✻ सागर समुदाय में होनेवाले दीक्षा महोत्सव ✻

- ✻ मुमुक्षु हीना जयंतिभाई धोका, चैत्र वद-5, 1 मई, हालोल (गुज.)
- ✻ मुमुक्ष पूजा जयंतिभाई धोका, चैत्र वद-6, 2 मई, हालोल (गुज.)
- ✻ मुमुक्षु करिश्मा जयंतिभाई धोका, चैत्र वद-6, 2 मई, हालोल (गुज.)
- ✻ मुमुक्षु भाई हितेश दीक्षा महोत्सव 30 मई हरिद्वार(उ.प्र)

आचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी म.सा.की निश्रा में 16 मुमुक्षु की दीक्षा एवं सिध्दितप का पारणा हुआ

सिरोही- पूज्य आचार्यश्री दीक्षा दानेश्वरी श्री गुणरत्नसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी म.सा.की पावननिश्रा में सिरोही की तपस्वी रत्ना साध्वीश्री जितारीरेखाश्री की म.सा. को 21 वां सिध्दितप की पूर्णाहुति पर दो दिवसीय तप महोत्सव का आयोजन किया गया। 21 अप्रेल को तपवंदनावली तथा सामुहिक सामायिक का आयोजन किया गया तपस्वी रत्ना साध्वीश्री जितारीरेखाश्री की म.सा. का पारणा घूमघाम से 22 अप्रेल को हुआ। 22 अप्रेल को पूज्य आचार्यश्री पावन निश्रा में 16 मुमुक्षु की दीक्षा महोत्सव का आयोजन किया गया।

कालधर्म

❋ आगमोद्धारक समुदाय के पूज्यश्री दर्शनचंदसागरजी म.सा. के सुशिष्य मुनि श्रीसंयमचंदसागरजी म.सा. का (संभव म.सा.) का 22 अप्रेल को साबरमती अहमदाबाद ज्ञानमंदिर में कालधर्म हुआ।

❋ आगमोद्धारक समुदाय की साध्वीवर्या पूज्य प्रीतिधर्मा श्रीजी म.सा. का कालधर्म 10 अप्रेल को ह्रींकारगिरी तीर्थ इन्दौर में हुआ।11 अप्रेल को अग्नि संस्कार हुआ।

❋ आगमोद्धारक समुदाय के साध्वीश्रीपद्मताश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीश्री निरुपमा श्रीजी का (87) दीक्षा पर्याय 68 वर्ष 14 अप्रेल को प्रातः 8 बजे कालधर्म हुआ। शाम को आपकी पालकी निकली।

❋ आगमोद्धारक समुदाय के साध्वीश्री प्रशांतगुणा श्रीजी म.सा. (87) दीक्षा पर्याय 60 वर्ष का सूरत लिंबड़ी उपाश्रय में 14 अप्रेल को कालधर्म हुआ।

❋ आगमोद्धारक समुदाय के समुदाय के आचार्यदेवश्री निरंजन सागर सूरीश्वरजी म.सा. का 68 वर्षवय में 53 वर्ष के संयम के उपरांत वेजलपुर अहमदाबाद में कालधर्म हो गया।

प्रभु सर्वत्र है

आज कितनेक लोग पूछते है- आप भगवान-भगवान करते हैं लेकिन भगवान है कहाँ ? यह तो बताओ।

मुझे ऐसे लोगों को कहना है कि भगवान विश्व के अणु-अणु में है, ब्रह्मांड के कण-कण में है। भगवान के दर्शन सिर्फमंदिरों में नहीं, सर्वत्र होना चाहिये। वास्तव में भगवान की भक्ति का प्रारंभ तो मंदिर से ही करना चाहिये, क्योंकि मंदिर में प्रवेश करते ही प्रभु की याद आती है। फिर धीरे-धीरे हमारी मनः स्थिति ऐसी बन जाती है कि सभी जगह प्रभु ही प्रभु दिखाई देते है। सारा विश्व प्रभु का मंदिर लगता है। क्या आपने एक चीज ध्यान से देखी है ?

आप जब भी खुले मैदान में आकाश को देखोंगे तो उसका आकार मंदिर के घुम्मट जैसा लगेगा, मानो सुविशाल प्रभु का अकृत्रिम मंदिर। मंदिर का घुम्मट ऐसी दृष्टि विकसित करने के लिए तो नहीं होगा न ?

ब्रह्मांड के कण-कण में फैली हुई प्रभु कृपा नहीं दिखाई दे तो मंदिर में जाकर हमने क्या प्राप्त किया ? विश्व के प्रत्येक जीवों के साथ आपने मैत्री का तार बांधा नहीं, तो प्रभु भक्ति द्वारा आपने क्या प्राप्त किया ?

भगवान सर्वत्र है। पवन सर्वत्र है। जिस तरह खिड़की को खोलने पर पवन कहता है कि मैं आ गया ! उसी तरह अगर हृदय की खिड़की खोलें तो प्रभु कहते है- मैं आ गया।

जो प्रभु को सर्वत्र देखाते है वे स्वयं में भी प्रभु को देखते हैं।

जिनो दाता जिनो भोक्ता, जिनः सर्वमिदं जगत्।
जिनो जयति सर्वत्र, यो जिनः सोहमेव च ॥

प्रभु दाता है, प्रभु भोक्ता है, यह सारा जगत प्रभु है। प्रभु सर्वत्र जयवंत है। जो प्रभु है, वह मैं ही हूं।

इस तरह सिद्धसेन दिवाकरसूरीजी ने शक्रस्तव में प्रभु की स्तुति की वह अनुभव के उद्‌गार है, सिर्फ शाब्दिक रचना नहीं।

सिद्धाचल महातीर्थ में आचार्य पद प्रदान एवं दीक्षा महोत्सव

✻ पं.श्री ललितशेखरविजयजी- सूरीश्वर बनेगा : भावना श्रमण मार्ग स्वीकारेगी

पालीताना- पू.आचार्य श्री रविशेखर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य पू.पंन्यास श्री ललितशेखरविजयजी म.सा. को सूरीश्वर पद पर आरुढ़ किया जायेगा साथ ही मुमुक्षु भावना की दीक्षा अंगीकार कर परमात्मा श्री वीर प्रभु के श्रमण संघ में सम्मिलित होगी पर दोनों आयोजन 2 मई को सिद्धाचल महातीर्थ में मेवाड़ भवन में आयोजित होंगे। पूज्य आचार्यश्री निर्मलचन्द्रसूरी एवं आचार्य श्री विजय रविशेखरसूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी ठाणा की पावन निश्रा में आयोजन होगा। 25 अप्रेल से 2 मई तक होनेवाले पद प्रदान एवं दीक्षा महोत्सव के अंतर्गत चैत्र सुदी-13 को परमात्मा श्री वीरप्रभु का जन्म कल्याणक, स्नात्र महापूजन, गिरिराज की यात्रा, केसर छांटना, श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ महापूजन, मेंहदी आदि की क्रिया के बाद 1 मई को वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित होगा। 2 मई को प्रातःकाल शुभ लग्नांश वेला में आचार्य पदवी एवं दीक्षा क्रिया विधि सम्पन्न होगी। आचार्यश्री का चार्तुमास झालों की संदार (मेवाड़) में 18 जुलाई को प्रवेश के साथ आरंभ होगा।

दादा के जिनालय की ध्वजा 31 मई को चढ़ाई जावेगी : चढ़ावे हुए

पालीताना- शाश्वत तीर्थराज श्री सिद्धाचल महातीर्थ में दादाश्री आदिश्वर प्रभु के भव्य जिनालय की 490 वीं ध्वजा (1587) चढ़ाने के लिये 29 अक्टूबर को भव्य चढ़ावे पालीताना में भाताघर में हुए। दादा के देरासर के साथ ही राघण पगलियाजी रायणवृक्ष श्री पुंडरिक स्वामीजी देरासर में भी ध्वजा चढ़ाने के लिये चढ़ावे हुए। सेठ श्री आनंदजी कल्याण जी पेढ़ी के तत्वावधान में ध्वजा की बोलियां हुई। इसके साथ ही श्री शांतिनाथ परमात्मा के जिनालय में 18 अभिषेक का आयोजन भी किया गया। दादा की ध्वजा संवत् 2077 वैशाख वदी-6 (ज्येष्ठ वदी) दिनांक 31 मई, सोमवार को चढ़ाई जावेगी।

मुनि श्रीकीर्ति रत्नसागरजी म.सा.मुनि श्री तीर्थरत्न सागरजी म.सा. श्री नागेश्वर तीर्थ पहुंचे

नागेश्वर- गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवा हृदय सम्राट, महा मांगलिक प्रदाता परम पूज्य आ.देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य प.पू. मुनि श्रीकीर्ति रत्नसागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री तीर्थरत्न सागरजी म.सा. बडोद होते हुवे श्री नागेश्वर तीर्थ पहुंचे आपने यहां चैत्र नवपद ओली आयंबिल आराधना दिनांक 19 अप्रेल से 27 अप्रेल में आन लाईन प्रवचन श्रंखला के अतंर्गत यू ट्यूब पर प्रवचन दिये। युवा हृदय सम्राट, महा मांगलिक प्रदाता परम पूज्य आ.देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा, आचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा नेओली आराधना के दौरान रामगंजमंडी में ही स्थिरता की एवं आन लाईन प्रवचन श्रंखला के अतंर्गत यू ट्यूब पर प्रवचन भी दिये।

जैनाचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी का विहार गुजरात की ओर हुआ : चार्तुमास पालीताना में

भोपावर- मालवा के विभिन्न जैन श्रीसंघों में जबर्जस्त शासन प्रभावना करते हुए सिंह गर्जना के स्वामी सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा पूज्य आचार्य श्री सौम्यचंद्र सागर सूरीजी, पूज्य आचार्य श्री विवेक चंद्र सागर सूरीजी म.सा.,पूज्य आचार्य श्री मतिचंद्रसागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा के साथ पूज्यपादश्रीने गुजरात की ओर विहार किया है। आपश्री का सूरत कतारगांव होते हुए पालीताना की ओर विहार करेंगे। आपश्री आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास जम्बुद्वीप परिसर पालीताना में सुनिश्चित हुआ है।

चार्तुमास....

✻ जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का वि.सं. 2077 का चार्तुमास श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक आराधक संघ बीजापुर (विजयापुर) (कर्णाटक) में निश्चित हुआ है।

हमारे तीज-त्यौहार

1-	वैशाख वदी-10	गुरुवार	06/05/2021	श्री सीमंधर स्वामीजी आदि 20 विहामान जिन का जन्मकल्याणक
2-	वैशाख सुदी-3	शनिवार	15/05/2021	अक्षय तृतीया वर्षीतप पारणा
3-	वैशाख सुदी-10	शनिवार	22/05/2021	श्री महावीरस्वामीजी का केवलज्ञान कल्णाक एवं आगमोद्धारकश्री का आचार्य पद दिवस
4-	वैशाख सुदी-11	रविवार	23/05/2021	श्री गौतमस्वामीजी का गणधर पद एवं शासन स्थापना दिवस
5-	ज्येष्ठ वदी-5	रविवार	30/05/2021	पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा का कालधर्म दिवस

पंचक :–

आरम्भः-वैशाख वदी-4, मंगलवार, दिनांक 8-5-2021, समय-रात्री 08.46 बजे

समाप्तः-वैशाख वदी-13, रविवार, दिनांक 9-5-2021, समय-शाम 05.30 बजे

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भः-वैशाख सुदी-5, सोमवार, दिनांक 17-5-2021, समय-दोपहर 01.22 बजे

समाप्तः-वैशाख सुदी-6, मंगलवार, दिनांक 18-5-2021, समय-दोपहर 02.55 बजे

भक्ति के लिये क्या चाहिये ? *तपस्वी बनने के लिए शारीरिक शक्ति अपेक्षित है। ज्ञानी बनने के लिये बौद्धिक शक्ति अपेक्षित है। दानी बनने के लिये धन शक्ति अपेक्षित है। परन्तु भक्त बनने के लिये निरपेक्ष बनना अपेक्षित है। किसी भी शक्ति पर मगदूर बना व्यक्ति कदापि ''भक्त'' नहीं बन सकता।*

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

✻ उदासीनता ही अध्यात्म की जननी है।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

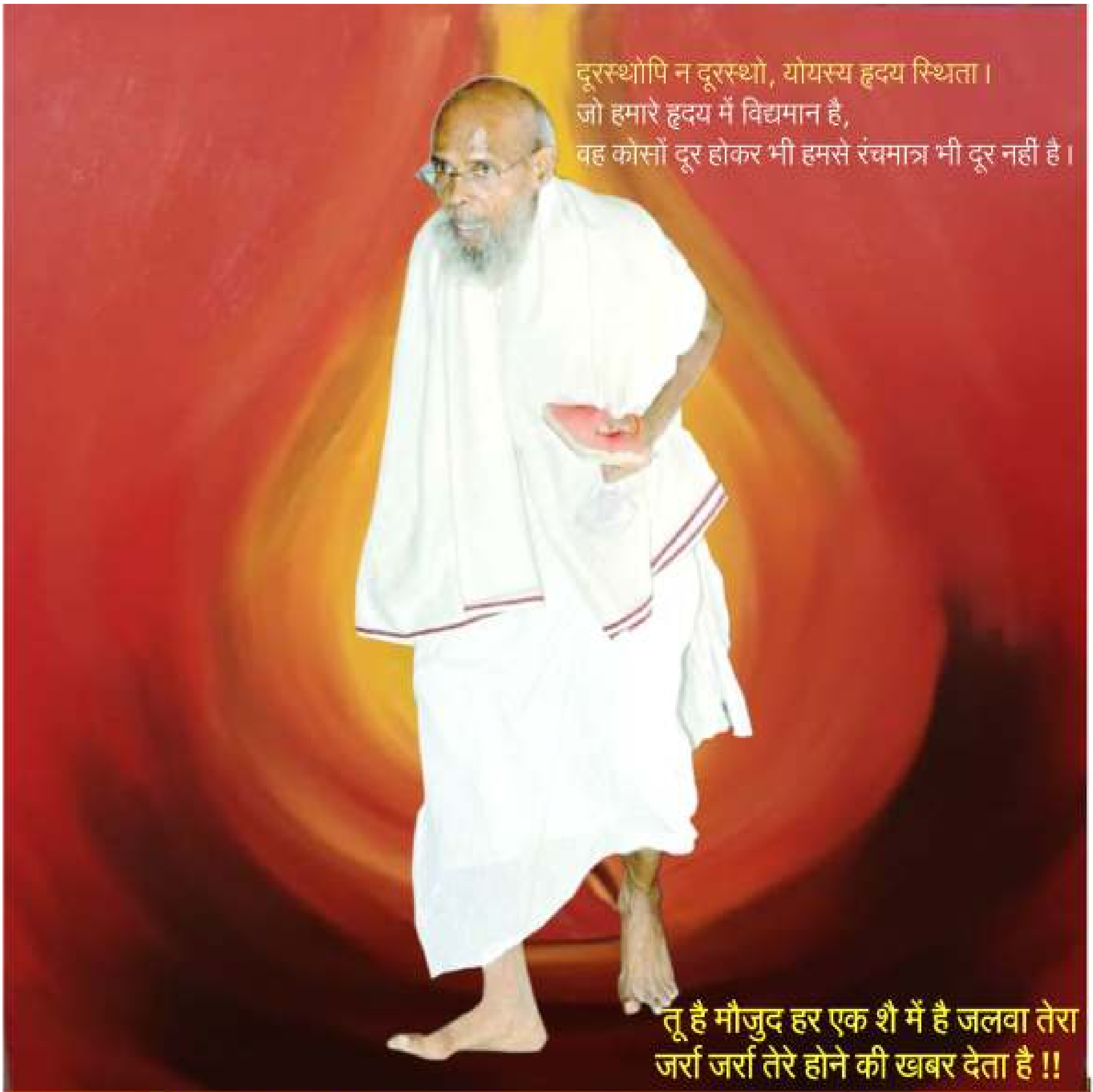

वर्ष-26 चैत्र-वैशाख मई 2021 अंक-5 प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति,

बुक पोस्ट

श्रीमान्

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.वी. ऑफसेट प्रिंटर्स,
285, एम.जी. रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897